नंबर 1 न्यूयॉर्क टाइम्स बेस्टसेलर

मॉरी के साथ मंगलवार

20वीं
वर्षगांठ
संस्करण

एक बूढ़ा आदमी, एक जवान आदमी, और ज़िंदगी का सबसे बड़ा सबक

मिच एल्बम

लेखक के नए आफ्टरवर्ड के साथ

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible]

□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□
□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□
□□□□□□

□□□□□□□□
□□□□□□□, 25 □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□

□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ '□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□' □□ '□□□ □□ □□□ □□' □□ □□□-□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□

[illegible]

[illegible]

[illegible]	*[illegible]*
[illegible]	*[illegible]*
[illegible]	*II*
[illegible]	*III*
[illegible]	*IV*

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]
www.littlebrown.co.uk

हैचेट डिजिटल द्वारा प्रकाशित, 2009
कॉपीराइट © 1997 मिच एल्बोम द्वारा

लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, और न ही इसे प्रकाशन के समय उपयोग किए गए बाइंडिंग या कवर के अलावा किसी अन्य रूप में प्रसारित किया जा सकता है, और बाद के खरीदार पर भी इसी तरह की शर्त लागू किए बिना ऐसा नहीं किया जा सकता है।

इस पुस्तक का सीआईपी कैटलॉग रिकॉर्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी से उपलब्ध है।

ईआईएसबीएन: 978 0 7515 2737 7

यह ईबुक फ्रांस के जौवे द्वारा निर्मित है।

हैचेट डिजिटल
लिटिल, ब्राउन बुक ग्रुप का एक प्रकाशन 100 विक्टोरिया एम्बैंकमेंट
लंदन EC4Y ODY

एक हैचेट यूके कंपनी

यह पुस्तक मेरे भाई पीटर को समर्पित है, जो मेरे जानने वाले सबसे बहादुर व्यक्ति हैं।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पाठ्यक्रम
उनकी मृत्यु का फैसला 1994 की गर्मियों में आया। पीछे मुड़कर देखें तो, मॉरी को इससे बहुत पहले ही पता चल गया था कि कुछ बुरा होने वाला है। उन्हें यह उस दिन पता चल गया था जब उन्होंने नृत्य करना छोड़ दिया था।
मेरे पुराने प्रोफेसर हमेशा से ही नर्तक थे। संगीत कोई मायने नहीं रखता था। रॉक एंड रोल, बिग बैंड, ब्लूज़। उन्हें सब पसंद थे। वे आंखें बंद कर लेते और एक आनंदमय मुस्कान के साथ अपनी ही लय में थिरकने लगते। यह हमेशा सुंदर नहीं होता था। लेकिन फिर, उन्हें किसी साथी की चिंता नहीं थी। मॉरी अकेले ही नाचते थे। वह हर बुधवार रात हार्वर्ड स्क्वायर के एक चर्च में "डांस फ्री" नाम के कार्यक्रम में जाया करते थे। वहाँ जगमगाती बत्तियाँ और तेज़ आवाज़ वाले स्पीकर लगे होते थे और मॉरी सफेद टी-शर्ट, काली ट्रैक पैंट और गले में तौलिया लपेटे, ज़्यादातर छात्रों की भीड़ में घूमते-फिरते नज़र आते थे। जो भी संगीत बज रहा होता था, उसी पर वह नाचते थे। वह जिमी हेन्ड्रिक्स के गानों पर लिंडी डांस करते थे। वह शरीर को मरोड़ते, चक्कर लगाते, अपने हाथों को ऐसे हिलाते जैसे कोई कंडक्टर एम्फ़ेटामाइन का नशा कर रहा हो, जब तक कि उनकी पीठ से पसीना टपकने न लगे। वहाँ किसी को नहीं पता था कि वह समाजशास्त्र के एक जाने-माने डॉक्टर हैं, जिन्हें कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में वर्षों का अनुभव है और जिन्होंने कई प्रशंसित पुस्तकें लिखी हैं। सब उन्हें बस एक सनकी बूढ़ा समझते थे।
एक बार, वह एक टैंगो टेप लेकर आया और उसे स्पीकर पर बजाने को कहा। फिर उसने पूरे फ्लोर पर कब्जा जमा लिया और किसी जोशीले लैटिन प्रेमी की तरह इधर-उधर नाचने लगा। जब उसका नाच खत्म हुआ, तो सबने तालियाँ बजाईं। वह उस पल में हमेशा के लिए रहना चाहता था।
लेकिन फिर नृत्य रुक गया।
उन्हें साठ वर्ष की आयु में अस्थमा हो गया। उनकी सांस फूलने लगी। एक दिन वे चार्ल्स नदी के किनारे टहल रहे थे, तभी अचानक ठंडी हवा का एक झोंका आया और उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया और एड्रेनालिन का इंजेक्शन लगाया गया।

कुछ साल बाद, उन्हें चलने में परेशानी होने लगी। एक दोस्त की जन्मदिन पार्टी में, वे अचानक लड़खड़ा गए। एक और रात, वे एक थिएटर की सीढ़ियों से गिर गए, जिससे वहां मौजूद लोगों की छोटी भीड़ चौंक गई।
“उसे सांस लेने दो!” किसी ने चिल्लाकर कहा।
इस समय तक उनकी उम्र सत्तर के आसपास हो चुकी थी, इसलिए लोगों ने धीरे से "बुढ़ापा" कहा और उन्हें उठने में मदद की। लेकिन मॉरी, जो हम सब से कहीं ज़्यादा अपने अंतर्मन को समझते थे, जानते थे कि कुछ और गड़बड़ है। यह महज़ बुढ़ापा नहीं था। वे हर समय थके हुए रहते थे। उन्हें नींद नहीं आती थी। वे सपने में खुद को मरते हुए देखते थे।
उन्होंने डॉक्टरों से मिलना शुरू किया। कई डॉक्टरों से। उन्होंने उनके खून की जांच की। उन्होंने उनके पेशाब की जांच की। उन्होंने उनके पिछले हिस्से में एक माइक्रोस्कोप डालकर उनकी आंतों की जांच की। आखिरकार, जब कुछ भी पता नहीं चला, तो एक डॉक्टर ने मांसपेशियों की बायोप्सी का आदेश दिया, जिसमें मॉरी की पिंडली से एक छोटा सा टुकड़ा लिया गया। लैब रिपोर्ट में तंत्रिका संबंधी समस्या का संकेत मिला, और मॉरी को कई और परीक्षणों के लिए ले जाया गया। उन परीक्षणों में से एक में, उन्हें एक विशेष सीट पर बैठाया गया और उन्हें बिजली के झटके दिए गए - एक तरह की इलेक्ट्रिक चेयर - और उनकी तंत्रिका संबंधी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया।
“हमें इसकी आगे जांच करनी होगी,” डॉक्टरों ने उसके नतीजों को देखते हुए कहा। “क्यों?” मॉरी ने पूछा। “क्या बात है?”
हमें पक्का पता नहीं है। आपके यहाँ काम धीमा चल रहा है।
क्या उनका समय धीमा चल रहा था? इसका क्या मतलब था?
अंततः, अगस्त 1994 के एक गर्म, उमस भरे दिन, मॉरी और उनकी पत्नी, शार्लोट, न्यूरोलॉजिस्ट के कार्यालय गए, और उन्होंने उन्हें खबर सुनाने से पहले बैठने के लिए कहा: मॉरी को एमियोट्रोफिक लेटरल स्क्लेरोसिस (एएलएस), लू गेहरिग रोग था, जो तंत्रिका तंत्र की एक क्रूर, निर्दयी बीमारी है।
इसका कोई ज्ञात इलाज नहीं था।
“मुझे यह कैसे मिला?” मॉरी ने पूछा।
किसी को पता नहीं था।
"क्या यह लाइलाज है?"
हाँ।
तो क्या मैं मरने वाला हूँ?

जी हां, आप हैं, डॉक्टर ने कहा। मुझे बहुत खेद है।
वह मॉरी और शार्लोट के साथ लगभग दो घंटे तक बैठे रहे और धैर्यपूर्वक उनके सवालों के जवाब देते रहे। जब वे जाने लगे, तो डॉक्टर ने उन्हें एएलएस के बारे में कुछ जानकारी दी, छोटे-छोटे पर्चे, मानो वे कोई बैंक खाता खोल रहे हों। बाहर धूप खिली हुई थी और लोग अपने-अपने काम में लगे हुए थे। एक महिला पार्किंग मीटर में पैसे डालने के लिए दौड़ी। दूसरी किराने का सामान ले जा रही थी। शार्लोट के मन में लाखों सवाल चल रहे थे: हमारे पास कितना समय बचा है? हम कैसे गुजारा करेंगे? हम बिलों का भुगतान कैसे करेंगे?
इस बीच, मेरे पुराने प्रोफेसर अपने आसपास की दिनचर्या की सामान्यता देखकर स्तब्ध रह गए। क्या दुनिया रुक नहीं जानी चाहिए? क्या उन्हें पता नहीं कि मेरे साथ क्या हुआ है?
लेकिन दुनिया रुकी नहीं, उसने बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया, और जैसे ही मॉरी ने कमजोरी से कार का दरवाजा खींचा, उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी गड्ढे में गिर रहा हो।
अब क्या? उसने सोचा।
जैसे-जैसे मेरे पुराने प्रोफेसर जवाब ढूंढते रहे, बीमारी उन पर हावी होती गई, दिन-ब-दिन, सप्ताह-दर-सप्ताह। एक सुबह उन्होंने कार को गैरेज से बाहर निकाला और बड़ी मुश्किल से ब्रेक लगा पाए। बस यहीं से उनके ड्राइविंग करियर का अंत हो गया।
वह बार-बार ठोकर खाकर गिर जाता था, इसलिए उसने एक छड़ी खरीद ली। बस यहीं से उसका बिना सहारे के चलना-फिरना बंद हो गया।
वह नियमित रूप से वाईएमसीए में तैरने गया, लेकिन पाया कि वह अब खुद कपड़े नहीं उतार सकता। इसलिए उसने अपना पहला होम केयर वर्कर नियुक्त किया—टोनी नाम का एक धर्मशास्त्र का छात्र—जो उसे पूल में अंदर-बाहर जाने और स्विमिंग सूट पहनने-उतारने में मदद करता था। लॉकर रूम में, अन्य तैराक घूरने का नाटक करते थे। लेकिन वे घूरते ही रहते थे। यहीं से उसकी निजता का अंत हो गया।
1994 की शरद ऋतु में, मॉरी अपने कॉलेज का अंतिम पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए पहाड़ी ब्रैंडिस परिसर में आए। बेशक, वे इसे छोड़ सकते थे। विश्वविद्यालय समझ जाता। इतने सारे लोगों के सामने क्यों कष्ट सहना? घर पर रहो। अपने मामलों को सुलझा लो। लेकिन मॉरी के मन में छोड़ने का विचार नहीं आया।
इसके बजाय, वह लड़खड़ाते हुए कक्षा में दाखिल हुए, जो तीस से अधिक वर्षों से उनका घर रहा था। छड़ी के सहारे उन्हें कुर्सी तक पहुँचने में थोड़ा समय लगा।

अंततः, वह बैठ गए, चश्मा नाक से नीचे उतारा और उन युवा चेहरों को देखने लगे जो खामोशी से उन्हें निहार रहे थे।
“मेरे दोस्तों, मुझे लगता है कि आप सभी सामाजिक मनोविज्ञान की कक्षा के लिए यहाँ आए हैं। मैं बीस वर्षों से यह पाठ्यक्रम पढ़ा रहा हूँ, और यह पहली बार है जब मैं कह सकता हूँ कि इसे पढ़ाने में जोखिम है, क्योंकि मैं एक जानलेवा बीमारी से ग्रसित हूँ। हो सकता है कि मैं सेमेस्टर पूरा होने तक जीवित न रहूँ।”
"अगर आपको लगता है कि यह एक समस्या है, तो मैं समझता हूं कि आप कोर्स छोड़ना चाहते हैं।"
वे मुस्करा उठे।
और यहीं पर उसका रहस्य समाप्त हो गया।
एएलएस एक जलती हुई मोमबत्ती की तरह है: यह आपकी नसों को पिघला देती है और आपके शरीर को मोम के ढेर में बदल देती है। अक्सर, यह पैरों से शुरू होती है और धीरे- धीरे ऊपर की ओर बढ़ती है। आप अपनी जांघों की मांसपेशियों पर नियंत्रण खो देते हैं, जिससे आप खड़े होने में असमर्थ हो जाते हैं। आप अपने धड़ की मांसपेशियों पर नियंत्रण खो देते हैं, जिससे आप सीधे बैठ नहीं पाते। अंत में, यदि आप तब तक जीवित रहते हैं, तो आप अपने गले में बने एक छेद में लगी नली के माध्यम से सांस ले रहे होते हैं, जबकि आपकी आत्मा, पूरी तरह से जागृत, एक बेजान खोल में कैद होती है, शायद पलकें झपका सके, या जीभ चटका सके, किसी विज्ञान कथा फिल्म के दृश्य की तरह, जैसे कोई व्यक्ति अपने ही शरीर में जम गया हो। यह सब बीमारी होने के दिन से पांच साल से अधिक समय में नहीं होता।
मॉरी के डॉक्टरों ने अनुमान लगाया कि उनके पास केवल दो साल बचे हैं।
मॉरी जानता था कि यह कम था।
लेकिन मेरे पुराने प्रोफेसर ने एक गहरा फैसला लिया था, जिसकी नींव उन्होंने उस दिन रखनी शुरू की थी जब वे डॉक्टर के क्लिनिक से बाहर निकले थे और उनके सिर पर तलवार लटक रही थी। क्या मैं मुरझाकर गायब हो जाऊं, या अपने बचे हुए समय का भरपूर उपयोग करूं? उन्होंने खुद से यह सवाल पूछा था।
वह मुरझाएगा नहीं। उसे मरने से शर्म नहीं आएगी।
इसके बजाय, वह मृत्यु को अपना अंतिम लक्ष्य, अपने जीवन का केंद्र बिंदु बनाना चाहता था। चूंकि सभी को मरना ही है, तो वह स्वयं भी बहुत मूल्यवान हो सकता है, है ना? वह शोध का विषय हो सकता है। एक चलता-फिरता ग्रंथ। मेरी धीमी और

धैर्यपूर्ण मृत्यु का अध्ययन करो। देखो मेरे साथ क्या होता है। मेरे साथ सीखो।
मॉरी जीवन और मृत्यु के बीच के उस अंतिम पुल को पार करेगा और उस यात्रा का वर्णन करेगा।
शरदकालीन सत्र जल्दी बीत गया। दवाइयों की खुराक बढ़ गई। थेरेपी एक नियमित दिनचर्या बन गई। नर्सें उनके घर आकर मॉरी के कमजोर पैरों की देखभाल करतीं, मांसपेशियों को सक्रिय रखतीं, उन्हें आगे-पीछे मोड़तीं, मानो कुएँ से पानी निकाल रही हों। मालिश विशेषज्ञ सप्ताह में एक बार आकर उनके शरीर में लगातार बनी रहने वाली भारी अकड़न को कम करने की कोशिश करते। वे ध्यान शिक्षकों से मिलते, अपनी आँखें बंद करते और अपने विचारों को इतना संकुचित कर लेते कि उनकी दुनिया एक साँस तक सिमट जाती, अंदर-बाहर, अंदर-बाहर।
एक दिन, अपनी छड़ी का सहारा लेते हुए, वह फुटपाथ पर चढ़े और सड़क पर गिर गए। छड़ी की जगह उन्होंने वॉकर का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे उनका शरीर कमजोर होता गया, बार-बार शौचालय जाना उनके लिए बहुत थका देने वाला हो गया, इसलिए मॉरी ने एक बड़े बीकर में पेशाब करना शुरू कर दिया। इसके लिए उन्हें सहारा लेना पड़ता था, यानी किसी को बीकर पकड़ना पड़ता था जबकि मॉरी उसे भरते थे।
हममें से ज़्यादातर लोग इन सब बातों से शर्मिंदा हो जाते, खासकर मॉरी की उम्र में। लेकिन मॉरी हममें से आम लोगों जैसे नहीं थे। जब उनके कुछ करीबी सहकर्मी उनसे मिलने आते, तो वे उनसे कहते, "सुनो, मुझे पेशाब करना है। क्या आप मेरी मदद करेंगे? क्या आपको कोई आपत्ति नहीं है?"
अक्सर, उन्हें खुद भी आश्चर्य होता था कि वे सही थे।
दरअसल, उनके पास आने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। वे मृत्यु के विषय में चर्चा समूह आयोजित करते थे, कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है, और समाज हमेशा से इससे डरता रहा है जबकि इसे पूरी तरह से समझता नहीं है। उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि यदि वे सचमुच उनकी मदद करना चाहते हैं, तो वे उनसे सहानुभूति नहीं बल्कि मुलाकातों, फोन कॉल और अपनी समस्याओं को साझा करने के माध्यम से व्यवहार करें—ठीक उसी तरह जैसे वे हमेशा अपनी समस्याओं को साझा करते आए हैं, क्योंकि मॉरी हमेशा से एक बेहतरीन श्रोता रहे थे।
उसके साथ जो कुछ भी घट रहा था, उसके बावजूद उसकी आवाज़ दृढ़ और आकर्षक थी, और उसका दिमाग लाखों विचारों से भरा हुआ था। वह यह साबित करने पर तुला हुआ था कि "मरना" शब्द "बेकार" का पर्यायवाची नहीं है।

नया साल आया और चला गया। हालाँकि उन्होंने यह बात कभी किसी से नहीं कही, लेकिन मॉरी जानते थे कि यह उनके जीवन का आखिरी साल होगा। अब वे व्हीलचेयर पर थे और अपने प्रियजनों से वो सारी बातें कहने के लिए समय से जूझ रहे थे जो वो कहना चाहते थे। जब ब्रैंडिस में उनके एक सहकर्मी की अचानक दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई, तो मॉरी उनके अंतिम संस्कार में गए। वे उदास होकर घर लौटे। उन्होंने कहा, "कितना बड़ा नुकसान हुआ। इतने सारे लोगों ने इतनी अच्छी-अच्छी बातें कहीं, और इरव को उनमें से कुछ भी सुनने का मौका नहीं मिला।"
मॉरी के पास एक बेहतर विचार था। उन्होंने कुछ फोन किए। उन्होंने एक तारीख तय की। और एक ठंडी रविवार की दोपहर को, उनके घर पर कुछ दोस्त और परिवार के सदस्य उनके "जीवित अंतिम संस्कार" के लिए इकट्ठा हुए। उनमें से प्रत्येक ने मेरे पुराने प्रोफेसर को श्रद्धांजलि अर्पित की। कुछ रोए। कुछ हँसे। एक महिला ने एक कविता पढ़ी: "मेरे प्यारे और स्नेही चचेरे भाई... आपका शाश्वत हृदय
जैसे-जैसे आप समय के साथ आगे बढ़ते हैं, परत दर परत, कोमल सिकोइया..."
मॉरी उनके साथ रोया और हंसा। उस दिन मॉरी ने कहा, "वे सारी दिल की बातें जो हम अपने प्रियजनों से कभी नहीं कह पाते।" उनका "जीवित अंतिम संस्कार" एक शानदार सफलता साबित हुआ।
केवल मॉरी ही अभी तक मरा नहीं था।
दरअसल, उनके जीवन का सबसे असामान्य हिस्सा अभी सामने आने वाला था।

छात्र

इस बिंदु पर, मुझे यह बताना चाहिए कि उस गर्मी के दिन के बाद से मेरे साथ क्या हुआ था जब मैंने आखिरी बार अपने प्रिय और बुद्धिमान प्रोफेसर को गले लगाया था और उनसे संपर्क में रहने का वादा किया था।
मैंने संपर्क नहीं रखा।
सच कहूँ तो, कॉलेज में जिन लोगों को मैं जानता था, उनमें से ज़्यादातर से मेरा संपर्क टूट गया, जिनमें मेरे बीयर पीने वाले दोस्त और वो पहली महिला भी शामिल थी जिसके साथ मैं सुबह उठा था। ग्रेजुएशन के बाद के सालों ने मुझे उस अकड़ू ग्रेजुएट से बिल्कुल अलग बना दिया, जो उस दिन कैंपस छोड़कर न्यूयॉर्क शहर के लिए रवाना हुआ था, दुनिया को अपना हुनर दिखाने के लिए तैयार।
मुझे पता चला कि दुनिया को मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैं अपने शुरुआती बीस के दशक में इधर-उधर भटकता रहा, किराया भरता रहा, विज्ञापन पढ़ता रहा और सोचता रहा कि मेरे लिए मौके क्यों नहीं मिल रहे। मेरा सपना एक मशहूर संगीतकार बनने का था (मैं पियानो बजाता था), लेकिन कई सालों तक सुनसान, अंधेरे नाइट क्लबों में परफॉर्म करने, टूटे वादों, बार-बार टूटते बैंड और ऐसे प्रोड्यूसरों के बाद जो मेरे अलावा बाकी सब में दिलचस्पी दिखाते थे, मेरा सपना टूट गया। मैं अपनी जिंदगी में पहली बार नाकाम हो रहा था।
उसी समय, मृत्यु से मेरा पहला गंभीर सामना हुआ। मेरे प्रिय चाचा, मेरी माँ के भाई, जिन्होंने मुझे संगीत सिखाया, गाड़ी चलाना सिखाया, लड़कियों को लेकर मुझे चिढ़ाते थे, मेरे साथ फुटबॉल खेलते थे—वही एक वयस्क जिन्हें मैं बचपन में निशाना बनाकर कहता था, "मैं बड़ा होकर उन्हीं जैसा बनना चाहता हूँ"— चालीस वर्ष की आयु में अग्नाशय के कैंसर से चल बसे। वे कद में छोटे, आकर्षक और घनी मूंछों वाले व्यक्ति थे, और मैं उनके जीवन के अंतिम वर्ष में उनके ठीक नीचे वाले अपार्टमेंट में उनके साथ रहा। मैंने उनके मजबूत शरीर को कमजोर होते, फिर फूलते देखा, उन्हें रात-रात भर पीड़ा सहते देखा, खाने की मेज पर पेट दबाकर, आँखें बंद करके, दर्द से मुँह सिकोड़कर, वे कराहते थे। "आह्ह्ह्ह, हे भगवान!" वे सिसकते थे। "आह्ह्ह्ह, हे यीशु!" हम सब—मेरी चाची, उनके दो छोटे बेटे, मैं—वहाँ चुपचाप खड़े रहे, प्लेटें साफ करते रहे, नज़रें फेरते रहे। मैंने अपने जीवन में कभी इतना असहाय महसूस नहीं किया था।

मुलाकात जेनीन नाम की एक सांवली महिला से हुई, जो मेरे व्यस्त जीवन और लगातार अनुपस्थिति के बावजूद मुझसे प्यार करती थी। सात साल के प्रेम संबंध के बाद हमने शादी कर ली। शादी के एक हफ्ते बाद ही मैं काम पर लौट आया। मैंने उससे—और खुद से—कहा था कि हम एक दिन परिवार शुरू करेंगे, जो वह बहुत चाहती थी। लेकिन वह दिन कभी नहीं आया।
इसके बजाय, मैंने खुद को उपलब्धियों में डुबो दिया, क्योंकि उपलब्धियों के साथ, मुझे विश्वास था कि मैं चीजों को नियंत्रित कर सकता हूं, मैं बीमार होने और मरने से पहले खुशी के हर आखिरी पल को निचोड़ सकता हूं, जैसे मेरे चाचा मुझसे पहले मरे थे, जिसे मैंने अपना स्वाभाविक भाग्य मान लिया था।
मॉरी की बात करें तो? खैर, मैं कभी-कभार उनके बारे में सोचता था, उन्होंने मुझे "इंसानियत" और "दूसरों से संबंध बनाना" सिखाया था, लेकिन यह हमेशा दूर की बात लगती थी, मानो किसी और जन्म की। सालों से, मैं ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी से आने वाले सभी पत्रों को फेंक देता था, यह सोचकर कि वे सिर्फ पैसे मांग रहे हैं। इसलिए मुझे मॉरी की बीमारी के बारे में पता नहीं चला। जिन लोगों ने मुझे बताया होता, वे बहुत पहले ही भुला दिए गए थे, उनके फोन नंबर अटारी में किसी डिब्बे में बंद पड़े थे।
शायद यह स्थिति वैसी ही बनी रहती, अगर एक रात देर से मैं टीवी चैनल न बदल रहा होता, तभी अचानक कुछ ऐसा सुनाई दिया जिसने मेरा ध्यान खींचा...

[redacted]

[redacted] 1995 [redacted], [redacted]-[redacted] [redacted] "[redacted]" [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

एक प्रोफेसर का अंतिम पाठ्यक्रम: उनकी स्वयं की मृत्यु
इस लेख पर "नाइटलाइन" शो के एक निर्माता की नजर पड़ी, जो इसे वाशिंगटन, डी.सी. में कोप्पेल के पास ले गए।
“इसे देखिए,” निर्माता ने कहा।
अगले ही पल, मॉरी के लिविंग रूम में कैमरामैन मौजूद थे और कोप्पेल की लिमोसिन घर के सामने खड़ी थी।
मॉरी के कई दोस्त और परिवार के सदस्य कोप्पेल से मिलने के लिए इकट्ठा हुए थे, और जब वह प्रसिद्ध व्यक्ति घर में दाखिल हुआ, तो वे उत्साह से झूम उठे - मॉरी को छोड़कर, जो आगे की ओर झुके, अपनी भौहें उठाईं, और अपनी ऊंची, मधुर आवाज से शोरगुल को बाधित कर दिया।
"टेड, इस इंटरव्यू के लिए सहमत होने से पहले मुझे आपके बारे में अच्छी तरह से जांच-पड़ताल करनी होगी।"
कुछ पल की असहज चुप्पी छा गई, फिर दोनों पुरुषों को अध्ययन कक्ष में ले जाया गया। दरवाजा बंद कर दिया गया।
दरवाजे के बाहर खड़े एक दोस्त ने फुसफुसाते हुए कहा, "यार, मुझे उम्मीद है कि टेड मॉरी के साथ नरमी बरतेगा।"
दूसरे ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि मॉरी टेड के साथ नरमी बरतेगा।"
दफ्तर के अंदर, मॉरी ने कोप्पेल को बैठने का इशारा किया। कोप्पेल ने अपने हाथ गोद में रखे और मुस्कुराया।
“मुझे अपने दिल के करीब की कोई बात बताओ,” मॉरी ने बात शुरू की।
"मेरा दिल?"
कोप्पेल ने बूढ़े आदमी को गौर से देखा। "ठीक है," उसने सावधानी से कहा, और अपने बच्चों के बारे में बात करने लगा। वे उसके दिल के बेहद करीब थे, है ना? “अच्छा,” मॉरी ने कहा। “अब मुझे अपने धर्म के बारे में कुछ बताओ।”
कोप्पेल असहज महसूस कर रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं आमतौर पर ऐसे लोगों से इस तरह की बातें नहीं करता जिन्हें मैं कुछ ही मिनटों से जानता हूं।"
“टेड, मैं मर रहा हूँ,” मॉरी ने अपने चश्मे के ऊपर से देखते हुए कहा। “मेरे पास यहाँ ज्यादा समय नहीं बचा है।”
कोप्पेल हँस पड़ा। ठीक है। आस्था। उसने मार्कस ऑरेलियस के एक अंश का हवाला दिया, जिसके बारे में वह दृढ़ता से महसूस करता था।
मॉरी ने सिर हिलाया।

“अब मुझे आपसे एक सवाल पूछने दीजिए,” कोप्पेल ने कहा। “क्या आपने कभी मेरा कार्यक्रम देखा है?”
मॉरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "दो बार, मुझे लगता है।"
“दो बार? बस इतना ही?”
"बुरा मत मानो। मैंने 'ओपरा' सिर्फ एक बार देखी है।"
"अच्छा, आपने मेरा शो दो बार देखा, आपको कैसा लगा?"
मॉरी रुका। "सच कहूँ तो?"
"हाँ?"
मुझे लगा था कि तुम आत्ममुग्ध हो।
कोप्पेल जोर से हंस पड़ा।
उन्होंने कहा, "मैं इतना बदसूरत हूं कि आत्ममुग्ध नहीं हो सकता।"
कुछ ही देर में लिविंग रूम की चिमनी के सामने कैमरे चालू हो गए, कोप्पेल अपने साफ-सुथरे नीले सूट में और मॉरी अपने खुरदुरे भूरे स्वेटर में नज़र आए। उन्होंने इस इंटरव्यू के लिए फैंसी कपड़े या मेकअप पहनने से इनकार कर दिया था। उनका मानना था कि मृत्यु शर्मिंदगी का कारण नहीं होनी चाहिए; वे मृत्यु को सजाने-संवारने वाले नहीं थे।
क्योंकि मॉरी व्हीलचेयर पर बैठे थे, इसलिए कैमरे में उनके कमजोर पैर कभी नहीं दिखे। और क्योंकि वे अभी भी अपने हाथों को हिला सकते थे—मॉरी हमेशा दोनों हाथों को हिलाते हुए बोलते थे—वे जीवन के अंत का सामना कैसे किया जाए, यह समझाते समय बहुत जोश दिखाते थे।
“टेड,” उन्होंने कहा, “जब यह सब शुरू हुआ, तो मैंने खुद से पूछा, ‘क्या मैं ज्यादातर लोगों की तरह दुनिया से अलग हो जाऊंगा, या मैं जिऊंगा?’ मैंने फैसला किया कि मैं जिऊंगा—या कम से कम जीने की कोशिश करूंगा—जिस तरह मैं चाहता हूं, गरिमा के साथ, साहस के साथ, हास्य के साथ, संयम के साथ।”
“कुछ सुबहें ऐसी होती हैं जब मैं खूब रोती हूँ और खुद पर तरस खाती हूँ। कुछ सुबहें ऐसी होती हैं जब मैं बहुत गुस्से में और कड़वाहट से भरी होती हूँ। लेकिन यह ज्यादा देर तक नहीं रहता। फिर मैं उठती हूँ और कहती हूँ, ‘मैं जीना चाहती हूँ...’”
“अभी तक तो मैं ऐसा कर पाया हूँ। क्या मैं इसे जारी रख पाऊँगा? मुझे नहीं पता। लेकिन मुझे खुद पर पूरा भरोसा है कि मैं कर लूँगा।”
कोप्पेल मॉरी से बेहद प्रभावित प्रतीत हुए। उन्होंने मृत्यु से उत्पन्न होने वाली विनम्रता के बारे में पूछा।

“□□□□□, □□□□□,” □□□□ □□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ “□□□□ □□□□ □□□ □□ □□...”

"□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□,"

□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□, □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□?

□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□

□□□□□□□ □□ □□□, □□□ □□□□□

□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□, "□□□□□, □□□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□"

□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□, □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□

□□□□□□□□ □□□, "□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□?"

□□□□□□ □□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□—“□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□?”—□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□

□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□, 1976 □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□, □□□□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□

“□□□□□?” □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□

□□□ □□□ □□□□□ □□□□

“□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□? □□ □□□□□ □□□□□ □□?”

□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□

□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□

“□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□ □□□,” □□□□ □□ □□□, □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ “□□, □□□?”

□□□?

□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

“हां, हां, मैं यहीं हूं,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा और टीवी निर्माता के साथ अपनी बातचीत तब तक जारी रखी जब तक हमारी बातचीत समाप्त नहीं हो गई।
मैंने वही किया जिसमें मैं माहिर हो गया था: मैंने अपना काम जारी रखा, यहाँ तक कि जब मेरे मरणासन्न प्रोफेसर अपने घर के सामने वाले लॉन में मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मुझे इस बात पर गर्व नहीं है, लेकिन मैंने यही किया।
अब, पाँच मिनट बाद, मॉरी मुझे गले लगा रहा था, उसके हल्के होते बाल मेरे गालों से छू रहे थे। मैंने उससे कहा था कि मैं अपनी चाबियाँ ढूंढ रही थी, इसीलिए मुझे कार में इतना समय लग गया था, और मैंने उसे और कसकर गले लगा लिया, मानो मैं अपने छोटे से झूठ को चूर-चूर कर देना चाहती थी। हालाँकि बसंत की धूप गर्म थी, उसने विंडब्रेकर पहना हुआ था और उसके पैर कंबल से ढके हुए थे। उससे हल्की खट्टी गंध आ रही थी, जैसी कभी-कभी दवा लेने वाले लोगों से आती है। उसका चेहरा मेरे चेहरे से सटा हुआ था, और मैं उसके भारी साँसों को अपने कान में सुन सकती थी।
“मेरे पुराने दोस्त,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “आखिरकार तुम वापस आ ही गए।” वह मुझे थामे हुए था, मुझे जाने नहीं दे रहा था, उसके हाथ मेरी कोहनियों तक पहुँच रहे थे जब मैं उसके ऊपर झुकी हुई थी। इतने सालों बाद भी ऐसा स्नेह देखकर मैं हैरान थी, लेकिन फिर, मैंने अपने वर्तमान और अतीत के बीच जो पत्थर की दीवारें खड़ी कर रखी थीं, उनमें मैं भूल गई थी कि हम कभी कितने करीब थे। मुझे स्नातक दिवस, ब्रीफकेस, मेरे जाने पर उसके आँसू याद आए, और मैंने अपनी भावनाओं को दबा लिया क्योंकि मैं जानती थी, दिल ही दिल में, कि मैं अब वह अच्छी, प्रतिभाशाली छात्रा नहीं थी जिसे वह याद करता था।
मुझे बस यही उम्मीद थी कि अगले कुछ घंटों के लिए मैं उसे बेवकूफ बना सकूं।
घर के अंदर, हम अखरोट की लकड़ी की डाइनिंग टेबल पर बैठे, खिड़की के पास जहाँ से पड़ोसी का घर दिखता था। मॉरी अपनी व्हीलचेयर को ठीक करने की कोशिश कर रहा था ताकि आराम से बैठ सके। हमेशा की तरह, वह मुझे खाना खिलाना चाहता था, और मैंने हाँ कह दी। वहाँ काम करने वाली एक महिला, कॉनी नाम की एक हष्ट-पुष्ट इतालवी महिला, ने रोटी और टमाटर काटे और चिकन सलाद, हुम्मस और तबूली के डिब्बे लेकर आई।
वह कुछ गोलियां भी लाई थी। मॉरी ने उन्हें देखा और आह भरी। उसकी आंखें मेरी याद से कहीं ज्यादा धंसी हुई थीं, और गालों की हड्डियां पहले से ज्यादा उभरी हुई थीं। इससे उसका चेहरा और भी कठोर और बूढ़ा लग रहा था—जब तक कि वह

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible], [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

कक्षा

डाइनिंग रूम की खिड़की से सूरज की किरणें अंदर आ रही थीं, जिससे लकड़ी का फर्श जगमगा रहा था। हम वहाँ करीब दो घंटे से बातें कर रहे थे। फोन फिर बजा और मॉरी ने अपनी सहायक कोनी को फोन उठाने को कहा। वह मॉरी की छोटी काली अपॉइंटमेंट बुक में फोन करने वालों के नाम लिख रही थी। दोस्त। ध्यान सिखाने वाले शिक्षक। एक चर्चा समूह। कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी पत्रिका के लिए उनकी तस्वीर खींचना चाहता था। यह साफ था कि मैं अकेला नहीं था जो अपने पुराने प्रोफेसर से मिलने में दिलचस्पी रखता था—"नाइटलाइन" में आने से वे एक तरह से सेलिब्रिटी बन गए थे—लेकिन मॉरी के इतने सारे दोस्तों को देखकर मैं प्रभावित हुआ, शायद थोड़ा ईर्ष्या भी हुई। मैंने कॉलेज के दिनों के अपने दोस्तों के बारे में सोचा। वे कहाँ चले गए?
"तुम्हें पता है, मिच, अब जब मैं मरने वाला हूँ, तो मैं लोगों के लिए और भी दिलचस्प हो गया हूँ।"
आप हमेशा से ही दिलचस्प रहे हैं।
“हो।” मॉरी मुस्कुराया। “आप दयालु हैं।”
नहीं, मैं नहीं हूँ, मैंने सोचा।
उन्होंने कहा, “बात यह है कि लोग मुझे एक सेतु के रूप में देखते हैं। मैं पहले जितना जीवंत नहीं रहा, लेकिन अभी मरा भी नहीं हूँ। मैं एक तरह से... बीच में हूँ।”
उन्हें खांसी आई, फिर उनके चेहरे पर मुस्कान लौट आई। "मैं यहां अपनी आखिरी महान यात्रा पर हूं—और लोग मुझसे पूछना चाहते हैं कि उन्हें क्या-क्या सामान पैक करना चाहिए।"
फोन फिर बजा।
“मॉरी, क्या तुम बात कर सकते हो?” कॉनी ने पूछा।
“मैं अभी अपने पुराने दोस्त से मिलने गया हूँ,” उसने घोषणा की। “उन्हें बाद में फोन करने दीजिए।”
मैं आपको बता नहीं सकती कि उन्होंने मेरा इतना गर्मजोशी से स्वागत क्यों किया। मैं सोलह साल पहले उन्हें छोड़कर गई वह होनहार छात्रा तो बिल्कुल नहीं थी। अगर "नाइटलाइन" न होता, तो मॉरी शायद मुझे दोबारा देखे बिना ही मर जाते। मेरे पास इसका कोई अच्छा बहाना नहीं था, सिवाय उस एक बहाने के जो आजकल हर किसी

के पास होता है। मैं अपने जीवन के मोहक आकर्षण में बहुत ज्यादा उलझ गई थी। मैं व्यस्त थी।
मुझे क्या हो गया? मैंने खुद से पूछा। मॉरी की ऊँची, भारी आवाज़ मुझे मेरे विश्वविद्यालय के दिनों में ले गई, जब मैं अमीर लोगों को बुरा समझता था, कमीज़ और टाई को जेल के कपड़े मानता था, और बिना आज़ादी के ज़िंदगी जीना— मोटरसाइकिल पर सवार होकर, चेहरे पर हवा का झोंका लिए, पेरिस की सड़कों पर, तिब्बत के पहाड़ों में—बिल्कुल भी अच्छी ज़िंदगी नहीं थी। मुझे क्या हो गया?
अस्सी का दशक आया। नब्बे का दशक आया। मौत, बीमारी, मोटापा और गंजापन सब कुछ हुआ। मैंने ज़्यादा पैसे के लिए अपने कई सपने कुर्बान कर दिए, और मुझे एहसास भी नहीं हुआ कि मैं ऐसा कर रहा हूँ।
फिर भी, मॉरी हमारे कॉलेज के दिनों के आश्चर्य के साथ इस तरह बात कर रहा था, मानो मैं बस एक लंबी छुट्टी पर गया था।
“क्या आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिला है जिसके साथ आप अपने दिल की बात साझा कर सकें?” उसने पूछा।
क्या आप अपने समुदाय को कुछ योगदान दे रहे हैं?
क्या आप अपने आप से संतुष्ट हैं?
क्या आप यथासंभव मानवीय बनने की कोशिश कर रहे हैं?
मैं बेचैन हो गई, यह दिखाना चाहती थी कि मैं इन सवालों से गहराई से जूझ रही थी। आखिर मुझे क्या हो गया था? मैंने कभी खुद से वादा किया था कि मैं कभी पैसे के लिए काम नहीं करूंगी, पीस कोर में शामिल होऊंगी, और खूबसूरत, प्रेरणादायक जगहों पर रहूंगी।
इसके बजाय, मैं दस साल से डेट्रॉइट में एक ही जगह पर काम कर रहा था, उसी बैंक में जाता था, उसी नाई के पास जाता था। मैं सैंतीस साल का था, कॉलेज के दिनों से भी ज़्यादा कुशल, कंप्यूटर, मॉडेम और मोबाइल फ़ोन से बंधा हुआ। मैं अमीर एथलीटों के बारे में लेख लिखता था, जिन्हें ज़्यादातर मेरे जैसे लोगों की कोई परवाह नहीं थी। मैं अब अपने हम उम्र लोगों के मुकाबले जवान नहीं था, न ही मैं मुंह में बिना जली सिगरेट लिए ग्रे स्वेटशर्ट पहनकर घूमता था। मैं अंडे के सलाद सैंडविच खाते हुए जीवन के अर्थ पर लंबी चर्चाएँ नहीं करता था।
मेरे दिन व्यस्त रहते थे, फिर भी मैं ज्यादातर समय असंतुष्ट ही रहता था। मुझे क्या हुआ है?
मुझे अचानक उपनाम याद आ गया और मैंने कहा, "कोच।"

मॉरी मुस्कुराया। "यह मैं ही हूँ। मैं अब भी तुम्हारा कोच हूँ।"
वह हँसा और अपना खाना फिर से शुरू कर दिया, जो उसने चालीस मिनट पहले शुरू किया था। मैं उसे देखता रहा, उसके हाथ बड़ी सावधानी से चल रहे थे, मानो वह उन्हें पहली बार इस्तेमाल करना सीख रहा हो। वह चाकू से ज़ोर से दबा नहीं पा रहा था। उसकी उंगलियाँ काँप रही थीं। हर निवाला उसके लिए एक संघर्ष था; वह निगलने से पहले खाने को बारीक चबाता था, और कभी-कभी खाना उसके होठों से बाहर निकल जाता था, इसलिए उसे अपना हाथ नीचे रखकर रुमाल से अपना चेहरा पोंछना पड़ता था। उसकी कलाई से लेकर उंगलियों के जोड़ों तक की त्वचा उम्र के धब्बों से भरी हुई थी, और ढीली थी, जैसे चिकन सूप की हड्डी से लटकती त्वचा।
कुछ देर तक हम बस ऐसे ही खाते रहे, एक बीमार बूढ़ा आदमी, एक स्वस्थ, जवान आदमी, दोनों कमरे की खामोशी में खोए रहे। मैं कह सकता हूँ कि यह शर्मिंदगी भरी खामोशी थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि सिर्फ मैं ही शर्मिंदा था।
"मरना, मिच, दुख मनाने की सिर्फ एक वजह है। दुखी जीवन जीना बिल्कुल अलग बात है। मेरे पास आने वाले बहुत से लोग दुखी हैं।"
क्यों?
“खैर, पहली बात तो यह है कि हमारी संस्कृति लोगों को आत्मसम्मान का एहसास नहीं कराती। हम गलत बातें सिखा रहे हैं। और आपको इतना मजबूत होना होगा कि अगर संस्कृति काम नहीं करती, तो उसे मत अपनाओ। अपनी खुद की संस्कृति बनाओ। ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर पाते। वे मुझसे भी ज्यादा दुखी हैं—मेरी वर्तमान स्थिति में भी।”
“मैं भले ही मर रहा हूँ, लेकिन मेरे चारों ओर प्यार करने वाले और देखभाल करने वाले लोग हैं। ऐसा कितने लोग कह सकते हैं?”
मुझे उनमें आत्म-दया की कमी देखकर आश्चर्य हुआ। मॉरी, जो अब नाच नहीं सकते थे, तैर नहीं सकते थे, नहा नहीं सकते थे, चल नहीं सकते थे; मॉरी, जो अब अपने दरवाजे का जवाब नहीं दे सकते थे, नहाने के बाद खुद को सुखा नहीं सकते थे, या बिस्तर पर करवट भी नहीं बदल सकते थे। वे इतने सहज कैसे हो सकते थे? मैंने उन्हें कांटे से टमाटर का एक टुकड़ा उठाते हुए देखा, पहली दो बार में वे उसे पकड़ नहीं पाए— एक दयनीय दृश्य, और फिर भी मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता था कि उनकी उपस्थिति में बैठना लगभग जादुई रूप से शांत था, वही शांत हवा जो मुझे कॉलेज के दिनों में सुकून देती थी।

मैंने आदतवश घड़ी पर एक नज़र डाली—देर हो रही थी, और मैंने घर लौटने के लिए अपनी हवाई यात्रा की बुकिंग बदलने के बारे में सोचा। तभी मॉरी ने कुछ ऐसा किया जो आज तक मुझे परेशान करता है।
“तुम्हें पता है मेरी मौत कैसे होगी?” उसने कहा।
मैंने अपनी भौहें ऊपर उठाईं।
“मेरा दम घुट रहा है। हाँ। अस्थमा की वजह से मेरे फेफड़े इस बीमारी को सहन नहीं कर पा रहे हैं। यह एएलएस मेरे शरीर में ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इसने पहले ही मेरे पैरों को जकड़ लिया है। बहुत जल्द यह मेरे हाथों और बाजुओं को भी अपनी चपेट में ले लेगा। और जब यह मेरे फेफड़ों तक पहुँचेगा...”
उसने अपने कंधे उचका दिए।
“...मैं डूब गया हूँ।”
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, इसलिए मैंने कहा, "ठीक है, मतलब... कुछ भी हो सकता है।"
मॉरी ने अपनी आँखें बंद कर लीं। “मुझे पता है, मिच। तुम्हें मेरी मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। मैंने एक अच्छा जीवन जिया है, और हम सब जानते हैं कि ऐसा होना ही है। शायद मेरे पास चार या पाँच महीने बचे हैं।”
चलो ना, मैंने घबराते हुए कहा। कोई नहीं कह सकता—
“मैं कर सकता हूँ,” उसने धीरे से कहा। “एक छोटा सा टेस्ट भी है। एक डॉक्टर ने मुझे दिखाया था।”
एक परीक्षा?
कुछ बार गहरी सांस लें।
मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।
"अब, एक बार फिर, लेकिन इस बार, जब आप सांस छोड़ें, तो अगली सांस लेने से पहले जितनी गिनती गिन सकते हैं, उतनी गिनें।"
मैंने जल्दी-जल्दी संख्याएँ बोलीं। “एक-दो-तीन-चार-पाँच-छह-सात-आठ…” साँस फूलने से पहले ही मैं सत्तर तक पहुँच गया।
“अच्छा,” मॉरी ने कहा। “तुम्हारे फेफड़े स्वस्थ हैं। अब देखो मैं क्या करता हूँ।”
उसने गहरी सांस ली, फिर धीमी, लड़खड़ाती आवाज़ में गिनती शुरू की। “एक-दो-तीन-चार-पांच-छह-सात-आठ-नौ-दस-ग्यारह-बारह-तेरह-चौदह-पंद्रह-सोलह-सत्रह-अठारह—” वह हांफते हुए रुक गया।

"□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□"
□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ "□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□"
□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□□, "□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□"
□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□ □ □□□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ '□□□□: □□□□□ □□ □□□□', '□□□ □□ □□□', '□□□□□□□ □□□'□
□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□-□□□ □□□□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□, □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□
“□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□?” □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□?
□□□□ □□□□-□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□, □□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□

“[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

“[illegible] [illegible] [illegible]” [illegible] [illegible] [illegible] “[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[redacted]

[redacted]

इतना मजबूत होना होगा कि आप कह सकें कि अगर संस्कृति काम नहीं करती, तो उसे मत अपनाओ।”
मॉरी ने अपने शब्दों को सच साबित करते हुए, बीमार पड़ने से बहुत पहले ही अपनी एक अलग संस्कृति विकसित कर ली थी। चर्चा समूह, दोस्तों के साथ सैर, हार्वर्ड स्क्वायर चर्च में अपने संगीत पर नृत्य। उन्होंने ग्रीनहाउस नामक एक परियोजना शुरू की, जहाँ गरीब लोगों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ मिल सकती थीं। वे अपनी कक्षाओं के लिए नए विचार खोजने के लिए किताबें पढ़ते थे, सहकर्मियों से मिलते थे, पुराने छात्रों से संपर्क बनाए रखते थे, दूर के दोस्तों को पत्र लिखते थे। वे खाने और प्रकृति को निहारने में अधिक समय बिताते थे और टीवी सिटकॉम या "वीक मूवीज़" देखने में समय बर्बाद नहीं करते थे। उन्होंने मानवीय गतिविधियों - बातचीत, मेलजोल, स्नेह - का एक ऐसा आवरण बना लिया था, जिसने उनके जीवन को एक भरे हुए सूप के कटोरे की तरह भर दिया था। मैंने अपनी खुद की एक संस्कृति भी विकसित कर ली थी। काम। मैंने इंग्लैंड में चार-पाँच मीडिया नौकरियां कीं, उन्हें एक मसखरे की तरह बखूबी संभाला। मैं दिन में आठ घंटे कंप्यूटर पर बिताता था, अपनी खबरें अमेरिका भेजता रहता था। फिर मैंने टीवी के लिए काम किया, लंदन के कई हिस्सों में क्रू के साथ यात्रा की। मैं हर सुबह और दोपहर रेडियो रिपोर्ट भी देता था। यह कोई असामान्य काम नहीं था। सालों से मैंने काम को अपना साथी बना लिया था और बाकी सब कुछ किनारे कर दिया था।
विंबलडन में, मैं अपने छोटे से लकड़ी के वर्क क्यूबिकल में खाना खाता था और इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचता था। एक दिन, पत्रकारों की भीड़ आंद्रे अगासी और उनकी मशहूर प्रेमिका ब्रुक शील्ड्स का पीछा करने लगी, और मुझे एक ब्रिटिश फोटोग्राफर ने धक्का दे दिया, जिसने मुश्किल से "सॉरी" कहा और अपने गले में लटके बड़े-बड़े धातु के लेंस लिए तेज़ी से आगे बढ़ गया। मुझे मॉरी की कही एक और बात याद आई: "बहुत से लोग अर्थहीन जीवन जीते हैं। वे आधे सोए हुए लगते हैं, भले ही वे उन कामों में व्यस्त हों जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे गलत चीजों के पीछे भाग रहे हैं। अपने जीवन में अर्थ लाने का तरीका है खुद को दूसरों से प्यार करने में लगाना, अपने आस-पास के समुदाय के लिए समर्पित करना और कुछ ऐसा बनाने में लगाना जो आपको उद्देश्य और अर्थ दे।" मुझे पता था कि वह सही कह रहा था।
ऐसा नहीं है कि मैंने इसके बारे में कुछ किया हो।

टूर्नामेंट खत्म होने के बाद—और इसे पूरा करने के लिए मैंने जितनी अनगिनत कप कॉफ़ी पीं—मैंने अपना कंप्यूटर बंद किया, अपना कमरा साफ़ किया और सामान पैक करने के लिए अपार्टमेंट वापस चला गया। काफ़ी रात हो चुकी थी। टीवी पर धुंधली स्क्रीन के अलावा कुछ नहीं दिख रहा था।
मैं डेट्रॉइट के लिए हवाई जहाज़ से गया, दोपहर बाद देर से पहुँचा, किसी तरह घर पहुँचा और सो गया। सुबह उठते ही मुझे एक चौंकाने वाली खबर मिली: मेरे अखबार के यूनियन हड़ताल पर चले गए थे। दफ्तर बंद था। मुख्य द्वार पर प्रदर्शनकारी खड़े थे और सड़कों पर नारे लगाते हुए प्रदर्शनकारी घूम रहे थे। यूनियन के सदस्य के तौर पर मेरे पास कोई विकल्प नहीं था: अचानक, और अपने जीवन में पहली बार, मैं बेरोज़गार हो गया, बिना वेतन के, और अपने मालिकों के खिलाफ खड़ा हो गया। यूनियन नेताओं ने मेरे घर फोन किया और मुझे मेरे पूर्व संपादकों से किसी भी तरह का संपर्क न करने की चेतावनी दी, जिनमें से कई मेरे दोस्त थे, और मुझे कहा कि अगर वे फोन करके अपनी बात रखने की कोशिश करें तो मैं फोन काट दूं।
"हम तब तक लड़ेंगे जब तक हम जीत नहीं जाते!" यूनियन के नेताओं ने सैनिकों की तरह शपथ लेते हुए कहा।
मैं उलझन और निराशा से ग्रस्त थी। हालाँकि टीवी और रेडियो पर काम करना एक अच्छा पूरक था, लेकिन अखबार मेरे लिए जीवन रेखा, मेरी ऑक्सीजन था; जब मैं हर सुबह अखबार में अपनी कहानियाँ छपी देखती थी, तो मुझे पता चलता था कि कम से कम एक मायने में तो मैं जीवित हूँ।
अब सब कुछ खत्म हो चुका था। और जैसे-जैसे हड़ताल जारी रही—पहला दिन, दूसरा दिन, तीसरा दिन—चिंता भरे फोन आते रहे और अफवाहें फैलती रहीं कि यह कई महीनों तक चल सकती है। मेरी जानी-पहचानी दुनिया उलट-पुलट हो गई थी। हर रात खेल आयोजन होते थे जिन्हें कवर करने मैं जाया करता था। लेकिन इसके बजाय, मैं घर पर ही रहा और उन्हें टीवी पर देखता रहा। मुझे यह सोचने की आदत हो गई थी कि पाठकों को किसी न किसी तरह मेरे कॉलम की ज़रूरत है। मैं यह देखकर दंग रह गया कि मेरे बिना भी सब कुछ कितनी आसानी से चलता रहा।
एक सप्ताह बाद, मैंने फोन उठाया और मॉरी का नंबर डायल किया। कॉनी ने उसे फोन पर बात करवाई।
"तुम मुझसे मिलने आ रहे हो," उसने कहा, यह एक प्रश्न से अधिक एक कथन था।
अच्छा। क्या मैं कर सकता हूँ?
"मंगलवार कैसा रहेगा?"
मैंने कहा, मंगलवार ठीक रहेगा। मंगलवार बढ़िया रहेगा।

[illegible]

[illegible]

□□□ □□□□□ □□□□ □□□?

□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, "□□□□ □□□□ □□□ □□? □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□?"

पहले मंगलवार को हम दुनिया के बारे में बात करेंगे

कॉनी ने दरवाजा खोला और मुझे अंदर आने दिया। मॉरी रसोई की मेज के पास अपनी व्हीलचेयर पर बैठे थे, उन्होंने ढीली सूती कमीज और उससे भी ढीली काली ट्रैक पैंट पहनी हुई थी। ये ढीली इसलिए थीं क्योंकि उनके पैर सामान्य कपड़ों के आकार से कहीं ज्यादा पतले हो गए थे—आप उनके जांघों के चारों ओर दो हाथ रख सकते थे और उंगलियां आपस में छू जाती थीं। अगर वे खड़े हो पाते, तो उनकी लंबाई पांच फीट से ज्यादा नहीं होती, और शायद वे छठी कक्षा के बच्चे की जींस में फिट हो जाते।
“मैं तुम्हारे लिए कुछ लाई हूँ,” मैंने भूरे रंग का पेपर बैग दिखाते हुए कहा। एयरपोर्ट से लौटते समय मैं पास के एक सुपरमार्केट में रुकी और वहाँ से टर्की, आलू का सलाद, मैकरोनी का सलाद और बेगल्स खरीदे। मुझे पता था कि घर में खाने- पीने का सामान भरपूर है, लेकिन मैं भी कुछ देना चाहती थी। मॉरी की मदद करने में मैं पूरी तरह असमर्थ थी। और मुझे खाने के प्रति उसका लगाव भी याद आ गया। “आह, कितना सारा खाना!” उसने गाते हुए कहा। “अच्छा। अब तुम्हें मेरे साथ खाना पड़ेगा।”
हम रसोई की मेज पर बेंत की कुर्सियों के बीच बैठे थे। इस बार, सोलह साल पुरानी जानकारी दोहराने की ज़रूरत नहीं थी, हम तुरंत अपने पुराने कॉलेज के संवादों में रम गए। मॉरी सवाल पूछते, मेरे जवाब सुनते, और एक रसोइए की तरह रुक-रुक कर मेरी भूली हुई या अनसुनी बातों को समझाते। उन्होंने अखबारों की हड़ताल के बारे में पूछा, और हमेशा की तरह, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि दोनों पक्ष आपस में बातचीत करके अपनी समस्याओं का समाधान क्यों नहीं कर लेते। मैंने उनसे कहा कि हर कोई उनके जितना बुद्धिमान नहीं होता।
कभी-कभी उन्हें शौचालय जाने के लिए रुकना पड़ता था, जिसमें कुछ समय लगता था। कॉनी उन्हें व्हीलचेयर पर बिठाकर शौचालय तक ले जाती, फिर कुर्सी से उठाकर सहारा देती और पेशाब करने में उनकी मदद करती। हर बार जब वे वापस आते, तो थके हुए दिखते थे।
उन्होंने कहा, "क्या आपको याद है जब मैंने टेड कोप्पेल से कहा था कि बहुत जल्द किसी को मेरा मल साफ करना पड़ेगा?"
मैं हंस पड़ा। ऐसे पल को आप कभी नहीं भूलते।
"खैर, मुझे लगता है कि वह दिन आने वाला है। यह बात मुझे परेशान करती है।"

क्यों?
क्योंकि यह निर्भरता का सबसे बड़ा संकेत है। कोई आपका पिछवाड़ा साफ करे। लेकिन मैं इस पर काम कर रहा हूँ। मैं इस प्रक्रिया का आनंद लेने की कोशिश कर रहा हूँ।
इसका आनंद लें?
“हाँ। आखिरकार, मुझे एक बार फिर बच्चा बनने का मौका मिल रहा है।”
यह इसे देखने का एक अनूठा तरीका है।
“खैर, अब मुझे जीवन को एक अलग नजरिए से देखना होगा। सच तो यही है। मैं खरीदारी करने नहीं जा सकती, बैंक खातों का हिसाब-किताब नहीं रख सकती, कचरा भी नहीं फेंक सकती। लेकिन मैं अपने ढलते दिनों के साथ यहाँ बैठकर उन चीजों पर विचार कर सकती हूँ जो मुझे जीवन में महत्वपूर्ण लगती हैं। मेरे पास ऐसा करने के लिए समय भी है और वजह भी।”
तो मैंने सहज रूप से व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया देते हुए कहा, मुझे लगता है कि जीवन का अर्थ खोजने की कुंजी कचरा फेंकना बंद करना है?
वह हँसा, और मुझे राहत मिली कि वह हँसा।
जब कोनी प्लेटें लेकर जा रही थी, तभी मेरी नज़र अखबारों के ढेर पर पड़ी, जिन्हें मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही पढ़ा जा चुका था।
मैंने पूछा, क्या आप खबरों से अपडेट रहने की जहमत उठाते हैं?
“हां,” मॉरी ने कहा। “क्या आपको यह अजीब लगता है? क्या आपको लगता है कि चूंकि मैं मर रहा हूं, इसलिए मुझे इस दुनिया में क्या हो रहा है, इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए?”
शायद।
उसने आह भरी। "शायद तुम सही हो। शायद मुझे परवाह नहीं करनी चाहिए। आखिरकार, मैं यह देखने के लिए तो जीवित ही नहीं रहूंगा कि इसका अंत कैसे होता है।" “लेकिन इसे समझाना मुश्किल है, मिच। अब जब मैं खुद तकलीफ झेल रही हूँ, तो मुझे तकलीफ झेल रहे लोगों से पहले से कहीं ज़्यादा जुड़ाव महसूस हो रहा है। परसों रात टीवी पर मैंने बोस्निया में लोगों को सड़क पार करते हुए देखा, उन पर गोलियाँ चलाई जा रही थीं, उन्हें मारा जा रहा था, बेगुनाह लोग... और मैं बस रोने लगी। मुझे उनका दर्द ऐसा महसूस हो रहा है जैसे वो मेरा अपना हो। मैं इनमें से किसी को नहीं जानती। लेकिन—मैं इसे कैसे कहूँ?—मैं लगभग... उनकी तरफ खिंची चली जा रही हूँ।”

उनकी आंखें नम हो गईं, और मैंने विषय बदलने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने अपना चेहरा पोंछा और मुझे टाल दिया।
“मैं अब हर समय रोता रहता हूँ,” उसने कहा। “कोई बात नहीं।”
अद्भुत! मैंने सोचा। मैं समाचार जगत में काम करता था। मैंने ऐसी खबरें कवर कीं जिनमें लोगों की मृत्यु हुई। मैंने शोक संतप्त परिवारों के साक्षात्कार लिए। मैं अंतिम संस्कार में भी शामिल हुआ। मैं कभी नहीं रोया। मॉरी, दुनिया के दूसरे कोने में लोगों के दुख के लिए रो रहा था। क्या अंत में यही होता है? मैंने सोचा। शायद मृत्यु ही सबको एक समान बनाती है, वह एक बड़ी चीज जो अजनबियों को भी एक-दूसरे के लिए आंसू बहाने पर मजबूर कर देती है।
मॉरी ने टिश्यू में जोर से आवाज निकाली। "तुम्हें इससे कोई दिक्कत नहीं है, है ना? मर्दों का रोना?"
हां, मैंने कहा, लेकिन बहुत जल्दी में।
वह मुस्कुराया। "अरे, मिच, मैं तुम्हें थोड़ा सहज बना दूंगा। एक दिन मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि रोना ठीक है।"
हां, हां, मैंने कहा।
“हां, हां,” उसने कहा।
हम हँसे क्योंकि वह लगभग बीस साल पहले भी यही बात कहा करता था। खासकर मंगलवार को। दरअसल, मंगलवार ही हमारा साथ बिताने का दिन रहा था। मॉरी के साथ मेरे ज़्यादातर कोर्स मंगलवार को ही होते थे, मंगलवार को ही उनके ऑफिस में समय मिलता था, और जब मैंने अपनी सीनियर थीसिस लिखी - जो कि लगभग पूरी तरह से मॉरी का ही सुझाव था - तो मंगलवार को ही हम साथ बैठते थे, कभी उनकी डेस्क पर, कभी कैफ़ेटेरिया में, कभी पर्लमैन हॉल की सीढ़ियों पर, और अपने काम की समीक्षा करते थे।
इसलिए मंगलवार को, यहाँ घर में, जिसके सामने जापानी मेपल का पेड़ है, हमारा फिर से एक साथ होना बिलकुल उचित लगा। जब मैं जाने की तैयारी कर रहा था, तो मैंने इस बारे में मॉरी से बात की।
उन्होंने कहा, "हम मंगलवार को बाहर जाने वाले लोग हैं।"
मैंने दोहराया, मंगलवार वाले लोग।
मॉरी मुस्कुराया।
"मिच, तुमने मुझसे उन लोगों की देखभाल करने के बारे में पूछा जिन्हें मैं जानती भी नहीं। लेकिन क्या मैं तुम्हें वह बात बता सकती हूँ जो मैं इस बीमारी से सबसे ज्यादा सीख रही हूँ?"

[illegible]? “[illegible] [illegible] [illegible] [

□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□
□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□
□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□, "□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□
□□□□"
□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□, □□□, □□ □□□□ □□ □□□
□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□
□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□
□□□?
"□□□□□"

दूसरे मंगलवार को हम खुद पर तरस खाने के बारे में बात करते हैं।

मैं अगले मंगलवार को वापस आया। और उसके बाद कई मंगलवारों तक आता रहा। इन मुलाकातों का मुझे जितना इंतज़ार रहता था, उतना शायद ही कोई सोचे, क्योंकि मैं एक मरते हुए आदमी के पास बैठने के लिए सात सौ मील की उड़ान भरकर आता था। लेकिन जब मैं मॉरी से मिलने जाता, तो मानो समय थम सा जाता था, और वहाँ मुझे खुद में ज़्यादा अच्छा लगता था। अब मैं हवाई अड्डे से आने-जाने के लिए मोबाइल फ़ोन किराए पर नहीं लेता था। मॉरी की नकल करते हुए मैंने खुद से कहा, "इन्हें इंतज़ार करने दो।"
डेट्रॉइट में अखबारों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। वास्तव में, यह और भी बदतर हो गई थी, धरना देने वालों और उनकी जगह काम करने वाले कर्मचारियों के बीच हिंसक झड़पें हो रही थीं, लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा था, पीटा जा रहा था और डिलीवरी ट्रकों के सामने सड़क पर लेटे हुए लोगों को देखा जा रहा था। इस संदर्भ में, मॉरी के साथ मेरी मुलाक़ातें मानवीय दयालुता के एक शुद्धिकरण स्नान के समान थीं। हमने जीवन और प्रेम के बारे में बातें कीं। हमने मॉरी के पसंदीदा विषयों में से एक, करुणा, और हमारे समाज में इसकी इतनी कमी क्यों है, इस पर चर्चा की। अपनी तीसरी मुलाक़ात से पहले, मैं ब्रेड एंड सर्कस नामक एक बाज़ार में रुका—मैंने मॉरी के घर में उनके बैग देखे थे और सोचा था कि उन्हें वहाँ का खाना पसंद होगा—और मैंने उनके ताज़ा खाने के पैकेट प्लास्टिक के डिब्बों में भर लिए, जैसे कि सब्ज़ियों के साथ वर्मीसेली, गाजर का सूप और बकलावा।
जब मैं मॉरी के स्टडी रूम में दाखिल हुआ, तो मैंने बैग ऐसे उठाए जैसे मैंने अभी-अभी कोई बैंक लूटा हो।
“खाना चाहिए!” मैंने जोर से कहा।
मॉरी ने आंखें घुमाईं और मुस्कुराया।
इस बीच, मैं बीमारी की प्रगति के संकेतों की तलाश कर रहा था। उनकी उंगलियां पेंसिल से लिखने या चश्मा पकड़ने लायक तो काम करती थीं, लेकिन वे अपने हाथों को अपनी छाती से ऊपर नहीं उठा पाते थे। वे रसोई या बैठक में कम से कम समय बिताने लगे थे और अपने अध्ययन कक्ष में अधिक समय बिताने लगे थे, जहां उन्होंने तकियों, कंबलों और विशेष रूप से कटे हुए फोम रबर के टुकड़ों से सजी

एक बड़ी आरामदायक कुर्सी रखी थी, जो उनके पैरों को सहारा देती थी और उनकी कमजोर टांगों को सहारा प्रदान करती थी। उन्होंने अपने पास एक घंटी रखी हुई थी, और जब उनके सिर को ठीक करने की आवश्यकता होती थी या उन्हें शौच करने जाना होता था, जैसा कि वे इसे कहते थे, तो वे घंटी बजाते थे और कॉनी, टोनी, बर्था या एमी - उनकी देखभाल करने वाली छोटी सी टीम - अंदर आ जाती थी। उनके लिए घंटी बजाना हमेशा आसान नहीं होता था, और जब वह इसे बजा नहीं पाते थे तो वे निराश हो जाते थे।
मैंने मॉरी से पूछा कि क्या उसे खुद पर तरस आता है।
“कभी-कभी, सुबह के समय,” उन्होंने कहा। “मैं शोक मनाता हूँ। मैं अपने शरीर को टटोलता हूँ, अपनी उंगलियों और हाथों को हिलाता हूँ—जो कुछ भी मैं हिला सकता हूँ—और जो कुछ मैंने खोया है, उसका शोक मनाता हूँ। मैं उस धीमी, कपटी मौत का शोक मनाता हूँ जिससे मैं मर रहा हूँ। लेकिन फिर मैं शोक करना बंद कर देता हूँ।”
ऐसे ही?
“अगर मुझे ज़रूरत हो तो मैं जी भर के रो लेती हूँ। लेकिन फिर मैं अपने जीवन में बची हुई सभी अच्छी चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करती हूँ। उन लोगों पर जो मुझसे मिलने आ रहे हैं। उन कहानियों पर जो मैं सुनने वाली हूँ। और आप पर—अगर आज मंगलवार है। क्योंकि हम मंगलवार वाले लोग हैं।”
मैं मुस्कुराया। मंगलवार है दोस्तों। "मिच, मैं खुद को इससे ज़्यादा आत्म-दया करने की इजाज़त नहीं देता। हर सुबह थोड़ा-थोड़ा, कुछ आँसू, बस इतना ही।" मैंने अपने उन सभी परिचितों के बारे में सोचा जो अपने जागने का अधिकांश समय खुद पर तरस खाने में बिताते थे। आत्म-दया पर प्रतिदिन एक सीमा लगाना कितना उपयोगी होगा। बस कुछ मिनटों के लिए आंसू बहाना, फिर दिन के काम में लग जाना। और अगर मॉरी इतनी भयानक बीमारी के बावजूद ऐसा कर सकता था...
“अगर आप इसे इस नज़रिए से देखें तो यह वाकई भयानक है,” मॉरी ने कहा। “अपने शरीर को धीरे-धीरे खत्म होते देखना भयानक है। लेकिन साथ ही यह अद्भुत भी है क्योंकि मुझे अलविदा कहने के लिए काफी समय मिल रहा है।”
वह मुस्कुराया। "हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता।"
मैंने उसे कुर्सी पर बैठे हुए देखा, वह न खड़ा हो पा रहा था, न नहा पा रहा था, न ही अपनी पैंट पहन पा रहा था। क्या वह भाग्यशाली था? क्या उसने सचमुच खुद को भाग्यशाली कहा?

एक ब्रेक के दौरान, जब मॉरी को बाथरूम जाना पड़ा, तो मैंने उसकी कुर्सी के पास रखे बोस्टन अखबार के पन्ने पलटे। उसमें एक खबर थी एक छोटे से लकड़ी के कस्बे के बारे में, जहाँ दो किशोरियों ने एक 73 वर्षीय व्यक्ति को, जिसने उनसे दोस्ती की थी, यातना देकर मार डाला, फिर उसके ट्रेलर वाले घर में पार्टी की और लाश को सबके सामने दिखाया। एक और खबर थी, एक सीधे-सादे आदमी के आगामी मुकदमे के बारे में, जिसने एक समलैंगिक व्यक्ति की हत्या कर दी थी, क्योंकि समलैंगिक व्यक्ति ने एक टीवी टॉक शो में जाकर कहा था कि वह उस पर फिदा है।
मैंने अखबार एक तरफ रख दिया। मॉरी हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए वापस अंदर आ गए और कॉनी उन्हें व्हीलचेयर से उठाकर रिक्लाइनर पर लिटाने लगी।
मैंने पूछा, "क्या आप चाहते हैं कि मैं ऐसा करूं?"
कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, और मुझे यह भी नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों कहा, लेकिन मॉरी ने कॉनी की ओर देखा और कहा, "क्या तुम उसे यह करना सिखा सकती हो?" “ज़रूर,” कॉनी ने कहा।
उसके निर्देशों का पालन करते हुए, मैं झुक गया, अपनी कोहनियों को मॉरी की बगलों के नीचे फंसाया और उसे अपनी ओर खींच लिया, मानो किसी भारी लट्ठे को नीचे से उठा रहा हो। फिर मैं सीधा खड़ा हो गया और उठते हुए उसे भी ऊपर उठा लिया। आम तौर पर, जब आप किसी को उठाते हैं, तो आप उम्मीद करते हैं कि उसकी बाहें आपकी पकड़ में कस जाएंगी, लेकिन मॉरी ऐसा नहीं कर सका। वह लगभग बेजान था, और मैंने महसूस किया कि उसका सिर मेरे कंधे पर धीरे से उछल रहा था और उसका शरीर एक बड़ी गीली रोटी की तरह मेरे ऊपर लटक रहा था।
“आह्ह्ह्ह,” उसने धीरे से कराहते हुए कहा।
मैंने तुम्हें पकड़ लिया, मैंने तुम्हें पकड़ लिया, मैंने कहा।
उसे उस तरह से पकड़े रहने से मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता, सिवाय इसके कि मैंने उसके मुरझाते शरीर के भीतर मृत्यु के बीज महसूस किए, और जब मैंने उसे उसकी कुर्सी पर लिटाया, तकियों पर उसका सिर ठीक किया, तो मुझे इस बात का गहरा अहसास हुआ कि हमारा समय समाप्त हो रहा है।
और मुझे कुछ करना ही था।

In 1978 we had to, we had started small and we wanted to grow our business but we didn't want to borrow any money or take on any partners. We had a dream that we could build a business that would last for generations. We had a vision of what we wanted to create, but we didn't have the money to do it. We had to bootstrap it. We had to start small and grow it slowly. We had to be patient. We had to be willing to work hard. We had to be willing to take risks. We had to be willing to fail. We had to be willing to learn from our mistakes. We had to be willing to keep going when things got tough. We had to be willing to never give up.

We started our business in a small garage. We had no money. We had no employees. We had no customers. We had no experience. We had no idea what we were doing. We had no plan. We had no strategy. We had no idea how we were going to succeed. We had no idea how we were going to survive. We had no idea how we were going to make it.

We made mistakes. We failed. We learned. We grew. We changed. We adapted. We overcame. We persevered. We never gave up. We never stopped believing in ourselves. We never stopped believing in our dream. We never stopped believing in our vision. We never stopped believing in our mission. We never stopped believing in our values. We never stopped believing in our purpose. We never stopped believing in our passion. We never stopped believing in our people. We never stopped believing in our customers. We never stopped believing in our community. We never stopped believing in our world. We never stopped believing in our future. We never stopped believing in our success.

We are proud of what we have built. We are proud of the company we have created. We are proud of the people we have become. We are proud of the lives we have changed. We are proud of the difference we have made. We are proud of the legacy we have left. We are proud of the story we have told. We are proud of the journey we have taken. We are proud of the adventure we have had. We are proud of the life we have lived. We are proud of the person we have been. We are proud of the person we are. We are proud of the person we will be.

"Wow!" he exclaimed excitedly. "That was really cool!"

She was very impressed.

"Yeah," he agreed. "I think, "I think I'm going to go back and do it again. I'm going to go back and do it again. I'm going to go back and do it again.

तीसरे मंगलवार को हम पछतावे के बारे में बात करते हैं

अगले मंगलवार को, मैं खाने के सामान्य बैग लेकर पहुंचा—जिसमें कॉर्न के साथ पास्ता, आलू का सलाद, एप्पल कोबलर शामिल था—और साथ में एक और चीज: एक सोनी टेप रिकॉर्डर।
मैंने मॉरी से कहा, "मैं हमारी बातचीत को याद रखना चाहती हूँ। मैं तुम्हारी आवाज़ अपने पास रखना चाहती हूँ ताकि बाद में उसे सुन सकूँ..."
"जब मैं मर जाऊँगा।"
ऐसा मत कहो।
वह हँसा। “मिच, मैं मरने वाला हूँ। और जल्द ही, देर से नहीं।”
उन्होंने नई मशीन को गौर से देखा। “कितनी बड़ी है!” उन्होंने कहा। पत्रकारों की तरह मुझे भी असहज महसूस हुआ और मुझे लगने लगा कि दो कथित मित्रों के बीच एक टेप मशीन एक अजीब सी चीज़ है, एक बनावटी कान। इतने सारे लोग उनका समय पाने के लिए बेताब थे, शायद मैं इन मंगलवारों से कुछ ज़्यादा ही मतलब निकालने की कोशिश कर रहा था।
सुनो, मैंने रिकॉर्डर उठाते हुए कहा। हमें इसका इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं है। अगर इससे तुम्हें असहजता होती है तो—
उसने मुझे रोका, उंगली हिलाई, फिर अपने चश्मे को नाक से उतारकर गले में लटकी डोरी पर छोड़ दिया। उसने मेरी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, "इसे नीचे रख दो।"
मैंने इसे नीचे रख दिया।
“मिच,” उसने अब धीमी आवाज़ में कहा, “तुम समझते नहीं हो। मैं तुम्हें अपने जीवन के बारे में बताना चाहता हूँ। मैं तुम्हें यह सब तब बताना चाहता हूँ जब मैं तुम्हें और कुछ बता न सकूँ।”
उसकी आवाज़ धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई। "मैं चाहता हूँ कि कोई मेरी कहानी सुने। क्या आप सुनेंगे?"
मेंने सिर हिलाया।
हम कुछ देर चुपचाप बैठे रहे।
“तो,” उसने कहा, “क्या यह चालू है?”

सच तो यह है कि वह टेप रिकॉर्डर महज़ पुरानी यादों से कहीं बढ़कर था। मैं मॉरी को खो रहा था, हम सब मॉरी को खो रहे थे—उनका परिवार, उनके दोस्त, उनके पूर्व छात्र, उनके साथी प्रोफेसर, उन राजनीतिक चर्चा समूहों के उनके मित्र जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे, उनके पुराने डांस पार्टनर, हम सब। और मुझे लगता है कि टेप, तस्वीरों और वीडियो की तरह, मौत के पिटारे से कुछ चुराने की एक बेताब कोशिश है।
लेकिन उनके साहस, हास्यबोध, धैर्य और खुलेपन से मुझे यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि मॉरी जीवन को उन सभी लोगों से बिल्कुल अलग नज़रिए से देख रहे थे जिन्हें मैं जानता था। एक स्वस्थ नज़रिए से। एक अधिक समझदारी भरे नज़रिए से। और वे मृत्यु के कगार पर थे।
अगर मौत को करीब से देखने पर मन में कोई रहस्यमयी स्पष्टता आती थी, तो मैं समझ जाती थी कि मॉरी उसे साझा करना चाहता था। और मैं उसे यथासंभव लंबे समय तक याद रखना चाहती थी।
जब मैंने पहली बार मॉरी को "नाइटलाइन" पर देखा, तो मेरे मन में यह सवाल आया कि जब उन्हें अपनी मृत्यु का पता चला, तो उन्हें किन बातों का पछतावा हुआ होगा। क्या उन्हें अपने बिछड़े दोस्तों का दुख था? क्या उन्होंने कुछ अलग किया होता? स्वार्थवश, मैंने सोचा कि अगर मैं उनकी जगह होता, तो क्या मैं उन सभी बातों के दुख में डूबा रहता जो मैंने खो दीं? क्या मुझे उन रहस्यों का पछतावा होता जिन्हें मैंने छुपा कर रखा था?
जब मैंने मॉरी से इस बारे में बात की, तो उन्होंने सिर हिलाया। “यही तो हर किसी को परेशान करता है, है ना? अगर आज धरती पर मेरा आखिरी दिन हो तो क्या होगा?” उन्होंने मेरे चेहरे को गौर से देखा, और शायद उन्हें मेरे फैसलों को लेकर दुविधा नज़र आई। मेरे मन में यह तस्वीर थी कि एक दिन मैं अपनी डेस्क पर कहानी लिखते-लिखते गिर पड़ूँ, और मेरे संपादक मेरी कॉपी छीन लें, जबकि डॉक्टर मेरा शरीर ले जा रहे हों।
“मिच?” मॉरी ने कहा।
मैंने सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा। लेकिन मॉरी ने मेरी झिझक को भांप लिया। “मिच,” उन्होंने कहा, “हमारी संस्कृति हमें मरने से पहले ऐसी बातों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती। हम स्वार्थी चीजों में इतने उलझे रहते हैं - करियर, परिवार, पर्याप्त धन, घर का लोन चुकाना, नई कार खरीदना, रेडिएटर खराब होने पर उसे ठीक करवाना - हम बस चलते रहने के लिए अरबों छोटे- छोटे कामों में लगे रहते हैं। इसलिए हमें पीछे मुड़कर अपने जीवन को देखने और

यह सोचने की आदत नहीं पड़ती कि क्या यही सब कुछ है? क्या यही मेरी चाहत है? क्या कुछ कमी तो नहीं है?”
वह रुका।
“आपको उस दिशा में प्रेरित करने के लिए किसी की जरूरत होगी। यह अपने आप नहीं होगा।”
मुझे समझ आ गया कि वह क्या कह रहा था। हम सभी को अपने जीवन में शिक्षकों की आवश्यकता होती है।
और मेरा वाला मेरे सामने बैठा था।
ठीक है, मैंने सोचा। अगर मुझे छात्र बनना ही है, तो मैं अपनी पूरी क्षमता से एक अच्छा छात्र बनने की कोशिश करूंगा।
उस दिन घर लौटते समय हवाई जहाज में मैंने एक पीले रंग के पैड पर कुछ मुद्दों और सवालों की एक छोटी सी सूची बनाई, जिनसे हम सभी जूझते हैं, खुशी से लेकर बुढ़ापे तक, बच्चे पैदा करने से लेकर मृत्यु तक। बेशक, इन विषयों पर लाखों स्व-सहायता पुस्तकें थीं, ढेरों केबल टीवी शो थे, और 90 डॉलर प्रति घंटे के परामर्श सत्र भी थे। अमेरिका स्व-सहायता का एक बाज़ार बन गया था।
लेकिन फिर भी कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिला। क्या आप दूसरों की देखभाल करते हैं या अपने "भीतरी बच्चे" की? पारंपरिक मूल्यों की ओर लौटते हैं या परंपरा को बेकार समझकर नकार देते हैं? सफलता की तलाश करते हैं या सादगी की? बस ना कह देते हैं या बस कर देते हैं?
मुझे बस इतना पता था: मेरे पुराने प्रोफेसर मॉरी, आत्म-सहायता के धंधे में नहीं थे। वे पटरियों पर खड़े होकर मृत्यु की सीटी सुन रहे थे, और जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में वे बिल्कुल स्पष्ट थे।
मुझे वो स्पष्टता चाहिए थी। मेरे जानने वाले हर भ्रमित और पीड़ित व्यक्ति को वो स्पष्टता चाहिए थी।
“मुझसे कुछ भी पूछो,” मॉरी हमेशा कहते थे।
इसलिए मैंने यह सूची बनाई: मृत्यु
भय
बुढ़ापा
लालच
विवाह
परिवार
समाज

□□□□□

□□ □□□□□□ □□□□

□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

□□□? □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□?

“□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□?” □□ □□□□□ □□□

□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□, □□□□ □□ □□□□, □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□

□□, □□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□ 112 □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□, □□□□□□, □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□

“□□□□ □□,” □□□□ □□□□ □□□□

□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□, □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□

*“[illegible] [illegible] [illegible], [illegible],” [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ऑडियोविजुअल, भाग दो
“नाइटलाइन” शो ने मॉरी पर एक फॉलो-अप स्टोरी की थी—आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि पहले शो को बहुत अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। इस बार, जब कैमरामैन और प्रोड्यूसर अंदर आए, तो उन्हें लगा जैसे वे परिवार का हिस्सा हों। और कोप्पेल खुद भी पहले से ज़्यादा मिलनसार थे। कोई औपचारिक बातचीत नहीं हुई, इंटरव्यू से पहले कोई बातचीत नहीं हुई। माहौल बनाने के लिए, कोप्पेल और मॉरी ने अपने बचपन के किस्से सुनाए: कोप्पेल ने इंग्लैंड में पले-बढ़े होने के बारे में बताया, और मॉरी ने ब्रोंक्स में पले-बढ़े होने के बारे में। मॉरी ने नीली लंबी आस्तीन वाली शर्ट पहनी हुई थी—उन्हें लगभग हमेशा ठंड लगती थी, चाहे बाहर का तापमान 90 डिग्री ही क्यों न हो—लेकिन कोप्पेल ने अपनी जैकेट उतार दी और शर्ट और टाई में ही इंटरव्यू दिया। ऐसा लग रहा था मानो मॉरी उन्हें धीरे-धीरे परख रहे हों।
जब रिकॉर्डिंग शुरू हुई तो कोप्पेल ने कहा, "आप ठीक दिख रहे हैं।"
“मुझे सब यही कहते हैं,” मॉरी ने कहा।
आप ठीक लग रहे हैं।
"मुझे सब लोग यही कहते हैं।"
"तो आपको कैसे पता चलता है कि हालात बिगड़ रहे हैं?"
मॉरी ने आह भरी। “यह बात मेरे सिवा कोई नहीं जान सकता, टेड। लेकिन मैं जानता हूँ।”
और जैसे-जैसे वह बोलता गया, यह स्पष्ट होता गया। वह अपनी बात समझाने के लिए उतने सहजता से हाथ नहीं हिला रहा था जितना उसने पहली बातचीत में किया था। उसे कुछ शब्दों के उच्चारण में कठिनाई हो रही थी—लव ध्वनि उसके गले में अटकती हुई प्रतीत हो रही थी। कुछ ही महीनों में, हो सकता है कि वह बिल्कुल भी न बोल पाए।
“मेरी भावनाएं कुछ इस तरह होती हैं,” मॉरी ने कोप्पेल से कहा। “जब मेरे आस-पास लोग और दोस्त होते हैं, तो मैं बहुत खुश होता हूँ। प्यार भरे रिश्ते ही मुझे ऊर्जा देते हैं।”
“लेकिन कभी-कभी मैं उदास हो जाती हूँ। मैं आपको धोखा नहीं देना चाहती। मैं कुछ चीज़ें होते हुए देखती हूँ और मुझे डर लगने लगता है। मैं अपने हाथों के बिना क्या करूँगी? जब मैं बोल नहीं पाऊँगी तो क्या होगा? निगलने की मुझे इतनी

परवाह नहीं है—तो वे मुझे ट्यूब से खाना खिलाते हैं, तो क्या हुआ? लेकिन मेरी आवाज़? मेरे हाथ? वे मेरे लिए बहुत ज़रूरी हैं। मैं अपनी आवाज़ से बोलती हूँ। मैं अपने हाथों से इशारे करती हूँ। इसी तरह मैं लोगों को कुछ देती हूँ।” कोप्पेल ने पूछा, "जब आप बोल ही नहीं पाएंगे तो आप कैसे दान देंगे?"
मॉरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद मैं सभी से हां या ना वाले सवाल पूछवाऊंगा।"
यह इतना सरल उत्तर था कि कोप्पेल मुस्कुराए बिना नहीं रह सके। उन्होंने मॉरी से मौन के बारे में पूछा। मॉरी ने अपने एक प्रिय मित्र, मॉरी स्टीन का ज़िक्र किया, जिन्होंने सबसे पहले मॉरी के सूक्ति वाक्य बोस्टन ग्लोब को भेजे थे। वे साठ के दशक की शुरुआत से ही ब्रैंडिस में साथ थे। अब स्टीन बहरे हो रहे थे। कोप्पेल ने कल्पना की कि एक दिन वे दोनों साथ होंगे, एक बोल नहीं पाएगा, दूसरा सुन नहीं पाएगा। यह कैसा अनुभव होगा?
“हम हाथ थामेंगे,” मॉरी ने कहा। “और हमारे बीच बहुत सारा प्यार बरसेगा। टेड, हमारी दोस्ती को पैंतीस साल हो गए हैं। इसे महसूस करने के लिए बोलने या सुनने की ज़रूरत नहीं है।”
शो खत्म होने से पहले, मॉरी ने कोप्पेल को उनके द्वारा प्राप्त पत्रों में से एक पत्र पढ़कर सुनाया। पहले "नाइटलाइन" कार्यक्रम के बाद से काफी पत्र आए थे। एक विशेष पत्र पेंसिल्वेनिया की एक स्कूल शिक्षिका से आया था, जो नौ बच्चों की एक विशेष कक्षा को पढ़ाती थीं; कक्षा के प्रत्येक बच्चे ने अपने माता-पिता में से किसी एक को खो दिया था।
“मैंने उसे ये जवाब भेजा था,” मॉरी ने कोप्पेल से कहा, और अपने चश्मे को नाक और कानों पर सावधानी से टिकाया। “‘प्रिय बारबरा... तुम्हारे पत्र से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मुझे लगता है कि तुमने जिन बच्चों के माता-पिता का निधन हो गया है, उनके साथ जो काम किया है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। मैंने भी कम उम्र में अपने माता-पिता में से एक को खो दिया था...’”
अचानक, कैमरों की गूंज के बीच, मॉरी ने चश्मा ठीक किया। वह रुका, अपने होंठ दबाए और उसका गला भर आया। उसकी नाक से आंसू बहने लगे। “‘मैंने बचपन में अपनी माँ को खो दिया था... और यह मेरे लिए बहुत बड़ा सदमा था... काश मेरे पास भी आपके जैसा कोई समूह होता जहाँ मैं अपने दुखों के बारे में बात कर पाता। मैं आपके समूह में शामिल हो जाता क्योंकि...’”
उनकी आवाज लड़खड़ा गई।
“‘. . . क्योंकि मैं बहुत अकेला था...’”

“□□□□,” □□□□□□□ □□ □□□, “□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□?”
“□□□□□□□,” □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□

प्रोफेसर

वह आठ साल का था। अस्पताल से एक टेलीग्राम आया, और चूंकि उसके पिता, जो एक रूसी अप्रवासी थे, अंग्रेजी नहीं पढ़ सकते थे, इसलिए मॉरी को ही यह खबर देनी पड़ी। उसने अपनी माँ की मृत्यु की सूचना को कक्षा के सामने एक छात्र की तरह पढ़ा। "हमें आपको यह सूचित करते हुए खेद है..." उसने शुरू किया।
अंतिम संस्कार की सुबह, मॉरी के रिश्तेदार मैनहट्टन के गरीब लोअर ईस्ट साइड में स्थित उनके किराए के मकान की सीढ़ियों से नीचे उतरे। पुरुषों ने गहरे रंग के सूट पहने थे, महिलाओं ने घूंघट ओढ़ा हुआ था। पड़ोस के बच्चे स्कूल जा रहे थे, और जब वे वहाँ से गुज़रे, तो मॉरी ने शर्म से अपना चेहरा नीचे कर लिया कि उसके सहपाठी उसे इस हालत में देखेंगे। उसकी एक चाची, जो थोड़ी भारी-भरकम थीं, ने मॉरी को पकड़ लिया और रोने लगीं: “तुम अपनी माँ के बिना क्या करोगे? तुम्हारा क्या होगा?”
मॉरी फूट-फूटकर रोने लगा। उसके सहपाठी भाग गए।
कब्रिस्तान में, मॉरी ने देखा कि लोग उसकी माँ की कब्र में मिट्टी डाल रहे थे। उसने उन प्यारे पलों को याद करने की कोशिश की जो उन्होंने उसके जीवित रहते साथ बिताए थे। उसकी माँ एक मिठाई की दुकान चलाती थी, जब तक कि वह बीमार नहीं पड़ गई। बीमार पड़ने के बाद, वह ज़्यादातर सोती रहती थी या खिड़की के पास बैठी रहती थी, कमज़ोर और दुर्बल दिखती थी। कभी-कभी वह अपने बेटे को दवा लाने के लिए पुकारती थी, और छोटा मॉरी, जो गली में स्टिकबॉल खेल रहा होता था, ऐसा दिखावा करता था कि उसने उसकी आवाज़ नहीं सुनी। उसके मन में यह विश्वास था कि वह बीमारी को नज़रअंदाज़ करके उसे दूर कर सकता है।
एक बच्चा मौत का सामना और कैसे कर सकता है?
मॉरी के पिता, जिन्हें सब चार्ली कहते थे, रूसी सेना से बचने के लिए अमेरिका आए थे। वे फर के कारोबार में काम करते थे, लेकिन अक्सर बेरोजगार रहते थे। अशिक्षित और मुश्किल से अंग्रेजी बोल पाने वाले वे बेहद गरीब थे, और उनका परिवार ज्यादातर समय सरकारी सहायता पर निर्भर रहता था। उनका अपार्टमेंट एक मिठाई की दुकान के पीछे एक अंधेरा, तंग और निराशाजनक जगह थी। उनके पास कोई सुख-सुविधा नहीं थी। कोई कार नहीं थी। कभी-कभी, पैसे कमाने के लिए, मॉरी और उसका छोटा भाई डेविड, एक साथ बरामदे की सीढ़ियाँ धोकर पाँच सेंट कमाते थे।

माँ की मृत्यु के बाद, दोनों लड़कों को कनेक्टिकट के जंगलों में स्थित एक छोटे से होटल में भेज दिया गया, जहाँ कई परिवार एक बड़े केबिन और एक साझा रसोईघर में रहते थे। रिश्तेदारों को लगा कि ताज़ी हवा बच्चों के लिए अच्छी होगी। मॉरी और डेविड ने पहले कभी इतनी हरियाली नहीं देखी थी, और वे खेतों में दौड़ते-भागते और खेलते रहे। एक रात खाना खाने के बाद, वे टहलने निकले और बारिश शुरू हो गई। अंदर आने के बजाय, वे घंटों तक पानी में खेलते रहे।
अगली सुबह जब वे जागे, तो मॉरी बिस्तर से कूदकर बाहर आ गया।
“चलो,” उसने अपने भाई से कहा। “उठो।”
"मैं नहीं कर सकता।"
"आपका क्या मतलब है?"
डेविड के चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी। "मैं हिल नहीं सकता..."
उन्हें पोलियो था।
बेशक, बारिश इसकी वजह नहीं थी। लेकिन मॉरी की उम्र का बच्चा यह बात समझ नहीं सकता था। लंबे समय तक—जब उसके भाई को बार-बार एक विशेष चिकित्सा केंद्र में ले जाया जाता था और उसके पैरों में ब्रेसिज़ पहनने पड़ते थे, जिससे वह लंगड़ाकर चलता था—मॉरी खुद को इसके लिए ज़िम्मेदार महसूस करता रहा।
इसलिए सुबह-सुबह वह अकेले ही आराधनालय जाता था—क्योंकि उसके पिता धार्मिक व्यक्ति नहीं थे—और वह लंबे काले कोट पहने झूमते हुए पुरुषों के बीच खड़ा होकर ईश्वर से अपनी मृत माँ और बीमार भाई की देखभाल करने की प्रार्थना करता था।
और दोपहर के समय, वह मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियों के नीचे खड़ा होकर पत्रिकाएँ बेचता था और जो भी पैसे कमाता था, वह अपने परिवार को भोजन खरीदने के लिए दे देता था।
शाम के समय, वह चुपचाप अपने पिता को खाते हुए देखता था, स्नेह, संवाद या गर्मजोशी की उम्मीद में, लेकिन उसे कभी वह नहीं मिलता था।
नौ साल की उम्र में, उसे ऐसा महसूस होता था मानो उसके कंधों पर पहाड़ का बोझ हो।
लेकिन अगले साल मॉरी के जीवन में एक नई सौतेली माँ, ईवा, आई। वह कद में छोटी, सादे चेहरे वाली, घुंघराले भूरे बालों वाली रोमानियाई अप्रवासी थीं, जिनमें दो महिलाओं जितनी ऊर्जा थी। उनके चेहरे पर एक ऐसी चमक थी जो उनके पिता द्वारा बनाए गए उदास माहौल को रोशन कर देती थी। जब उनके नए पति चुप रहते थे, तब वह बोलती थीं, रात में बच्चों को गीत सुनाती थीं। मॉरी को उनकी मधुर आवाज़, उनके

द्वारा सिखाई गई शिक्षा और उनके मजबूत व्यक्तित्व से सुकून मिलता था। जब उनका भाई पोलियो के कारण अभी भी पैरों में ब्रेसिज़ पहने हुए अस्पताल से लौटा, तो दोनों ने अपने अपार्टमेंट की रसोई में एक फोल्डिंग बेड साझा किया, और ईवा उन्हें रात को सोने से पहले चूमती थीं। मॉरी उन चुम्बनों का इंतज़ार ऐसे करते थे जैसे कोई पिल्ला दूध का इंतज़ार करता है, और उन्हें अपने भीतर गहराई से महसूस हुआ कि उन्हें फिर से एक माँ मिल गई है।
लेकिन उनकी गरीबी से छुटकारा पाना नामुमकिन था। वे अब ब्रोंक्स में ट्रेमोंट एवेन्यू पर एक लाल ईंट की इमारत में एक कमरे के छोटे से अपार्टमेंट में रहते थे, जो एक इतालवी बीयर गार्डन के बगल में था जहाँ गर्मियों की शामों में बुजुर्ग लोग बोची खेलते थे। महामंदी के कारण, मॉरी के पिता को फर के कारोबार में और भी कम काम मिल रहा था। कभी-कभी जब परिवार खाने की मेज पर बैठता था, तो ईवा के पास परोसने के लिए केवल रोटी ही होती थी।
“और क्या है?” डेविड पूछता था।
“और कुछ नहीं,” वह जवाब देती।
जब वह मॉरी और डेविड को बिस्तर पर सुलाती, तो उन्हें येदिश भाषा में गीत सुनाती। उनके गीत भी उदास और साधारण होते थे। एक गीत एक लड़की के बारे में था जो अपनी सिगरेट बेचने की कोशिश कर रही थी: कृपया मेरी सिगरेट खरीद लें। ये सूखी हैं, बारिश से भीगी नहीं हैं। मुझ पर दया करें, मुझ पर दया करें।
फिर भी, अपनी परिस्थितियों के बावजूद, मॉरी को प्यार करना, देखभाल करना और सीखना सिखाया गया था। ईवा स्कूल में उत्कृष्टता से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करती थी, क्योंकि वह शिक्षा को अपनी गरीबी का एकमात्र इलाज मानती थी। वह खुद अंग्रेजी सुधारने के लिए रात्रि विद्यालय जाती थी। मॉरी का शिक्षा के प्रति प्रेम उसी की गोद में पनपा था।
वह रात में रसोई की मेज पर रखे दीपक की रोशनी में पढ़ाई करता था। और सुबह वह आराधनालय जाकर अपनी माँ के लिए यिज़कोर (मृतकों के लिए प्रार्थना) करता था। वह ऐसा उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए करता था। हैरानी की बात यह है कि मॉरी को उसके पिता ने उसकी माँ के बारे में कभी बात न करने के लिए कहा था।
चार्ली चाहता था कि छोटा डेविड ईवा को अपनी असली माँ समझे।
यह मॉरी के लिए एक बहुत बड़ा बोझ था। कई वर्षों तक, मॉरी के पास अपनी माँ की एकमात्र निशानी उनकी मृत्यु की सूचना देने वाला टेलीग्राम ही था। उसने इसे उसी दिन छिपा दिया था जिस दिन यह आया था।
वह इसे जीवन भर अपने पास रखेगा।

जब मॉरी किशोर थे, तब उनके पिता उन्हें एक फर फैक्ट्री में ले गए जहाँ वे काम करते थे। यह महामंदी का दौर था। उनका मकसद मॉरी को नौकरी दिलाना था।
वह कारखाने में दाखिल हुआ और तुरंत ही उसे ऐसा लगा जैसे दीवारें उसके चारों ओर सिमट गई हों। कमरा अंधेरा और गर्म था, खिड़कियाँ गंदगी से ढकी थीं, और मशीनें एक-दूसरे से सटी हुई थीं, मानो ट्रेन के पहिए चल रहे हों। फर के रेशे उड़ रहे थे, जिससे हवा में घुटन पैदा हो रही थी, और मजदूर खालों को सिलते हुए अपनी सुइयों पर झुके हुए थे, जबकि मालिक पंक्तियों में इधर-उधर घूम रहा था और उन्हें तेज़ी से काम करने के लिए चिल्ला रहा था। मॉरी मुश्किल से साँस ले पा रहा था। वह अपने पिता के बगल में डर से जम कर खड़ा था, उम्मीद कर रहा था कि मालिक उस पर भी न चिल्लाए।
दोपहर के भोजन के अवकाश के दौरान, उसके पिता मॉरी को मालिक के पास ले गए और उसे उसके आगे खड़ा करके पूछा कि क्या उनके बेटे के लिए कोई काम है। लेकिन वयस्क मजदूरों के लिए भी मुश्किल से ही काम था, और कोई भी काम छोड़ने को तैयार नहीं था।
मॉरी के लिए यह एक वरदान था। उसे वह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसने एक और प्रतिज्ञा ली जिसे उसने जीवन भर निभाया: वह कभी भी ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे किसी और का शोषण हो, और वह कभी भी दूसरों की मेहनत से पैसा नहीं कमाएगा। "तुम क्या करोगे?" ईवा उससे पूछती।
“मुझे नहीं पता,” वह कहते थे। उन्होंने वकालत को इसलिए खारिज कर दिया क्योंकि उन्हें वकील पसंद नहीं थे, और उन्होंने चिकित्सा को भी इसलिए खारिज कर दिया क्योंकि वे खून देखकर घबरा जाते थे।
"क्या करेंगे आप?"
यह महज संयोगवश ही हुआ कि मेरे जीवन के सबसे अच्छे प्रोफेसर शिक्षक बन गए।

“एक शिक्षक का प्रभाव अनंत काल तक रहता है; वह कभी नहीं बता सकता कि उसका प्रभाव कहाँ समाप्त होता है।”

—हेनरी एडम्स

चौथे मंगलवार को हम मृत्यु के बारे में बात करेंगे “चलिए इस विचार से शुरुआत करते हैं,” मॉरी ने कहा। “हर कोई जानता है कि उसकी मृत्यु होने वाली है, लेकिन कोई इस पर विश्वास नहीं करता।”
मंगलवार को उनका मिजाज काफी गंभीर था। विषय था मृत्यु, जो मेरी प्राथमिकता सूची में सबसे पहला था। मेरे आने से पहले ही मॉरी ने छोटे-छोटे सफेद कागजों पर कुछ नोट्स लिख लिए थे ताकि वह भूल न जाएं। उनकी कांपती हुई लिखावट अब उनके सिवा किसी के लिए भी समझ से परे थी। लगभग मजदूर दिवस का समय था, और दफ्तर की खिड़की से मुझे पिछवाड़े की पालक के रंग की झाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं और गली में खेलते बच्चों की चीखें सुनाई दे रही थीं, स्कूल शुरू होने से पहले यह उनकी आज़ादी का आखिरी हफ्ता था।
डेट्रॉइट में, अख़बार हड़ताल पर बैठे लोग प्रबंधन के खिलाफ़ यूनियनों की एकजुटता दिखाने के लिए एक बड़े अवकाशकालीन प्रदर्शन की तैयारी कर रहे थे। हवाई जहाज़ में आते समय मैंने एक ऐसी महिला के बारे में पढ़ा जिसने सोते हुए अपने पति और दो बेटियों को गोली मार दी थी, यह दावा करते हुए कि वह उन्हें "बुरे लोगों" से बचा रही थी। कैलिफ़ोर्निया में, ओ. जे. सिम्पसन मुकदमे के वकील बड़े-बड़े सेलिब्रिटी बन रहे थे।
मॉरी के दफ्तर में, जीवन एक-एक दिन करके आगे बढ़ रहा था। अब हम साथ बैठे थे, घर में हाल ही में आई एक चीज़ से कुछ ही दूरी पर: एक ऑक्सीजन मशीन। यह छोटी और पोर्टेबल थी, लगभग घुटने तक ऊंची। कुछ रातों को, जब उन्हें सांस लेने में दिक्कत होती थी, तो मॉरी लंबी प्लास्टिक की नली को अपनी नाक से जोड़ लेते थे, जो उनकी नाक के नथुनों को जोंक की तरह जकड़ लेती थी। मुझे मॉरी को किसी भी तरह की मशीन से जुड़ा हुआ देखना बिल्कुल पसंद नहीं था, और मॉरी के बोलते समय मैंने उस नली की तरफ न देखने की कोशिश की।
उन्होंने फिर कहा, “सब जानते हैं कि उनकी मृत्यु होने वाली है, लेकिन कोई इस पर विश्वास नहीं करता। अगर हम करते, तो हम चीजें अलग तरह से करते।”
तो हम मौत के बारे में खुद को धोखा दे रहे हैं, मैंने कहा।
“हाँ। लेकिन इससे बेहतर तरीका भी है। यह जानना कि आपकी मृत्यु निश्चित है, और किसी भी समय इसके लिए तैयार रहना। यह बेहतर है। इस तरह आप जीते जी अपने जीवन में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।”
आप मृत्यु के लिए कभी तैयार कैसे हो सकते हैं?

“बौद्धों की तरह करो। हर दिन, अपने कंधे पर एक छोटी चिड़िया रखो जो पूछे, ‘क्या आज वो दिन है? क्या मैं तैयार हूँ? क्या मैं वो सब कर रहा हूँ जो मुझे करना चाहिए? क्या मैं वो इंसान बन रहा हूँ जो मैं बनना चाहता हूँ?’”
उसने अपना सिर कंधे की ओर इस तरह घुमाया मानो पक्षी अभी वहीं मौजूद हो।
“क्या आज मेरी मृत्यु का दिन है?” उसने कहा।
मॉरी ने सभी धर्मों से खुलकर प्रेरणा ली। उनका जन्म यहूदी परिवार में हुआ था, लेकिन किशोरावस्था में वे अज्ञेयवादी बन गए, जिसका एक कारण बचपन में उनके साथ घटी घटनाएँ थीं। उन्हें बौद्ध धर्म और ईसाई धर्म के कुछ दर्शन पसंद थे, और यहूदी धर्म में वे सांस्कृतिक रूप से सहज महसूस करते थे। वे एक मिश्रित धार्मिक व्यक्तित्व थे, जिसने उन्हें वर्षों तक अपने छात्रों को पढ़ाने में और भी अधिक सहज बना दिया। और धरती पर अपने अंतिम महीनों में उन्होंने जो बातें कहीं, वे सभी धार्मिक मतभेदों से परे प्रतीत होती थीं। मृत्यु का अपना एक अलग ही प्रभाव होता है।
“सच तो यह है, मिच,” उसने कहा, “एक बार जब आप मरना सीख जाते हैं, तो आप जीना भी सीख जाते हैं।”
मेंने सिर हिलाया।
“मैं फिर से कह रहा हूँ,” उन्होंने कहा। “एक बार जब आप मरना सीख जाते हैं, तो आप जीना सीख जाते हैं।” वे मुस्कुराए, और मुझे समझ आ गया कि वे क्या कर रहे थे। वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि मैं इस बात को समझ जाऊँ, बिना मुझसे सवाल पूछे मुझे शर्मिंदा किए। यही बात उन्हें एक अच्छा शिक्षक बनाती थी।
मैंने पूछा, क्या बीमार पड़ने से पहले आपने मृत्यु के बारे में बहुत सोचा था? “नहीं।” मॉरी मुस्कुराया। “मैं भी बाकी सब लोगों जैसा ही था। एक बार मैंने उत्साह में आकर अपने एक दोस्त से कहा था, ‘मैं अब तक का सबसे स्वस्थ बूढ़ा आदमी बनूंगा!’”
आप कितने साल के थे?
"मैं साठ वर्ष का हो चुका हूँ।"
तो आप आशावादी थे।
“क्यों नहीं? जैसा कि मैंने कहा, कोई भी वास्तव में यह नहीं मानता कि उसकी मृत्यु होने वाली है।”
लेकिन मैंने कहा, हर कोई किसी न किसी ऐसे व्यक्ति को जानता है जिसकी मृत्यु हो चुकी है। मरने के बारे में सोचना इतना मुश्किल क्यों है?

“क्योंकि,” मॉरी ने आगे कहा, “हममें से अधिकतर लोग ऐसे चलते हैं जैसे नींद में चल रहे हों। हम वास्तव में दुनिया का पूरी तरह से अनुभव नहीं कर पाते, क्योंकि हम आधे सोए हुए होते हैं और वे काम करते हैं जो हमें लगता है कि हमें करने ही हैं।”
और मृत्यु का सामना करने से सब कुछ बदल जाता है?
“ओह, बिल्कुल। आप उन सभी फालतू चीजों को हटा देते हैं और आवश्यक चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जब आपको एहसास होता है कि आप मरने वाले हैं, तो आप हर चीज को बहुत अलग तरीके से देखते हैं।”
उन्होंने आह भरी। "मरना सीखो, और तुम जीना सीख जाओगे।"
मैंने देखा कि अब हाथ हिलाते समय वह कांप रहा था। उसका चश्मा गले में लटका हुआ था, और जब उसने उसे आँखों पर लगाया, तो वह कनपटी से फिसल गया, मानो वह अंधेरे में किसी और को चश्मा पहनाने की कोशिश कर रहा हो। मैंने हाथ बढ़ाकर उसे उसके कानों पर ठीक से लगाने में मदद की।
“धन्यवाद,” मॉरी ने धीरे से कहा। जब मेरा हाथ उनके सिर से छू गया तो वे मुस्कुराए। जरा सा भी मानवीय स्पर्श उन्हें तुरंत खुशी दे देता था।
“मिच। क्या मैं तुम्हें कुछ बता सकता हूँ?”
मैंने कहा, बिल्कुल।
आपको शायद यह पसंद न आए।
क्यों नहीं?
"सच तो यह है कि अगर आप अपने मन की बात सुनें, अगर आप यह स्वीकार कर लें कि आपकी मृत्यु कभी भी हो सकती है—तो शायद आप उतने महत्वाकांक्षी न हों जितने आप अभी हैं।"
मैंने जबरदस्ती हल्की सी मुस्कान दी।
“जिन चीजों पर आप इतना समय व्यतीत करते हैं—जो सारा काम आप करते हैं—शायद वे उतनी महत्वपूर्ण न लगें। आपको कुछ और आध्यात्मिक चीजों के लिए भी जगह बनानी पड़ सकती है।”
आध्यात्मिक बातें?
“तुम्हें यह शब्द नापसंद है, है ना? ‘आध्यात्मिक’। तुम्हें लगता है कि यह भावुकता से जुड़ी बात है।”
मैंने कहा, ठीक है।
उसने आँख मारने की कोशिश की, जो नाकाम रही, और मैं फूट-फूटकर हँस पड़ी।

“मिच,” वह हंसते हुए बोला, “मुझे भी ठीक से नहीं पता कि ‘आध्यात्मिक विकास’ का असली मतलब क्या है। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि हममें कहीं न कहीं कमी है। हम भौतिकवादी चीज़ों में बहुत ज़्यादा उलझे रहते हैं, और उनसे हमें संतुष्टि नहीं मिलती। हमारे प्रेमपूर्ण रिश्ते, हमारे आस-पास का ब्रह्मांड, इन सब चीज़ों को हम हल्के में लेते हैं।”
धूप से जगमगाती खिड़की की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, “देखा? तुम वहाँ कभी भी बाहर जा सकते हो। गली में इधर-उधर दौड़ सकते हो और खूब मस्ती कर सकते हो। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं बाहर नहीं जा सकता। मैं दौड़ नहीं सकता। बीमार पड़ने के डर के बिना मैं बाहर नहीं रह सकता। लेकिन जानते हो क्या? मैं उस खिड़की की अहमियत तुमसे कहीं ज़्यादा समझता हूँ।”
इसकी प्रशंसा करना?
“हाँ। मैं हर दिन उस खिड़की से बाहर देखता हूँ। मैं पेड़ों में आए बदलावों को, हवा की तेज़ गति को महसूस करता हूँ। ऐसा लगता है मानो मैं उस खिड़की के शीशे से समय को गुज़रते हुए देख रहा हूँ। क्योंकि मुझे पता है कि मेरा समय लगभग समाप्त हो चुका है, इसलिए मैं प्रकृति की ओर इस तरह खिंचा चला जाता हूँ जैसे उसे पहली बार देख रहा हूँ।”
वह रुक गया, और एक पल के लिए हम दोनों खिड़की से बाहर देखने लगे। मैंने वही देखने की कोशिश की जो वह देख रहा था। मैंने समय और ऋतुओं को देखने की कोशिश की, मेरा जीवन धीमी गति से गुजर रहा था। मॉरी ने अपना सिर थोड़ा झुकाया और उसे अपने कंधे की ओर मोड़ लिया।
“क्या आज है, नन्ही चिड़िया?” उसने पूछा। “क्या आज है?”
“नाइटलाइन” में उपस्थिति के कारण मॉरी को दुनिया भर से पत्र मिलते रहते थे। जब भी उनका मन करता, वे बैठकर अपने मित्रों और परिवारजनों को पत्र-लेखन सत्रों के लिए लिखे गए पत्रों के उत्तर लिखवाते थे।
एक रविवार जब उनके बेटे रॉब और जॉन घर पर थे, तो वे सभी बैठक कक्ष में इकट्ठा हुए। मॉरी अपनी व्हीलचेयर पर बैठे थे, उनकी पतली टांगें कंबल से ढकी हुई थीं।
जब उन्हें ठंड लगी, तो उनके एक सहायक ने उनके कंधों पर नायलॉन की जैकेट डाल दी।
“पहला अक्षर क्या है?” मॉरी ने कहा।
एक सहकर्मी ने नैन्सी नाम की एक महिला का पत्र पढ़ा, जिसने एएलएस के कारण अपनी माँ को खो दिया था। उसने लिखा था कि उसे इस क्षति से कितना दुख हुआ है और वह जानती है कि मॉरी भी इस पीड़ा से गुजर रहा होगा।

“ठीक है,” मॉरी ने पाठ समाप्त होने पर कहा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। “चलिए, शुरुआत इस तरह करते हैं, ‘प्रिय नैन्सी, आपकी माँ के बारे में आपकी कहानी ने मुझे बहुत प्रभावित किया। और मैं समझता हूँ कि आपने क्या सहा।
दोनों पक्षों में दुख और पीड़ा है। शोक करना मेरे लिए अच्छा रहा है, और मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए भी अच्छा रहा होगा।
“आप शायद आखिरी पंक्ति बदलना चाहेंगे,” रॉब ने कहा।
मॉरी ने एक पल सोचा, फिर कहा, "आप सही कह रहे हैं। कैसा रहेगा अगर हम कहें, 'मुझे उम्मीद है कि आप शोक में उपचार की शक्ति पा सकेंगे।' क्या यह बेहतर है?" रॉब ने सिर हिलाया।
“इसमें ‘धन्यवाद, मॉरी’ जोड़ दें,” मॉरी ने कहा।
जेन नाम की एक महिला का एक और पत्र पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने "नाइटलाइन" कार्यक्रम में उनके द्वारा दी गई प्रेरणा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया था। उन्होंने उन्हें पैगंबर बताया।
“यह तो बहुत बड़ी प्रशंसा है,” एक सहकर्मी ने कहा। “एक पैगंबर।”
मॉरी ने मुंह बनाया। जाहिर तौर पर वह इस आकलन से सहमत नहीं था। "चलिए, उसकी इतनी तारीफ के लिए उसे धन्यवाद दें। और उसे बताएं कि मुझे खुशी है कि मेरे शब्दों का उसके लिए कुछ मतलब निकला।"
और 'धन्यवाद, मॉरी' लिखना न भूलें।
इंग्लैंड के एक व्यक्ति का पत्र था, जिसकी माँ का देहांत हो गया था और उसने मॉरी से आध्यात्मिक जगत के माध्यम से उससे संपर्क करने में मदद मांगी थी। एक दंपति का पत्र था जो उससे मिलने के लिए बोस्टन जाना चाहते थे। एक पूर्व स्नातक छात्रा का लंबा पत्र था, जिसमें उसने विश्वविद्यालय के बाद के अपने जीवन के बारे में लिखा था। इसमें एक हत्या-आत्महत्या और तीन मृत शिशुओं के जन्म का वर्णन था। इसमें एक माँ की कहानी थी जिसकी मृत्यु एएलएस से हुई थी। इसमें इस बात का डर जताया गया था कि कहीं उसकी बेटी को भी यह बीमारी न हो जाए। यह सिलसिला चलता ही रहा। दो पन्ने। तीन पन्ने। चार पन्ने।
मॉरी लंबी और भयावह कहानी सुनता रहा। जब कहानी आखिरकार खत्म हुई, तो उसने धीरे से कहा, "अच्छा, अब हम क्या जवाब दें?"
समूह में सन्नाटा पसरा रहा। अंत में, रॉब ने कहा, "कैसा रहेगा अगर मैं कहूँ, 'आपके लंबे पत्र के लिए धन्यवाद?'"
सब लोग हंस पड़े। मॉरी ने अपने बेटे की तरफ देखा और मुस्कुरा उठा।

[illegible] [illegible] [illegible] [

पांचवें मंगलवार को हम परिवार के बारे में बात करेंगे

सितंबर का पहला हफ़्ता था, स्कूल खुलने का हफ़्ता, और लगातार पैंतीस पतझड़ों के बाद, मेरे पुराने प्रोफ़ेसर के पास कॉलेज कैंपस में कोई क्लास नहीं थी। बोस्टन छात्रों से भरा हुआ था, गलियों में गाड़ियाँ डबल-पार्क की हुई थीं, छात्र अपने सामान से ट्रंक खाली कर रहे थे। और यहाँ मॉरी अपने स्टडी रूम में बैठे थे। यह कुछ अजीब सा लग रहा था, उन फ़ुटबॉल खिलाड़ियों की तरह जो आखिरकार रिटायर हो जाते हैं और उन्हें घर पर पहला रविवार टीवी पर मैच देखते हुए बिताना पड़ता है, और वे सोचते हैं, मैं भी अभी ऐसा कर सकता हूँ। मैंने उन खिलाड़ियों के साथ काम करके सीखा है कि जब उनका पुराना सीज़न वापस आता है तो उन्हें अकेला छोड़ देना ही सबसे अच्छा होता है। कुछ मत कहो। लेकिन फिर, मुझे मॉरी को उनके घटते समय की याद दिलाने की ज़रूरत नहीं थी।
हमारी रिकॉर्ड की गई बातचीत के लिए, हमने हाथ में पकड़ने वाले माइक्रोफ़ोन की जगह टीवी पत्रकारों के बीच लोकप्रिय लैवेलियर माइक्रोफ़ोन का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था—क्योंकि मॉरी के लिए अब इतनी देर तक कुछ भी पकड़ना मुश्किल हो गया था। इन्हें कॉलर या लैपल पर क्लिप किया जा सकता है। ज़ाहिर है, मॉरी केवल मुलायम सूती कमीज़ें पहनते थे जो उनके लगातार दुबले होते शरीर पर ढीली- ढाली लटकती थीं, इसलिए माइक्रोफ़ोन लटकता और हिलता रहता था, और मुझे बार-बार झुककर उसे ठीक करना पड़ता था। मॉरी को यह अच्छा लगता था क्योंकि इससे मैं उनके करीब आ जाती थी, गले लगाने की दूरी पर, और उन्हें शारीरिक स्नेह की ज़रूरत पहले से कहीं ज़्यादा थी। जब मैं उनके पास झुकी, तो मैंने उनकी घरघराहट भरी साँसें और कमज़ोर खाँसी सुनी, और निगलने से पहले उन्होंने धीरे से अपने होंठ चटकाए।
“अच्छा, मेरे दोस्त,” उसने कहा, “आज हम किस बारे में बात कर रहे हैं?”
परिवार के बारे में क्या ख्याल है?
“परिवार।” उन्होंने कुछ देर सोचा। “ठीक है, आप मेरा परिवार देख ही लीजिए, मेरे चारों ओर।”
उन्होंने अपनी किताबों की अलमारी में रखी तस्वीरों की ओर इशारा किया, जिनमें मॉरी की बचपन की तस्वीरें उनकी दादी के साथ, युवावस्था में उनके भाई डेविड के

साथ, उनकी पत्नी शार्लोट के साथ, और उनके दो बेटों, टोक्यो में पत्रकार रॉब और बोस्टन में कंप्यूटर विशेषज्ञ जॉन के साथ थीं।
उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि पिछले कुछ हफ्तों से हम जिन बातों पर चर्चा कर रहे हैं, उनके आलोक में परिवार का महत्व और भी बढ़ जाता है।"
सच तो यह है कि आज परिवार के बिना लोगों के खड़े होने के लिए कोई आधार, कोई सुरक्षित ज़मीन नहीं है। बीमारी के दौरान यह बात मुझे पूरी तरह समझ आ गई। अगर आपको परिवार से मिलने वाला सहारा, प्यार, देखभाल और चिंता नहीं मिलती, तो आपके पास कुछ भी नहीं है। प्यार बेहद ज़रूरी है। जैसा कि हमारे महान कवि ऑडन ने कहा था, 'एक-दूसरे से प्यार करो, वरना तुम नष्ट हो जाओगे।'
“एक दूसरे से प्रेम करो, वरना विनाश हो जाएगा।” मैंने इसे लिख लिया। क्या ये ऑडेन ने कहा था?
“एक दूसरे से प्यार करो, वरना तुम नष्ट हो जाओगे,” मॉरी ने कहा। “यह अच्छी बात है, है ना? और यह बिल्कुल सच है। प्यार के बिना, हम टूटे पंखों वाले पक्षियों के समान हैं।”
“मान लीजिए कि मेरा तलाक हो गया है, या मैं अकेली रहती हूँ, या मेरे बच्चे नहीं हैं। यह बीमारी—जिससे मैं गुज़र रही हूँ—कहीं ज़्यादा मुश्किल होती। मुझे नहीं लगता कि मैं इसे सह पाती। हाँ, लोग मिलने आते, दोस्त, जान-पहचान वाले, लेकिन यह वैसा नहीं है जैसा किसी ऐसे व्यक्ति का साथ होना जो आपको छोड़कर न जाए। यह वैसा नहीं है जैसा किसी ऐसे व्यक्ति का साथ होना जिस पर आपको पता हो कि वह आप पर नज़र रख रहा है, हर समय आपको देख रहा है।”
“परिवार का मतलब सिर्फ प्यार ही नहीं होता, बल्कि दूसरों को यह एहसास दिलाना भी होता है कि कोई है जो उनकी परवाह करता है। माँ के निधन के बाद मुझे इसी चीज़ की सबसे ज़्यादा कमी खली—जिसे मैं ‘आध्यात्मिक सुरक्षा’ कहती हूँ—यह जानना कि आपका परिवार हमेशा आपकी देखभाल करेगा। इसके अलावा और कुछ भी आपको यह एहसास नहीं दे सकता। न पैसा, न शोहरत।”
उसने मुझे घूरकर देखा।
उन्होंने आगे कहा, "काम नहीं।"
परिवार बसाना मेरी उन छोटी-सी प्राथमिकताओं में से एक था—जिनमें से कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिन्हें समय रहते ठीक करना ज़रूरी होता है। मैंने मॉरी को बच्चों को लेकर अपनी पीढ़ी की दुविधा के बारे में बताया, कि कैसे हम अक्सर उन्हें बंधन का काम समझते हैं, हमें उन "अभिभावक" भूमिकाओं में बांध देते हैं जो हम बनना नहीं चाहते। मैंने खुद भी इनमें से कुछ भावनाओं को महसूस किया।

लेकिन जब मैंने मॉरी को देखा, तो मेरे मन में यह सवाल आया कि अगर मैं उसकी जगह होता, मरने वाला होता, और मेरा कोई परिवार नहीं होता, कोई बच्चे नहीं होते, तो क्या यह खालीपन असहनीय होता? उसने अपने दोनों बेटों को प्यार और देखभाल करना सिखाया था, और मॉरी की तरह वे भी अपना स्नेह दिखाने में संकोच नहीं करते थे। अगर वह चाहता, तो वे अपने पिता के आखिरी पलों में उनके साथ रहने के लिए अपना काम छोड़कर हर पल उनके साथ होते। लेकिन वह ऐसा नहीं चाहता था।
उन्होंने उनसे कहा, “अपनी जिंदगी मत रोको। अन्यथा, यह बीमारी हममें से एक की बजाय तीन को बर्बाद कर देगी।”
इस तरह, अपनी मृत्यु के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने अपने बच्चों की दुनिया के प्रति सम्मान दिखाया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि जब वे उनके साथ बैठे, तो स्नेह की बाढ़ सी आ गई, ढेर सारे चुंबन और चुटकुले, और वे बिस्तर के किनारे झुककर एक-दूसरे का हाथ थामे बैठ गए।
“जब भी लोग मुझसे बच्चे पैदा करने या न करने के बारे में पूछते हैं, तो मैं उन्हें कभी यह नहीं बताता कि उन्हें क्या करना चाहिए,” मॉरी ने अपने सबसे बड़े बेटे की तस्वीर देखते हुए कहा। “मैं बस इतना कहता हूँ, ‘बच्चे होने जैसा अनुभव कोई और नहीं।’ बस इतना ही। इसका कोई विकल्प नहीं है। आप इसे किसी दोस्त के साथ नहीं कर सकते। आप इसे किसी प्रेमी के साथ नहीं कर सकते। अगर आप किसी दूसरे इंसान की पूरी ज़िम्मेदारी उठाने का अनुभव चाहते हैं, और गहरे स्तर पर प्यार करना और रिश्ता बनाना सीखना चाहते हैं, तो आपको बच्चे पैदा करने चाहिए।”
तो क्या आप इसे दोबारा करेंगे? मैंने पूछा।
मैंने तस्वीर पर एक नजर डाली। रॉब मॉरी के माथे पर चुंबन कर रहा था, और मॉरी आंखें बंद करके हंस रहा था।
“क्या मैं इसे दोबारा करूंगा?” उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखते हुए कहा। “मिच, मैं उस अनुभव को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहता था। भले ही...”
उसने घबराकर तस्वीर को अपनी गोद में रख लिया।
उन्होंने कहा, "भले ही इसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़े।"
क्योंकि आप उन्हें छोड़कर जा रहे होंगे।
क्योंकि मैं जल्द ही उन्हें छोड़कर जा रहा हूँ।
उसने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए, अपनी आँखें बंद कर लीं, और मैंने उसकी गाल पर पहला आंसू गिरते हुए देखा।
“और अब,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “तुम बोलो।”
मुझे?

“आपका परिवार। मैं आपके माता-पिता के बारे में जानता हूँ। मैं उनसे कई साल पहले ग्रेजुएशन समारोह में मिला था। आपकी एक बहन भी है, है ना?”
हां, मैंने कहा।
“उम्रदराज, है ना?”
अधिक उम्र का।
और एक भाई, है ना?
मेंने सिर हिलाया।
"छोटा?"
छोटा।
“मेरी तरह,” मॉरी ने कहा। “मेरा एक छोटा भाई है।”
मैंने कहा, तुम्हारी तरह।
“वह आपके ग्रेजुएशन समारोह में भी आए थे, है ना?”
मैंने पलकें झपकाईं और मेरे मन में सोलह साल पहले हम सभी की छवि उभर आई, तेज धूप, नीले वस्त्र, एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर इंस्टामेटिक फोटो खिंचवाते हुए हमारी आंखें सिकुड़ रही थीं, और कोई कह रहा था, "एक, दो, तीन..."
“क्या बात है?” मेरी अचानक चुप्पी देखकर मॉरी ने कहा। “तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?”
मैंने विषय बदलते हुए कहा, "कुछ नहीं।"
सच तो यह है कि मेरा एक भाई है, सुनहरे बालों वाला, भूरी आँखों वाला, मुझसे दो साल छोटा भाई, जो दिखने में मुझसे और मेरी काले बालों वाली बहन से इतना अलग है कि हम उसे चिढ़ाने के लिए कहते थे कि अजनबी उसे बचपन में हमारे दरवाजे पर छोड़कर चले गए थे। और एक दिन, हम कहते थे, "वे तुम्हें लेने वापस आएंगे।" यह सुनकर वह रोने लगता था, लेकिन हम फिर भी यही कहते थे।
वह कई छोटे बच्चों की तरह ही पला-बढ़ा, लाड़-प्यार से बड़ा हुआ, दुलार पाया और अंदर ही अंदर परेशान रहा। वह अभिनेता या गायक बनने का सपना देखता था; वह खाने की मेज पर टीवी शो की नकल करता था, हर किरदार निभाता था, उसकी प्यारी मुस्कान उसके होठों से छलकती रहती थी। मैं अच्छा छात्र था, वह बुरा; मैं आज्ञाकारी था, वह नियम तोड़ता था; मैं नशे और शराब से दूर रहता था, वह हर तरह का नशा करता था। हाई स्कूल के कुछ समय बाद ही वह यूरोप चला गया, क्योंकि उसे वहाँ की अधिक सहज जीवनशैली पसंद आई। फिर भी वह परिवार का चहेता बना रहा। जब वह घर आता था, तो उसकी बेबाक और मजाकिया मौजूदगी में मैं अक्सर खुद को सख्त और रूढ़िवादी महसूस करता था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“[illegible]!” [illegible]

[illegible]

[illegible]

छठे मंगलवार को हम भावनाओं के बारे में बात करेंगे

मैं पहाड़ी लॉरेल और जापानी मेपल के पेड़ों के पास से गुज़रते हुए मॉरी के घर की नीले पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़ गया। सफेद रंग की नाली दरवाजे के ऊपर ढक्कन की तरह लटकी हुई थी। मैंने घंटी बजाई और मेरा स्वागत कॉनी ने नहीं बल्कि मॉरी की पत्नी शार्लोट ने किया, जो एक खूबसूरत, सफ़ेद बालों वाली महिला थीं और मधुर स्वर में बोलती थीं। जब भी मैं आता था, वह अक्सर घर पर नहीं होती थीं—वह मॉरी की इच्छा के अनुसार एमआईटी में काम करती रहीं—और आज सुबह उन्हें देखकर मुझे आश्चर्य हुआ।
“मॉरी आज थोड़ा परेशान है,” उसने कहा। उसने एक पल के लिए मेरे कंधे के ऊपर से देखा, फिर रसोई की ओर चली गई।
मुझे खेद है, मैंने कहा।
“नहीं, नहीं, वह आपको देखकर खुश होगा,” उसने जल्दी से कहा। “मुझे पूरा यकीन है…”
वह वाक्य के बीच में ही रुक गई, अपना सिर थोड़ा घुमाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगी। फिर उसने बोलना जारी रखा। “मुझे यकीन है... जब उसे पता चलेगा कि तुम यहाँ हो तो उसे अच्छा लगेगा।”
मैंने बाजार से थैले उठाए—मैंने मजाक में कहा, ये मेरा सामान्य भोजन भंडार है—और वह एक ही समय में मुस्कुराती और चिंतित दिखी।
“यहां पहले से ही बहुत सारा खाना है। उसने पिछली बार का कुछ भी नहीं खाया है।” यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी।
मैंने पूछा, उसने कुछ नहीं खाया?
उसने फ्रिज खोला और मुझे चिकन सलाद, वर्मीसेली, सब्जियां, भरवां कद्दू के जाने-पहचाने डिब्बे दिखे, ये सब वो चीजें थीं जो मैं मॉरी के लिए लाई थी। उसने फ्रीजर खोला और उसमें और भी बहुत कुछ था।
“मॉरी इनमें से ज़्यादातर खाना नहीं खा सकता। उसे निगलने में बहुत दिक्कत होती है। अब उसे नरम चीज़ें और तरल पेय ही खाने पड़ते हैं।”
लेकिन मैंने कहा, उसने कभी कुछ नहीं कहा।
शार्लोट मुस्कुराई। "वह तुम्हारी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना चाहता।" इससे मुझे कोई ठेस नहीं पहुँचती। मैं बस किसी तरह मदद करना चाहता था। मतलब, मैं बस उसके लिए कुछ लाना चाहता था...

“आप उसके लिए कुछ लेकर आ रहे हैं। वह आपके आने का बेसब्री से इंतजार करता है। वह आपके साथ इस प्रोजेक्ट पर काम करने के बारे में बात करता है, कि उसे कैसे एकाग्रचित्त रहना पड़ता है और समय निकालना पड़ता है। मुझे लगता है कि इससे उसे उद्देश्य की अच्छी समझ मिल रही है...”
फिर से, उसने वही खोई-खोई नज़र डाली, मानो कहीं और से कुछ महसूस कर रही हो। मैं जानती थी कि मॉरी की रातें मुश्किल होती जा रही थीं, वह पूरी रात सो नहीं पाता था, और इसका मतलब यह था कि शार्लोट भी अक्सर सो नहीं पाती थी। कभी-कभी मॉरी घंटों खांसते हुए जागता रहता था—उसके गले से कफ निकलने में इतना समय लग जाता था। अब रात भर स्वास्थ्यकर्मी घर पर रहते थे और दिन में ढेर सारे आगंतुक आते- जाते रहते थे, पूर्व छात्र, साथी प्रोफेसर, ध्यान शिक्षक, सब घर में आते-जाते रहते थे। कुछ दिनों में, मॉरी के घर आधा दर्जन आगंतुक होते थे, और वे अक्सर तब मौजूद होते थे जब शार्लोट काम से लौटती थी। वह इसे धैर्य से संभालती थी, भले ही ये सभी बाहरी लोग मॉरी के साथ बिताए उसके कीमती पलों को छीन रहे थे। “…जीवन में एक उद्देश्य की भावना,” उसने आगे कहा। “हाँ। यह अच्छी बात है।” मैंने कहा, "मुझे उम्मीद है।"
मैंने फ्रिज में नया खाना रखने में मदद की। रसोई के काउंटर पर तरह-तरह के नोट, संदेश, जानकारी और चिकित्सीय निर्देश बिखरे पड़े थे। मेज पर पहले से कहीं ज़्यादा दवाइयों की बोतलें थीं—उनके अस्थमा के लिए सेलेस्टोन, नींद लाने के लिए एटिवान, संक्रमण के लिए नेप्रोक्सन—साथ ही पाउडर वाला दूध और जुलाब भी। गलियारे से हमें एक दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनाई दी।
"शायद वह अभी उपलब्ध हो... मुझे जाकर देखना चाहिए।"
शार्लेट ने एक बार फिर मेरे खाने पर नज़र डाली और मुझे अचानक शर्म महसूस हुई। ये सारी चीज़ें मुझे उन चीज़ों की याद दिला रही थीं जिनका आनंद मॉरी कभी नहीं ले पाता।
उनकी बीमारी के छोटे-छोटे कष्ट बढ़ते जा रहे थे, और जब मैं आखिरकार मॉरी के साथ बैठा, तो उन्हें सामान्य से अधिक खांसी आ रही थी, एक सूखी, धूल भरी खांसी जिससे उनका सीना कांप रहा था और उनका सिर आगे की ओर झुक रहा था। एक जोरदार खांसी के बाद, वे रुके, अपनी आँखें बंद कीं और एक गहरी सांस ली। मैं चुपचाप बैठा रहा क्योंकि मुझे लगा कि वे अपनी थकान से उबर रहे हैं।
"क्या टेप चालू है?" उसने अचानक कहा, उसकी आँखें अभी भी बंद थीं।
हां, हां, मैंने झट से कहा और प्ले और रिकॉर्ड बटन दबा दिए।

उन्होंने आंखें बंद रखते हुए आगे कहा, "मैं अभी जो कर रहा हूं, वह है खुद को इस अनुभव से अलग करना।"
क्या आप स्वयं को अलग कर रहे हैं?
“हाँ। खुद को अलग करना। और यह महत्वपूर्ण है—न केवल मेरे जैसे मरणासन्न व्यक्ति के लिए, बल्कि आपके जैसे पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति के लिए भी। अलग होना सीखें।”
उसने अपनी आँखें खोलीं। उसने गहरी साँस ली। “तुम्हें पता है बौद्ध क्या कहते हैं? चीजों से आसक्ति मत रखो, क्योंकि सब कुछ क्षणभंगुर है।”
लेकिन रुकिए, मैंने कहा। क्या आप हमेशा जीवन के अनुभवों के बारे में ही बात नहीं करते? सभी अच्छी भावनाओं के बारे में, सभी बुरी भावनाओं के बारे में? "हाँ।"
अच्छा, अगर आप अनासक्त हैं तो आप ऐसा कैसे कर सकते हैं?
“अहा। तुम सोच रहे हो, मिच। लेकिन अनासक्ति का मतलब यह नहीं है कि तुम उस अनुभव को अपने ऊपर हावी न होने दो। बल्कि इसके विपरीत, तुम उसे पूरी तरह से अपने ऊपर हावी होने देते हो। इसी तरह तुम उससे बाहर निकल पाते हो।”
मैं हार गया हूं।
“कोई भी भावना ले लीजिए—किसी स्त्री के लिए प्रेम, किसी प्रियजन की मृत्यु का शोक, या मैं जो कुछ झेल रहा हूँ, किसी जानलेवा बीमारी से उत्पन्न भय और पीड़ा। यदि आप भावनाओं को दबाते हैं—यदि आप स्वयं को उन भावनाओं से पूरी तरह गुजरने नहीं देते—तो आप कभी भी उनसे विरक्त नहीं हो सकते, आप भय में ही व्यस्त रहते हैं। आप पीड़ा से डरते हैं, आप शोक से डरते हैं। आप प्रेम करने से उत्पन्न होने वाली भेद्यता से डरते हैं।”
लेकिन जब आप खुद को इन भावनाओं में पूरी तरह से डुबो देते हैं, जब आप खुद को उनमें पूरी तरह से डूबने देते हैं, तब आप उन्हें पूरी तरह से अनुभव करते हैं। आप जानते हैं कि दर्द क्या है। आप जानते हैं कि प्यार क्या है। आप जानते हैं कि शोक क्या है। और तभी आप कह सकते हैं, 'ठीक है। मैंने उस भावना का अनुभव किया है। मैं उस भावना को पहचानता हूँ। अब मुझे कुछ पल के लिए उस भावना से अलग होने की जरूरत है।'
मॉरी रुक गया और मुझे ध्यान से देखने लगा, शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि मैं इसे सही ढंग से समझ रहा हूँ।

उन्होंने कहा, "मुझे पता है कि आपको लगता है कि यह सिर्फ मरने के बारे में है, लेकिन जैसा कि मैं आपको बार-बार कहता हूं। जब आप मरना सीख जाते हैं, तो आप जीना सीख जाते हैं।"
मॉरी ने अपने सबसे डरावने पलों के बारे में बताया, जब उन्हें लगा कि उनकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही है या जब उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अगली साँस कहाँ से आएगी। उन्होंने कहा कि ये भयानक पल थे, और उनकी पहली भावनाएँ भय, डर और चिंता थीं। लेकिन जब उन्होंने इन भावनाओं को महसूस किया, उनकी बनावट, उनकी नमी, पीठ में सिहरन, दिमाग में दौड़ती गर्मी की तेज़ लहर—तब वे कह पाए, “ठीक है। यही डर है। इससे दूर हट जाओ। दूर हट जाओ।”
मैंने सोचा कि रोजमर्रा की जिंदगी में इसकी कितनी बार जरूरत पड़ती है। हम कितना अकेलापन महसूस करते हैं, कभी-कभी तो इतना कि आंखों में आंसू आ जाते हैं, लेकिन हम उन आंसुओं को बहने नहीं देते क्योंकि हमें रोना नहीं चाहिए। या फिर हम अपने साथी के लिए प्यार की लहर महसूस करते हैं, लेकिन कुछ कह नहीं पाते क्योंकि हमें डर सताता है कि कहीं वो शब्द रिश्ते पर क्या असर न डालें।
मॉरी का नज़रिया बिल्कुल उल्टा था। नल खोल दो। अपनी भावनाओं से खुद को धो लो। इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा, बल्कि फायदा ही होगा। अगर तुम डर को अपने अंदर आने दो, अगर तुम उसे एक जानी-पहचानी कमीज़ की तरह पहन लो, तो तुम खुद से कह सकते हो, "ठीक है, ये तो बस डर है, मुझे इसे खुद पर हावी नहीं होने देना है। मैं इसे इसके असली रूप में देख रहा हूँ।"
अकेलेपन के लिए भी यही बात लागू होती है: आप खुद को पूरी तरह से छोड़ देते हैं, आंसू बहने देते हैं, इसे पूरी तरह से महसूस करते हैं—लेकिन अंततः आप यह कह पाते हैं, "ठीक है, यह मेरा अकेलेपन का पल था। मुझे अकेलेपन से डर नहीं लगता, लेकिन अब मैं उस अकेलेपन को एक तरफ रख दूंगी और जान लूंगी कि दुनिया में और भी भावनाएं हैं, और मैं उन्हें भी महसूस करूंगी।"
“अलग हो जाओ,” मॉरी ने फिर कहा।
उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, फिर खांसने लगा।
फिर उसे दोबारा खांसी आई।
फिर उसने और जोर से खांसा।
अचानक, उसका दम घुटने लगा, मानो उसके फेफड़ों में जमा हुआ बलगम उसे चिढ़ा रहा हो, कभी ऊपर उठता, कभी नीचे गिर जाता, उसकी साँसें छीन लेता। वह उबकाई लेने लगा, फिर ज़ोर-ज़ोर से खांसने लगा, और अपने हाथों को सामने की ओर हिलाने लगा— आँखें बंद करके, हाथों को हिलाते हुए, वह मानो किसी प्रेतबाधित व्यक्ति जैसा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

□□ □□□□?

“□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□”

□□ □□□□?

□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ "□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□?"

□□□ □□□□ □□□□□-□□□□ □□□□, □□□□-□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□, □□□□□-□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□

□□□□, □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□

प्रोफेसर, भाग दो

मैं जिस मॉरी को जानता था, और जिसे कई अन्य लोग भी जानते थे, वह वाशिंगटन डी.सी. के ठीक बाहर स्थित एक मानसिक अस्पताल में बिताए वर्षों के बिना वैसा व्यक्ति नहीं होता, जिसका नाम देखने में तो शांत लगता है, लेकिन असल में वह चेस्टनट लॉज था। शिकागो विश्वविद्यालय से मास्टर डिग्री और पीएचडी हासिल करने के बाद मॉरी की यह पहली नौकरियों में से एक थी। चिकित्सा, कानून और व्यवसाय को ठुकराते हुए, मॉरी ने शोध जगत को एक ऐसा क्षेत्र चुना जहाँ वह दूसरों का शोषण किए बिना अपना योगदान दे सकता था।
मॉरी को मानसिक रोगियों का अवलोकन करने और उनके उपचारों को रिकॉर्ड करने के लिए अनुदान दिया गया था। हालाँकि आज यह विचार सामान्य लगता है, लेकिन 1950 के दशक की शुरुआत में यह अभूतपूर्व था। मॉरी ने ऐसे मरीज़ों को देखा जो दिन भर चीखते रहते थे। ऐसे मरीज़ जो रात भर रोते रहते थे। ऐसे मरीज़ जो अपने अंडरवियर में ही मल त्याग देते थे। ऐसे मरीज़ जो खाना खाने से इनकार करते थे, जिन्हें पकड़कर रखना पड़ता था, दवाइयाँ देनी पड़ती थीं और नसों के ज़रिए भोजन देना पड़ता था।
मरीजों में से एक अधेड़ उम्र की महिला, हर दिन अपने कमरे से बाहर आती और टाइल वाले फर्श पर औंधे मुंह लेट जाती, घंटों वहीं पड़ी रहती, जबकि डॉक्टर और नर्स उसके आसपास से गुजरते रहते। मॉरी यह सब देखकर भयभीत हो जाता था। वह नोट्स बनाता था, क्योंकि यही उसका काम था। हर दिन, वह यही करती: सुबह बाहर आती, फर्श पर लेट जाती, शाम तक वहीं पड़ी रहती, किसी से बात नहीं करती, और सब उसे नजरअंदाज करते रहते। इससे मॉरी दुखी हो गया। वह उसके साथ फर्श पर बैठने लगा, यहां तक कि उसके बगल में लेट भी जाता, ताकि उसे उसकी पीड़ा से बाहर निकाल सके। आखिरकार, वह उसे उठवा पाया और यहां तक कि उसे उसके कमरे में वापस भी ले गया। मॉरी को पता चला कि वह असल में वही चाहती थी जो बहुत से लोग चाहते हैं—कोई तो ध्यान दे कि वह वहां है।
मॉरी ने चेस्टनट लॉज में पाँच साल तक काम किया। हालाँकि इसकी सलाह नहीं दी जाती थी, फिर भी उन्होंने कुछ मरीज़ों से दोस्ती कर ली, जिनमें एक महिला भी शामिल थी जिसने उनसे मज़ाक में कहा कि वह वहाँ आकर कितनी भाग्यशाली है, "क्योंकि मेरे पति अमीर हैं, इसलिए वे इसका खर्च उठा सकते हैं। ज़रा सोचिए,

अगर मुझे उन सस्ते मानसिक अस्पतालों में से किसी एक में रहना पड़ता तो क्या होता?"
एक और महिला—जो हर किसी पर थूकती थी—मॉरी से घुलमिल गई और उसे अपना दोस्त कहने लगी। वे हर दिन बात करते थे, और कर्मचारियों को कम से कम इस बात से तसल्ली थी कि किसी ने तो उसे समझा-बुझाकर अपने दिल की बात कही। लेकिन एक दिन वह भाग गई, और मॉरी से उसे वापस लाने में मदद करने के लिए कहा गया। उन्होंने उसे पास की एक दुकान में पीछे की तरफ छिपी हुई पाया, और जब मॉरी अंदर गया, तो उसने गुस्से भरी निगाहों से उसे देखा।
"तो तुम भी उन्हीं में से एक हो," उसने गुस्से से कहा।
“किसमें से एक?”
“मेरे जेलर।”
मॉरी ने गौर किया कि वहाँ के अधिकांश मरीज़ों को जीवन भर तिरस्कार और उपेक्षा का सामना करना पड़ा था, उन्हें यह महसूस कराया गया था कि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। उन्हें सहानुभूति की भी कमी खल रही थी—जो कर्मचारियों के बीच जल्दी ही खत्म हो जाती थी। और इनमें से कई मरीज़ संपन्न परिवारों से थे, इसलिए उनकी दौलत उन्हें खुशी या संतोष नहीं दिला पाई। यह एक ऐसा सबक था जिसे वह कभी नहीं भूले।
मैं मॉरी को चिढ़ाता था कि वह साठ के दशक में ही अटका हुआ है। वह जवाब देता था कि आज के समय की तुलना में साठ का दशक इतना बुरा नहीं था।
मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र में काम करने के बाद, साठ के दशक की शुरुआत से ठीक पहले वे ब्रैंडिस विश्वविद्यालय आए। कुछ ही वर्षों में, कैंपस सांस्कृतिक क्रांति का केंद्र बन गया। ड्रग्स, सेक्स, नस्ल, वियतनाम युद्ध के विरोध प्रदर्शन, ये सब चर्चाओं का केंद्र थे। एब्बी हॉफमैन ने ब्रैंडिस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। जेरी रुबिन और एंजेला डेविस ने भी यहीं से शिक्षा प्राप्त की। मॉरी की कक्षाओं में कई "क्रांतिकारी" छात्र थे। इसका एक कारण यह था कि समाजशास्त्र संकाय के प्रोफेसर केवल पढ़ाने के बजाय सक्रिय रूप से शामिल हो गए। उदाहरण के लिए, वे युद्ध-विरोधी थे। जब प्रोफेसरों को पता चला कि जिन छात्रों का ग्रेड पॉइंट औसत एक निश्चित सीमा से कम होगा, उनकी सेना में भर्ती की छूट रद्द हो सकती है और उन्हें सेना में भर्ती किया जा सकता है, तो उन्होंने कोई ग्रेड न देने का फैसला किया। जब प्रशासन ने कहा, "अगर आप इन छात्रों को ग्रेड नहीं देंगे, तो वे सब फेल हो

जाएंगे," तो मॉरी के पास एक समाधान था: "चलिए, हम सबको 'ए' ग्रेड दे देते हैं।" और उन्होंने ऐसा ही किया।
साठ के दशक में जिस तरह कैंपस के लिए रास्ते खुले, उसी तरह मॉरी के विभाग के कर्मचारियों में भी बदलाव आया। काम करते समय वे जींस और सैंडल पहनते थे, वहीं कक्षा को वे एक जीवंत और गतिशील स्थान के रूप में देखने लगे। उन्होंने व्याख्यानों के बजाय चर्चाओं को, सिद्धांतों के बजाय अनुभवों को प्राथमिकता दी। उन्होंने छात्रों को नागरिक अधिकार परियोजनाओं के लिए सुदूर दक्षिण और फील्डवर्क के लिए शहरी क्षेत्रों में भेजा। वे विरोध प्रदर्शनों के लिए वाशिंगटन गए, और मॉरी अक्सर अपने छात्रों के साथ बसों में यात्रा करते थे। एक यात्रा के दौरान, उन्होंने बड़े ही सौम्य भाव से देखा कि लहराते हुए स्कर्ट और प्रेम माला पहने महिलाएं सैनिकों की तोपों में फूल रख रही थीं, फिर लॉन पर हाथ पकड़कर बैठी थीं और पेंटागन को हवा में उठाने की कोशिश कर रही थीं।
बाद में उन्होंने याद करते हुए कहा, "उन्होंने इसे हटाया नहीं, लेकिन यह एक अच्छा प्रयास था।"
एक बार, अश्वेत छात्रों के एक समूह ने ब्रैंडिस परिसर में स्थित फोर्ड हॉल पर कब्ज़ा कर लिया और उसे "मैल्कम एक्स यूनिवर्सिटी" लिखे बैनर से ढक दिया। फोर्ड हॉल में रसायन विज्ञान की प्रयोगशालाएँ थीं, और कुछ प्रशासनिक अधिकारियों को चिंता थी कि ये कट्टरपंथी तहखाने में बम बना रहे होंगे। लेकिन मॉरी को बेहतर पता था। उन्होंने समस्या की जड़ को समझ लिया था, जो कि मनुष्यों की यह चाहत थी कि वे महसूस करें कि उनका भी महत्व है।
यह गतिरोध कई हफ्तों तक चला। और यह शायद और भी लंबा खिंच जाता अगर मॉरी उस इमारत के पास से न गुजर रहे होते, जब प्रदर्शनकारियों में से एक ने उन्हें अपना पसंदीदा शिक्षक बताकर खिड़की से अंदर आने के लिए चिल्लाया था।
एक घंटे बाद, मॉरी प्रदर्शनकारियों की मांगों की सूची लेकर खिड़की से बाहर निकला। उसने सूची विश्वविद्यालय के अध्यक्ष को सौंपी, और स्थिति शांत हो गई। मॉरी हमेशा अच्छी शांति बनाए रखता था।
ब्रैंडिस विश्वविद्यालय में, उन्होंने सामाजिक मनोविज्ञान, मानसिक बीमारी और स्वास्थ्य, तथा समूह प्रक्रिया के विषय में कक्षाएं पढ़ाईं। इन कक्षाओं में "करियर कौशल" पर कम और "व्यक्तिगत विकास" पर अधिक जोर दिया जाता था।
और इसी वजह से, आज के व्यापार और कानून के छात्र मॉरी को उनके योगदान के बारे में नासमझ समझ सकते हैं। उनके छात्रों ने आगे चलकर कितनी कमाई की? उन्होंने कितने बड़े-बड़े मुकदमे जीते?

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सातवें मंगलवार को हम बुढ़ापे के डर के बारे में बात करते हैं

मॉरी अपनी लड़ाई हार गया। अब कोई उसकी पीठ पोंछ रहा था।
उन्होंने हमेशा की तरह साहस के साथ इसे स्वीकार किया। कमोड का इस्तेमाल करते समय अब पीछे तक हाथ न पहुंचा पाने के कारण, उन्होंने कॉनी को अपनी इस नई समस्या के बारे में बताया।
"क्या आपको मेरे लिए ऐसा करने में शर्म आएगी?"
उसने नहीं कहा।
मुझे यह स्वाभाविक लगा कि उसने पहले उससे पूछा।
मॉरी ने स्वीकार किया कि इसे स्वीकारने में समय लगा, क्योंकि एक तरह से यह बीमारी के सामने पूरी तरह से आत्मसमर्पण था। उनसे सबसे निजी और बुनियादी चीजें भी छीन ली गई थीं—शौचालय जाना, नाक पोंछना, गुप्तांगों को धोना। सांस लेने और खाना निगलने के अलावा, वह लगभग हर चीज के लिए दूसरों पर निर्भर थे। मैंने मॉरी से पूछा कि उन्होंने उस दौरान सकारात्मक बने रहने में कैसे कामयाबी हासिल की।
“मिच, ये तो अजीब बात है,” उसने कहा। “मैं एक आत्मनिर्भर इंसान हूँ, इसलिए मेरा मन तो इन सब बातों का विरोध करने का कर रहा था—गाड़ी से उतरने में मदद लेना, किसी और से कपड़े पहनाना। मुझे थोड़ी शर्म भी आई, क्योंकि हमारी संस्कृति कहती है कि अगर हम अपना पिछवाड़ा खुद साफ नहीं कर सकते तो हमें शर्म आनी चाहिए। लेकिन फिर मैंने सोचा, संस्कृति की बातों को भूल जाओ। मैंने अपनी ज़िंदगी में ज़्यादातर संस्कृति को नज़रअंदाज़ किया है। मुझे शर्म नहीं आएगी। इसमें बड़ी बात क्या है?”
और जानते हैं क्या? सबसे अजीब बात क्या है?
यह क्या है?
“मुझे अपनी निर्भरता में आनंद आने लगा। अब मुझे अच्छा लगता है जब वे मुझे करवट दिलाकर मेरी पीठ पर क्रीम लगाते हैं ताकि छाले न पड़ें। या जब वे मेरा माथा पोंछते हैं, या मेरे पैरों की मालिश करते हैं। मैं इसमें मग्न हो जाता हूँ। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और इस एहसास में डूब जाता हूँ। और यह मुझे बहुत जाना-पहचाना सा लगता है।”

“यह बिल्कुल बचपन में वापस लौटने जैसा है। कोई आपको नहलाए। कोई आपको गोद में उठाए। कोई आपको पोंछे। हम सभी जानते हैं कि बच्चा कैसे बनना है। यह हम सभी के अंदर मौजूद है। मेरे लिए, यह बस यह याद रखना है कि इसका आनंद कैसे लिया जाए।” सच तो यह है कि जब हमारी माताओं ने हमें गोद में लिया, झुलाया, सिर सहलाया— हममें से किसी को भी उस प्यार की कमी कभी खली नहीं। हम सभी किसी न किसी रूप में उन दिनों में वापस लौटना चाहते हैं जब हमारी पूरी तरह से देखभाल की जाती थी— बिना शर्त प्यार, बिना शर्त ध्यान। हममें से अधिकांश को वह सब पर्याप्त मात्रा में नहीं मिला।
मुझे पता है मैंने ऐसा नहीं किया।
मैंने मॉरी की तरफ देखा और अचानक मुझे समझ आ गया कि उन्हें मेरा झुककर उनका माइक्रोफोन ठीक करना, तकियों को समेटना या उनकी आँखें पोंछना इतना अच्छा क्यों लगता था। मानवीय स्पर्श। अठहत्तर साल की उम्र में भी वे एक वयस्क की तरह देते थे और एक बच्चे की तरह लेते थे।
उसी दिन बाद में, हमने बुढ़ापे के बारे में बात की। या शायद मुझे कहना चाहिए बुढ़ापे के डर के बारे में—मेरी पीढ़ी को परेशान करने वाली समस्याओं की सूची में एक और समस्या। बोस्टन हवाई अड्डे से आते समय, मैंने उन बिलबोर्डों को गिना जिन पर युवा और सुंदर लोग दिखाई दे रहे थे। एक आकर्षक युवक काउबॉय टोपी पहने सिगरेट पी रहा था, दो खूबसूरत युवतियाँ शैम्पू की बोतल के ऊपर मुस्कुरा रही थीं, एक कामुक दिखने वाली किशोरी अपनी जींस का बटन खोले खड़ी थी, और एक आकर्षक महिला काले मखमली कपड़े में टक्सीडो पहने एक पुरुष के बगल में खड़ी थी, दोनों स्कॉच का गिलास पकड़े हुए एक-दूसरे से लिपटे हुए थे।
मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखा जो पैंतीस साल से अधिक उम्र का लगे। मैंने मॉरी से कहा कि मैं पहले से ही बूढ़ा महसूस कर रही हूँ, हालाँकि मैं इसे काबू में रखने की पूरी कोशिश कर रही थी। मैं लगातार व्यायाम करती थी। अपने खान-पान का ध्यान रखती थी। शीशे में अपने बालों की सीमा देखती रहती थी। मैं अपनी उम्र बताने में गर्व महसूस करती थी—क्योंकि मैंने इतनी कम उम्र में बहुत कुछ हासिल किया था—लेकिन अब मैं इस बारे में बात भी नहीं करती, इस डर से कि मैं चालीस के करीब पहुँच रही हूँ और इसलिए पेशेवर तौर पर गुमनामी के करीब पहुँच जाऊँगी।
मॉरी बुढ़ापे को बेहतर ढंग से समझने लगा था।
“युवाओं पर इतना ज़ोर देना—मुझे समझ नहीं आता,” उन्होंने कहा। “सुनो, मैं जानता हूँ कि युवावस्था कितनी कष्टदायक हो सकती है, इसलिए मुझे यह मत बताओ कि

यह बहुत अच्छी बात है। ये सभी बच्चे जो मेरे पास अपनी समस्याओं, अपने संघर्षों, अपनी अपर्याप्तता की भावनाओं, अपने जीवन के दयनीय होने के एहसास के साथ आए, इतना बुरा कि वे आत्महत्या करना चाहते थे…”
और तमाम मुसीबतों के अलावा, युवा लोग समझदार नहीं होते। उन्हें जीवन की बहुत कम समझ होती है। भला कौन ऐसा दिन जीना चाहेगा जब उसे पता ही न हो कि क्या हो रहा है? जब लोग आपको बहकाते हैं, कहते हैं कि यह परफ्यूम खरीदो और तुम खूबसूरत लगोगी, या यह जींस पहनो और तुम सेक्सी लगोगी—और आप उनकी बातों पर यकीन कर लेते हैं! ये सब सरासर बकवास है।
मैंने पूछा, क्या आपको कभी बूढ़े होने से डर नहीं लगा?
"मिच, मैं बुढ़ापे को स्वीकार करता हूँ।"
इसे गले लगाने?
“यह बहुत सरल है। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, आप और सीखते हैं। अगर आप बाईस साल की उम्र में ही अटके रहते, तो आप उतने ही अज्ञानी होते जितने कि आप बाईस साल की उम्र में थे। बुढ़ापा केवल क्षय नहीं है, आप जानते हैं। यह विकास है। यह केवल इस नकारात्मक बात से कहीं अधिक है कि आप मरने वाले हैं, यह इस बात को समझने से भी सकारात्मक रूप से जुड़ा है कि आप मरने वाले हैं, और इसी वजह से आप एक बेहतर जीवन जीते हैं।”
हां, मैंने कहा, लेकिन अगर बुढ़ापा इतना मूल्यवान होता, तो लोग हमेशा यह क्यों कहते, "काश मैं फिर से जवान हो जाता।" आप कभी किसी को यह कहते नहीं सुनते, "काश मैं पैंसठ साल का होता।"
वह मुस्कुराया। “जानते हो, इससे क्या झलकता है? असंतुष्ट जीवन। अपूर्ण जीवन। ऐसा जीवन जिसे अर्थ नहीं मिला। क्योंकि अगर आपको अपने जीवन में अर्थ मिल गया है, तो आप पीछे नहीं जाना चाहते। आप आगे बढ़ना चाहते हैं। आप और देखना चाहते हैं, और करना चाहते हैं। आप पैंसठ साल की उम्र तक इंतजार नहीं कर सकते।” “सुनो। तुम्हें कुछ तो पता होना चाहिए। सभी युवाओं को कुछ तो पता होना चाहिए। अगर तुम हमेशा बुढ़ापे से लड़ते रहोगे, तो तुम हमेशा दुखी रहोगे, क्योंकि यह तो होकर ही रहेगा।”
और मिच?
उसने अपनी आवाज धीमी कर ली।
सच तो यह है कि अंततः आपकी मृत्यु होनी ही है।
मेंने सिर हिलाया।
"तुम खुद से जो भी कहो, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

मुझे पता है।
"लेकिन उम्मीद है," उन्होंने कहा, "बहुत लंबे समय तक ऐसा नहीं होगा।" उन्होंने शांत भाव से अपनी आँखें बंद कर लीं, फिर मुझसे अपने सिर के पीछे तकिए ठीक करने को कहा। आराम से रहने के लिए उनके शरीर को लगातार ठीक करने की ज़रूरत पड़ती थी। उनका शरीर सफेद तकियों, पीले फोम और नीले तौलियों के सहारे कुर्सी पर टिका हुआ था। सरसरी नज़र में ऐसा लग रहा था मानो मॉरी को शिपिंग के लिए पैक किया जा रहा हो।
जब मैंने तकिए हटाए तो उसने फुसफुसाते हुए कहा, "धन्यवाद।"
मैंने कहा, कोई बात नहीं।
“मिच। तुम क्या सोच रहे हो?”
मैंने जवाब देने से पहले थोड़ा रुककर कहा, ठीक है, मुझे आश्चर्य हो रहा है कि आप युवा, स्वस्थ लोगों से ईर्ष्या क्यों नहीं करते।
“ओह, मुझे लगता है कि मैं करता हूँ।” उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। “मुझे उनसे ईर्ष्या होती है कि वे हेल्थ क्लब जा सकते हैं, या तैरने जा सकते हैं। या नाच सकते हैं। खासकर नाचने के लिए। लेकिन ईर्ष्या मेरे मन में भी आती है, मैं उसे महसूस करता हूँ, और फिर उसे जाने देता हूँ। याद है मैंने अनासक्ति के बारे में क्या कहा था? उसे जाने दो। खुद से कहो, ‘यह ईर्ष्या है, मैं अब इससे अलग होने जा रहा हूँ।’ और चले जाओ।”
उसे खांसी आई—एक लंबी, कर्कश खांसी—और उसने अपने मुंह पर एक टिश्यू लगाया और उसमें धीरे से थूका। वहाँ बैठे-बैठे मुझे उससे कहीं ज़्यादा ताकतवर महसूस हो रहा था, इतना ज़्यादा कि मानो मैं उसे उठाकर अपने कंधे पर आटे की बोरी की तरह फेंक सकता था। मुझे अपनी इस श्रेष्ठता पर शर्म आ रही थी, क्योंकि मैं किसी और तरह से उससे श्रेष्ठ महसूस नहीं कर रहा था।
आप ईर्ष्या करने से कैसे बचते हैं...?
"क्या?"
मुझे?
वे मुस्करा उठे।
“मिच, बूढ़ों का युवाओं से ईर्ष्या न करना नामुमकिन है। लेकिन असल बात यह है कि आप जैसे हैं वैसे ही खुद को स्वीकार करें और उसका आनंद लें। यह आपके तीसवें दशक का आनंद लेने का समय है। मैंने भी अपने तीसवें दशक का आनंद लिया था, और अब मेरे अठहत्तरवें वर्ष का समय है।”

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

—[illegible]

आठवें मंगलवार को हम पैसों के बारे में बात करेंगे

मैंने अखबार को इस तरह ऊपर उठाया ताकि मॉरी उसे देख सके:

मैं नहीं चाहता कि मेरी कब्र पर लिखा हो "मैंने कभी किसी नेटवर्क का स्वामित्व नहीं किया।"
मॉरी हँसे, फिर उन्होंने अपना सिर हिलाया। उनके पीछे वाली खिड़की से सुबह की धूप आ रही थी, जो खिड़की की चौखट पर रखे हिबिस्कस के पौधे के गुलाबी फूलों पर पड़ रही थी। यह कथन अरबपति मीडिया मुगल और सीएनएन के संस्थापक टेड टर्नर का था, जो एक बड़े कॉर्पोरेट सौदे में सीबीएस नेटवर्क को हासिल करने में अपनी असमर्थता पर अफ़सोस जता रहे थे। मैंने आज सुबह मॉरी को यह कहानी इसलिए सुनाई क्योंकि मैं सोच रहा था कि अगर टर्नर कभी मेरे पुराने प्रोफेसर की स्थिति में होते, उनकी साँसें रुक रही होतीं, उनका शरीर पत्थर जैसा हो रहा होता, उनके दिन एक-एक करके कैलेंडर से कटते जा रहे होते—तो क्या वे सचमुच एक नेटवर्क के मालिक होने पर रो रहे होते?
“यह सब एक ही समस्या का हिस्सा है, मिच,” मॉरी ने कहा। “हम अपने मूल्यों को गलत चीजों में स्थापित कर देते हैं। और इससे बेहद निराशापूर्ण जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। मुझे लगता है कि हमें इस बारे में बात करनी चाहिए।”
मॉरी पूरी तरह एकाग्र था। अब अच्छे दिन भी होते हैं और बुरे दिन भी। उसका दिन अच्छा जा रहा था। पिछली रात, एक स्थानीय कैपेला समूह उसके घर प्रस्तुति देने आया था और उसने उत्साह से यह कहानी सुनाई, मानो इंक स्पॉट्स खुद उससे मिलने आए हों। बीमारी से पहले भी मॉरी का संगीत प्रेम बहुत गहरा था, लेकिन अब यह इतना तीव्र हो गया था कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। वह कभी-कभी रात में आँखें बंद करके ओपेरा सुनता था, उन मधुर आवाज़ों के उतार-चढ़ाव में खो जाता था।
"कल रात इस समूह को सुनना चाहिए था, मिच। क्या गजब की आवाज़ थी!"
मॉरी को हमेशा से साधारण सुखों में आनंद आता था, जैसे गाना, हंसना, नाचना। अब, पहले से कहीं अधिक, भौतिक चीजों का उनके लिए कोई महत्व नहीं रह गया था। जब लोग मरते हैं, तो अक्सर यह कहावत सुनने को मिलती है, "आप इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते।" मॉरी को यह बात बहुत पहले से ही पता थी।
“हमारे देश में एक तरह का ब्रेनवाशिंग चल रहा है,” मॉरी ने आह भरते हुए कहा। “क्या आप जानते हैं कि वे लोगों का ब्रेनवाश कैसे करते हैं? वे एक ही बात को बार-बार दोहराते हैं। और यही हम अपने देश में करते हैं। चीजों का मालिक होना अच्छा है। ज़्यादा पैसा अच्छा है। ज़्यादा संपत्ति अच्छी है। ज़्यादा व्यापार अच्छा है। ज़्यादा अच्छा है। ज़्यादा अच्छा है। हम इसे दोहराते हैं — और हमें बार-बार दोहराया जाता है—जब तक कि कोई इसके विपरीत सोचने की जहमत

ही नहीं उठाता। आम आदमी इन सब बातों से इतना भ्रमित हो चुका है कि उसे अब यह समझ ही नहीं आता कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है।”
“जीवन में मैं जहाँ भी गया, मुझे ऐसे लोग मिले जो कुछ नया हथियाना चाहते थे। नई कार हथियाना चाहते थे। नई संपत्ति हथियाना चाहते थे। नवीनतम खिलौना हथियाना चाहते थे। और फिर वे आपको इसके बारे में बताना चाहते थे। 'अंदाजा लगाओ मुझे क्या मिला? अंदाजा लगाओ मुझे क्या मिला?'”
“आप जानते हैं मैंने इसे हमेशा कैसे समझा? ये लोग प्यार के इतने भूखे थे कि वे इसके बदले में कुछ और स्वीकार कर रहे थे। वे भौतिक चीजों को गले लगा रहे थे और बदले में प्यार की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन यह कभी काम नहीं करता। आप भौतिक चीजों को प्यार, कोमलता, स्नेह या भाईचारे की भावना का विकल्प नहीं बना सकते।” "धन कोमलता का विकल्प नहीं है, और शक्ति भी कोमलता का विकल्प नहीं है। मैं मरते हुए भी आपको बता सकता हूँ कि जब आपको इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है, तो न तो धन और न ही शक्ति आपको वह एहसास दिला पाएगी जिसकी आपको तलाश है, चाहे आपके पास कितना भी कुछ क्यों न हो।"
मैंने मॉरी के अध्ययन कक्ष पर एक नज़र डाली। आज भी वह वैसा ही था जैसा मेरे आने के पहले दिन था। किताबें अलमारियों पर अपनी जगह पर ही रखी थीं। कागज़ उसी पुरानी मेज पर बिखरे पड़े थे। बाहरी कमरों में कोई सुधार या बदलाव नहीं किया गया था। वास्तव में, मॉरी ने चिकित्सा उपकरणों को छोड़कर, बहुत लंबे समय से, शायद वर्षों से, कुछ भी नया नहीं खरीदा था। जिस दिन उन्हें पता चला कि वे लाइलाज बीमारी से ग्रसित हैं, उसी दिन से उनकी क्रय शक्ति में रुचि खत्म हो गई थी।
टीवी वही पुराना मॉडल था, शार्लट की कार भी वही पुरानी मॉडल थी, बर्तन, चांदी के चम्मच-कांटे और तौलिए—सब कुछ वही था। फिर भी घर में ज़बरदस्त बदलाव आ चुका था। वह प्यार, शिक्षा और संवाद से भर गया था। वह दोस्ती, परिवार, ईमानदारी और आंसुओं से भर गया था। वह सहकर्मियों, छात्रों, ध्यान शिक्षकों, थेरेपिस्टों, नर्सों और गायन समूहों से भर गया था। वह सचमुच एक समृद्ध घर बन गया था, भले ही मॉरी का बैंक खाता तेज़ी से खाली हो रहा था।
“इस देश में हमारी चाहतों और जरूरतों को लेकर बहुत भ्रम है,” मॉरी ने कहा। “आपको भोजन की जरूरत है, आपको चॉकलेट संडे चाहिए। आपको खुद से ईमानदार रहना होगा। आपको नवीनतम स्पोर्ट्स कार की जरूरत नहीं है, आपको सबसे बड़े घर की जरूरत नहीं है।”

सच तो यह है कि आपको उन चीजों से संतुष्टि नहीं मिलती। जानते हैं आपको असल में संतुष्टि किससे मिलती है?
क्या?
"जो कुछ आपके पास देने के लिए है, उसे दूसरों को देना।"
आपकी बातें सुनकर ऐसा लगता है जैसे आप किसी अच्छे लड़के की तरह हैं।
“मेरा मतलब पैसों से नहीं है, मिच। मेरा मतलब है आपका समय। आपकी चिंता। आपकी कहानी सुनाने की कला। यह इतना मुश्किल नहीं है। यहाँ पास में ही एक वरिष्ठ नागरिक केंद्र खुला है। वहाँ हर दिन दर्जनों बुजुर्ग आते हैं। अगर आप युवा हैं और आपके पास कोई हुनर है, तो आपको वहाँ आकर सिखाने के लिए कहा जाता है। मान लीजिए आपको कंप्यूटर आता है। आप वहाँ जाकर उन्हें कंप्यूटर सिखा सकते हैं। वहाँ आपका बहुत स्वागत होता है। और वे बहुत आभारी होते हैं। सम्मान पाने का यही तरीका है, अपने पास मौजूद किसी चीज़ को देकर।”
“ऐसा करने के लिए बहुत सारी जगहें हैं। आपको किसी बड़ी प्रतिभा की आवश्यकता नहीं है। अस्पतालों और आश्रय स्थलों में ऐसे अकेले लोग हैं जिन्हें केवल किसी के साथ की ज़रूरत होती है। आप किसी अकेले बुजुर्ग व्यक्ति के साथ ताश खेलते हैं और आपको अपने लिए एक नया सम्मान मिलता है, क्योंकि आपकी ज़रूरत है।” "क्या आपको वह बात याद है जो मैंने सार्थक जीवन खोजने के बारे में कही थी? मैंने उसे लिख लिया था, लेकिन अब मैं उसे दोहरा सकता हूँ: दूसरों से प्रेम करने में स्वयं को समर्पित करें, अपने आस-पास के समुदाय के प्रति स्वयं को समर्पित करें, और कुछ ऐसा बनाने में स्वयं को समर्पित करें जो आपको उद्देश्य और अर्थ प्रदान करे।"
उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "आपने गौर किया होगा, उसमें वेतन के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है।"
मैंने मॉरी की कुछ बातें एक पीले पैड पर लिख लीं। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि वह मेरी आँखों में देखे, कि मैं क्या सोच रही हूँ, कि स्नातक होने के बाद से मैंने अपने जीवन का अधिकांश समय उन्हीं चीजों के पीछे भागते हुए बिताया है जिनके वह खिलाफ बोल रहे थे—बड़े-बड़े खिलौने, आलीशान घर। क्योंकि मैं अमीर और मशहूर खिलाड़ियों के बीच काम करती थी, इसलिए मैंने खुद को यकीन दिला दिया था कि मेरी ज़रूरतें वाजिब थीं, और मेरा लालच उनके मुकाबले कुछ भी नहीं था।
यह एक छलावा था। मॉरी ने इसे स्पष्ट कर दिया था।

“[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

नौवें मंगलवार को हम बात करेंगे कि प्यार कैसे चलता रहता है

पत्तों का रंग बदलने लगा था, जिससे वेस्ट न्यूटन से गुजरने का रास्ता सुनहरे और जंग लगे रंगों के खूबसूरत नज़ारे में बदल गया था। डेट्रॉइट में, मज़दूरों का विवाद थम सा गया था, और दोनों पक्ष एक-दूसरे पर संवाद न करने का आरोप लगा रहे थे। टीवी समाचार भी उतने ही निराशाजनक थे। ग्रामीण केंटकी में, तीन लोगों ने एक पुल से कब्र के पत्थर के टुकड़े फेंके, जिससे एक गुजरती कार का शीशा टूट गया और एक किशोरी की मौत हो गई, जो अपने परिवार के साथ धार्मिक तीर्थयात्रा पर जा रही थी। कैलिफ़ोर्निया में, ओ. जे. सिम्पसन का मुकदमा अपने अंतिम चरण की ओर बढ़ रहा था, और पूरा देश मानो इसी में डूबा हुआ था। यहां तक कि हवाई अड्डों पर भी सीएनएन चैनल पर टीवी लगे हुए थे, ताकि आप अपने गेट की ओर जाते समय ओ. जे. सिम्पसन से जुड़ी ताज़ा खबरें पा सकें।
मैंने स्पेन में रहने वाले अपने भाई को कई बार फोन करने की कोशिश की। मैंने संदेश छोड़े कि मैं उससे बात करना चाहती हूँ, और हमारे बारे में बहुत सोच रही हूँ। कुछ हफ़्ते बाद, मुझे एक छोटा सा संदेश मिला जिसमें उसने कहा कि सब ठीक है, लेकिन उसे खेद है कि वह अपनी बीमारी के बारे में बात नहीं करना चाहता। मेरे पुराने प्रोफेसर के लिए, बीमारी की बातें नहीं, बल्कि खुद बीमारी ही उन्हें अंदर से तोड़ रही थी। मेरी पिछली मुलाकात के बाद से, एक नर्स ने उनके लिंग में कैथेटर डाला था, जिससे पेशाब एक ट्यूब के ज़रिए बाहर निकलता था और उनकी कुर्सी के नीचे रखी थैली में इकट्ठा होता था। उनके पैरों की लगातार देखभाल करनी पड़ती थी (उन्हें दर्द तो महसूस होता था, भले ही वे उन्हें हिला नहीं सकते थे, यह एएलएस की एक और क्रूर विडंबना थी), और जब तक उनके पैर फोम पैड से सही मात्रा में लटके नहीं रहते थे, तब तक ऐसा लगता था जैसे कोई उन्हें कांटे से गोद रहा हो। बातचीत के बीच में, मॉरी को आगंतुकों से कहना पड़ता था कि वे उनका पैर थोड़ा सा उठाएँ और हिलाएँ, या उनके सिर को इस तरह से समायोजित करें कि वह रंगीन तकियों की हथेली में आसानी से फिट हो जाए। ज़रा सोचिए, अगर आप अपना सिर भी न हिला पाएँ तो कैसा लगेगा?
हर मुलाकात के साथ, मॉरी अपनी कुर्सी में मानो धंसते जा रहे थे, उनकी रीढ़ की हड्डी कुर्सी के आकार में ढलती जा रही थी। फिर भी, हर सुबह वे बिस्तर से उठकर व्हीलचेयर पर अपने अध्ययन कक्ष में ले जाने की ज़िद करते थे, जहाँ उन्हें

उनकी किताबों, कागज़ों और खिड़की पर रखे हिबिस्कस के पौधे के बीच बिठा दिया जाता था। अपनी आदत के अनुसार, उन्हें इसमें कुछ दार्शनिक भाव नज़र आता था।
उन्होंने कहा, "मैंने इसे अपने नवीनतम सूत्र में संक्षेप में व्यक्त किया है।"
मुझे सुनने दो।
जब आप बिस्तर पर होते हैं, तो आप मृत समान होते हैं।
वह मुस्कुराया। ऐसी बात पर सिर्फ मॉरी ही मुस्कुरा सकता था।
उन्हें "नाइटलाइन" के लोगों और खुद टेड कोप्पेल के फोन आ रहे थे।
उन्होंने कहा, "वे मेरे साथ एक और शो करना चाहते हैं। लेकिन उनका कहना है कि वे इंतजार करना चाहते हैं।"
कब तक? क्या आप अपनी आखिरी सांस ले रहे हैं?
"शायद। खैर, मैं ज्यादा दूर नहीं हूँ।"
ऐसा मत कहो।
"मुझे माफ़ करें।"
मुझे यह बात परेशान करती है कि वे आपके मुरझाने तक इंतजार करना चाहते हैं। "यह बात तुम्हें परेशान करती है क्योंकि तुम मेरा ख्याल रखते हो।"
वह मुस्कुराया। “मिच, हो सकता है वे मुझे थोड़े से ड्रामे के लिए इस्तेमाल कर रहे हों। कोई बात नहीं। हो सकता है मैं भी उनका इस्तेमाल कर रहा हूँ। वे लाखों लोगों तक मेरा संदेश पहुँचाने में मेरी मदद करते हैं। उनके बिना मैं यह नहीं कर सकता, है ना? तो यह एक समझौता है।”
उसे खांसी आई, जो एक लंबी गरारे जैसी आवाज में बदल गई, और अंत में उसने एक कुचले हुए टिशू पेपर में बलगम का एक और थक्का थूक दिया।
“खैर,” मॉरी ने कहा, “मैंने उनसे कहा कि वे ज़्यादा देर तक इंतज़ार न करें, क्योंकि मेरी आवाज़ नहीं रहेगी। एक बार यह बीमारी मेरे फेफड़ों तक पहुँच गई, तो बोलना नामुमकिन हो सकता है। अब मैं ज़्यादा देर तक बिना आराम किए बोल नहीं सकता। मैंने पहले ही बहुत से लोगों की मुलाक़ातें रद्द कर दी हैं जो मुझसे मिलना चाहते थे। मिच, कितने सारे लोग हैं। लेकिन मैं बहुत थका हुआ हूँ। अगर मैं उन्हें ठीक से ध्यान नहीं दे पाऊँगा, तो मैं उनकी मदद नहीं कर पाऊँगा।” मैंने टेप रिकॉर्डर की ओर देखा, मुझे अपराधबोध हो रहा था, मानो मैं उनके बचे हुए कीमती बोलने के समय को चुरा रहा हूँ। "क्या हम इसे छोड़ दें?" मैंने पूछा। "क्या इससे आप बहुत थक जाएँगे?"

मॉरी ने अपनी आँखें बंद कर लीं और सिर हिलाया। ऐसा लग रहा था मानो वह चुपचाप अपने दर्द के बीतने का इंतज़ार कर रहा हो। "नहीं," उसने आखिरकार कहा। "हमें आगे बढ़ना ही होगा।"
"यह हमारा साथ में किया जाने वाला आखिरी शोध प्रबंध है, आप जानते हैं।"
हमारा आखिरी शोध प्रबंध।
हम इसे सही तरीके से करना चाहते हैं।
मैंने कॉलेज में साथ में किए गए हमारे पहले शोध प्रबंध के बारे में सोचा। यह ज़ाहिर तौर पर मॉरी का विचार था। उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं ऑनर्स प्रोजेक्ट लिखने के लिए काफी काबिल हूँ—जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था।
अब हम यहाँ थे, वही काम एक बार फिर दोहरा रहे थे। एक विचार से शुरुआत करते हुए। मरता हुआ आदमी जीवित आदमी से बात करता है, उसे वह सब बताता है जो उसे जानना चाहिए। इस बार, मुझे काम खत्म करने की उतनी जल्दी नहीं थी।
“कल किसी ने मुझसे एक दिलचस्प सवाल पूछा,” मॉरी ने अब मेरी पीठ पीछे दीवार पर टंगी उस रजाई की ओर देखते हुए कहा, जिस पर आशा भरे संदेश लिखे थे। ये रजाई उनके सत्तरवें जन्मदिन पर दोस्तों ने उनके लिए बुनी थी। रजाई के हर पैच पर एक अलग संदेश था: हिम्मत मत हारो, अभी तो और भी बेहतर होना बाकी है, मॉरी—मानसिक स्वास्थ्य में हमेशा नंबर 1!
सवाल क्या था? मैंने पूछा।
"अगर मुझे मरने के बाद भुला दिए जाने की चिंता हो तो?"
तो? क्या आप ऐसा करते हैं?
“मुझे नहीं लगता कि मैं मरूँगा। मेरे जीवन में बहुत से ऐसे लोग हैं जो मुझसे घनिष्ठ और अंतरंग रूप से जुड़े हुए हैं। और प्यार ही वह जरिया है जिससे आप जीवित रहते हैं, आपके चले जाने के बाद भी।”
यह किसी गाने के बोल जैसा लगता है—"प्यार ही जीने का जरिया है।"
मॉरी मुस्कुराया। "शायद। लेकिन, मिच, हम ये सब बातें कर रहे हैं? क्या तुम्हें कभी-कभी घर पर मेरी आवाज़ सुनाई देती है? जब तुम बिल्कुल अकेले होते हो? शायद हवाई जहाज़ में? शायद अपनी कार में?"
हां, मैंने स्वीकार किया।
“तब तुम मेरे जाने के बाद मुझे नहीं भूलोगे। मेरी आवाज़ को याद करना और मैं वहीं मौजूद रहूंगा।”
अपनी आवाज के बारे में सोचें।

और अगर आप थोड़ा रोना चाहते हैं, तो कोई बात नहीं।
मॉरी। वह मुझे कॉलेज के पहले साल से ही रुलाना चाहता था। वह कहता था, "एक दिन मैं तुम्हें रुला दूंगा।"
हां, हां, मैं जवाब दूंगा।
उन्होंने कहा, "मैंने तय कर लिया था कि मेरी कब्र पर क्या लिखा होना चाहिए।" मुझे कब्रों के बारे में नहीं सुनना है।
“क्यों? क्या वे आपको घबरा देते हैं?”
मैंने कंधा उचका दिया।
हम इसे भूल सकते हैं।
नहीं, आगे बढ़ो। तुमने क्या फैसला किया?
मॉरी ने अपने होंठ फुलाए। "मैं इसके बारे में सोच रहा था: आखिरी दम तक एक शिक्षक।"
जब तक मैंने इसे आत्मसात नहीं कर लिया, तब तक वह इंतजार करता रहा।
अंत तक एक शिक्षक।
“अच्छा?” उसने कहा।
हां, मैंने कहा। बहुत बढ़िया।
मुझे वह नजारा बहुत पसंद आया जब मैं कमरे में प्रवेश करता था तो मॉरी के चेहरे पर खुशी की चमक आ जाती थी। मुझे पता है कि वह कई लोगों के साथ ऐसा करते थे, लेकिन उनकी खासियत यह थी कि वह हर आगंतुक को यह एहसास दिलाते थे कि उनकी मुस्कान अनोखी है।
“आह्ह्ह, ये तो मेरा दोस्त है,” वो मुझे देखते ही अपनी उस धुंधली, तीखी आवाज़ में कहता था। और बात सिर्फ़ अभिवादन तक ही सीमित नहीं थी। जब मॉरी आपके साथ होता था, तो वो सचमुच आपके साथ होता था। वो आपकी आँखों में सीधे देखता था और ऐसे सुनता था जैसे आप ही दुनिया के इकलौते इंसान हों। अगर हर दिन की पहली मुलाक़ात ऐसी हो—किसी वेट्रेस, बस ड्राइवर या बॉस की बड़बड़ाहट के बजाय—तो लोग आपस में कितना बेहतर तालमेल बिठा पाते?
“मैं पूरी तरह से वर्तमान में मौजूद रहने में विश्वास रखता हूँ,” मॉरी ने कहा। “इसका मतलब है कि आपको उस व्यक्ति के साथ होना चाहिए जिसके साथ आप हैं। जब मैं अभी आपसे बात कर रहा हूँ, मिच, तो मैं कोशिश करता हूँ कि मेरा ध्यान केवल हमारे बीच जो हो रहा है उस पर केंद्रित रहे। मैं उस बारे में नहीं सोच रहा हूँ जो हमने पिछले हफ्ते कहा था। मैं इस शुक्रवार को क्या होने वाला है, इसके बारे

में नहीं सोच रहा हूँ। मैं कोप्पेल शो करने या अपनी दवाइयों के बारे में भी नहीं सोच रहा हूँ।”
मैं तुमसे बात कर रहा हूँ। मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ।
मुझे याद आया कि कैसे वे ब्रैंडिस में ग्रुप प्रोसेस क्लास में इस विचार को पढ़ाया करते थे। तब मैंने इसका मज़ाक उड़ाया था, यह सोचकर कि यह किसी विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के लिए पाठ योजना के लायक तो है ही नहीं। ध्यान देना सीखना? यह कितना महत्वपूर्ण हो सकता है? अब मुझे पता है कि यह कॉलेज में हमें सिखाई गई लगभग हर चीज़ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
मॉरी ने मेरा हाथ थामने का इशारा किया, और जैसे ही मैंने अपना हाथ उसे दिया, मुझे अपराधबोध का एक तीव्र अनुभव हुआ। यह एक ऐसा व्यक्ति था जो अगर चाहे तो जागते हुए हर पल आत्म-दया में बिता सकता था, अपने शरीर के क्षय को महसूस कर सकता था, अपनी साँसों को गिन सकता था। बहुत से लोग, जिनकी समस्याएँ इससे कहीं छोटी होती हैं, इतने आत्ममग्न होते हैं कि अगर आप तीस सेकंड से ज़्यादा बोलें तो उनकी आँखें बेजान हो जाती हैं। उनके दिमाग में पहले से ही कुछ और चल रहा होता है—किसी दोस्त को फ़ोन करना, कोई फ़ैक्स भेजना, या किसी प्रेमी के बारे में दिवास्वप्न देखना। वे तभी पूरी तरह से ध्यान देते हैं जब आप बोलना समाप्त कर देते हैं, और फिर वे "हम्म" या "हाँ, सच में" कहकर अपना ध्यान वापस उसी पल पर केंद्रित कर लेते हैं।
“समस्या का एक हिस्सा, मिच, यह है कि हर कोई बहुत जल्दबाजी में है,” मॉरी ने कहा। “लोगों को अपने जीवन में कोई अर्थ नहीं मिला है, इसलिए वे हर समय उसकी तलाश में भागते रहते हैं। वे अगली कार, अगला घर, अगली नौकरी के बारे में सोचते हैं। फिर उन्हें पता चलता है कि ये चीजें भी खोखली हैं, और वे भागते ही रहते हैं।”
मैंने कहा, एक बार दौड़ना शुरू कर दो, तो खुद को रोकना मुश्किल हो जाता है। “इतना मुश्किल नहीं,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “जानते हो मैं क्या करता था? जब कोई ट्रैफिक में मुझसे आगे निकलने की कोशिश करता था—जब मैं गाड़ी चला सकता था—तो मैं अपना हाथ उठा देता था...”
उसने अब ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन हाथ कमजोर होकर केवल छह इंच ही उठा। "...मैं अपना हाथ उठाता था, मानो मैं कोई नकारात्मक इशारा करने वाला हूँ, और फिर मैं हाथ हिलाकर मुस्कुराता था। उन्हें उंगली दिखाने के बजाय, आप उन्हें जाने देते हैं और मुस्कुराते हैं।"
“आपको पता है क्या? कई बार वे भी मुस्कुराकर जवाब देते थे।”

"सच तो यह है कि मुझे अपनी कार को लेकर इतनी जल्दी करने की जरूरत नहीं है। मैं अपनी ऊर्जा लोगों की सेवा में लगाना ज्यादा पसंद करूंगा।"
वह यह काम मुझसे कहीं बेहतर तरीके से करते थे। जो लोग उनके साथ बैठते थे, वे देखते थे कि जब वे किसी भयानक घटना के बारे में बात करते थे तो उनकी आँखें नम हो जाती थीं, या जब वे उन्हें कोई घटिया चुटकुला सुनाते थे तो उनकी आँखें खुशी से खिल उठती थीं। वे हमेशा उस भावना को खुलकर व्यक्त करने के लिए तैयार रहते थे जो मेरी पीढ़ी के लोगों में अक्सर गायब रहती है। हम छोटी-मोटी बातें करने में माहिर हैं: "आप क्या करते हैं?" "आप कहाँ रहते हैं?" लेकिन किसी की बात को ध्यान से सुनना—बिना उन्हें कुछ बेचने की कोशिश किए, उन्हें लुभाने की कोशिश किए, उन्हें अपने साथ शामिल किए या बदले में किसी तरह का रुतबा हासिल करने की कोशिश किए—यह मौका हमें आजकल कितनी बार मिलता है? मेरा मानना है कि मॉरी के जीवन के अंतिम कुछ महीनों में कई आगंतुक इसलिए नहीं आए क्योंकि वे उन पर ध्यान देना चाहते थे, बल्कि इसलिए आए क्योंकि वह उन पर ध्यान देते थे। अपने व्यक्तिगत दर्द और कमजोरी के बावजूद, इस छोटे से बूढ़े व्यक्ति ने उस तरह से सुना जैसे वे हमेशा किसी से सुनना चाहते थे।
मैंने उनसे कहा कि वह ऐसे पिता हैं जिनकी हर कोई कामना करता है।
“खैर,” उसने आंखें बंद करते हुए कहा, “मुझे उस क्षेत्र में कुछ अनुभव है...” मॉरी ने अपने पिता को आखिरी बार शहर के मुर्दाघर में देखा था। चार्ली श्वार्ट्ज़ एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्हें ब्रोंक्स के ट्रेमोंट एवेन्यू पर एक स्ट्रीट लैंप के नीचे अकेले बैठकर अखबार पढ़ना पसंद था। जब मॉरी छोटे थे, तब हर रात चार्ली खाना खाने के बाद टहलने जाते थे। वे कद में छोटे थे, रूसी मूल के, लाल रंग के और घने भूरे बालों वाले एक रूसी व्यक्ति थे। मॉरी और उनके भाई डेविड खिड़की से बाहर देखते और उन्हें लैम्पपोस्ट से टिके हुए पाते, और मॉरी चाहते थे कि वे अंदर आकर उनसे बात करें, लेकिन वे ऐसा बहुत कम करते थे। न तो वे उन्हें सुलाते थे, न ही उन्हें शुभ रात्रि का चुंबन देते थे।
मॉरी हमेशा कसम खाता था कि अगर उसके बच्चे हुए तो वह उनके लिए ये सब करेगा। और सालों बाद, जब उसके बच्चे हुए, तो उसने ऐसा किया।
इसी बीच, जब मॉरी अपने बच्चों की परवरिश कर रहा था, चार्ली अभी भी ब्रोंक्स में ही रह रहा था। वह अब भी टहलने जाता था। वह अब भी अखबार पढ़ता था। एक रात, खाना खाने के बाद वह बाहर निकला। घर से कुछ ही दूरी पर, दो लुटेरों ने उसे घेर लिया।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दसवें मंगलवार को हम विवाह के बारे में बात करेंगे

मैं मॉरी से मिलवाने के लिए एक मेहमान को लेकर आया था। मेरी पत्नी।
जब से मैं यहाँ आया था, वह मुझसे यही पूछता आ रहा था, “मैं जेनीन से कब मिलूँ?” “तुम उसे कब ला रहे हो?” कुछ दिनों पहले तक मेरे पास हमेशा बहाने होते थे, फिर मैंने उसका हालचाल जानने के लिए उसके घर फोन किया।
मॉरी को रिसीवर तक पहुँचने में थोड़ा समय लगा। और जब वह वहाँ पहुँचा, तो मुझे किसी के द्वारा उसे कान से लगाने की कोशिश करने की आवाज़ सुनाई दी। वह अब खुद से फोन नहीं उठा सकता था।
“हाय्ह्ह्ह्ह्ह,” उसने हांफते हुए कहा।
आप ठीक हैं, कोच?
मैंने उसे सांस छोड़ते हुए सुना। “मिच... तुम्हारे कोच... का दिन कुछ खास अच्छा नहीं जा रहा है...”
उनकी नींद दिन-रात बिगड़ती जा रही थी। उन्हें लगभग हर रात ऑक्सीजन की ज़रूरत पड़ती थी, और उनकी खांसी के दौरे भयानक हो गए थे। एक खांसी एक घंटे तक चल सकती थी, और उन्हें कभी पता नहीं होता था कि वह रुकेगी या नहीं। वह हमेशा कहते थे कि जब बीमारी उनके फेफड़ों तक पहुंच जाएगी तो उनकी मृत्यु हो जाएगी। यह सोचकर मैं कांप उठता था कि मृत्यु कितनी करीब थी।
मैंने कहा, मंगलवार को मिलते हैं। तब आपका दिन बेहतर रहेगा।
“मिच।”
हाँ?
क्या आपकी पत्नी आपके साथ हैं?
वह मेरे बगल में बैठी थी।
"उसे फोन दो। मैं उसकी आवाज सुनना चाहता हूँ।"
अब मेरी शादी एक ऐसी महिला से हुई है जो मुझसे कहीं अधिक सहज दयालुता से परिपूर्ण है। हालाँकि वह मॉरी से कभी नहीं मिली थी, फिर भी उसने फोन उठाया— मैं तो सिर हिलाकर धीरे से कहता, “मैं यहाँ नहीं हूँ! मैं यहाँ नहीं हूँ!”—और एक मिनट में ही उसने मेरे पुराने प्रोफेसर से ऐसे बात कर ली जैसे वे कॉलेज के दिनों से एक-दूसरे को जानते हों। मुझे इसका एहसास हुआ, हालाँकि मेरी तरफ से मुझे बस इतना ही सुनाई दिया, “हम्म... मिच ने मुझे बताया... ओह, धन्यवाद...”
फोन रखने के बाद उसने कहा, "मैं अगली यात्रा में आ रही हूँ।"

और बस यही बात थी।
अब हम उनके दफ्तर में, उनकी आरामकुर्सी के चारों ओर बैठे थे। मॉरी खुद मानते थे कि वे एक सीधे-सादे इश्कबाज थे, और हालांकि उन्हें अक्सर खांसने या शौचालय जाने के लिए रुकना पड़ता था, लेकिन जेनीन के कमरे में होने से उनमें मानो नई ऊर्जा आ जाती थी। वे हमारी शादी की तस्वीरें देख रहे थे, जो जेनीन अपने साथ लाई थीं।
“आप डेट्रॉइट से हैं?” मॉरी ने कहा।
हां, जेनीन ने कहा।
“मैंने 1940 के दशक के उत्तरार्ध में एक वर्ष के लिए डेट्रॉइट में पढ़ाया था। मुझे उससे जुड़ी एक मजेदार कहानी याद है।”
वह नाक पोंछने के लिए रुका। जब उसने टिश्यू पेपर को ठीक से पकड़ नहीं पाया, तो मैंने उसे वहीं रोक दिया और उसने धीरे से उसमें नाक साफ की। मैंने टिश्यू पेपर को उसकी नाक पर हल्के से दबाया, फिर उसे हटा दिया, जैसे कोई माँ कार की सीट पर बैठे बच्चे के साथ करती है।
“धन्यवाद, मिच।” उसने जेनीन की ओर देखा। “यह मेरी सहायक है।”
जेनीन मुस्कुराई।
खैर, मेरी कहानी। विश्वविद्यालय में कई समाजशास्त्री थे, और हम अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ पोकर खेला करते थे, जिनमें एक सर्जन भी शामिल था। एक रात, खेल के बाद, उसने कहा, 'मॉरी, मैं तुम्हें काम करते देखना चाहता हूँ।' मैंने कहा, ठीक है। तो वह मेरी एक कक्षा में आया और मुझे पढ़ाते हुए देखा।
क्लास खत्म होने के बाद उन्होंने कहा, 'ठीक है, अब आप मुझे काम करते हुए देखना चाहेंगे? आज रात मेरा एक ऑपरेशन है।' मैं भी उनका एहसान चुकाना चाहता था, इसलिए मैंने हाँ कह दिया।'
“वह मुझे अस्पताल ले गया। उसने कहा, ‘अच्छी तरह से हाथ धो लो, मास्क लगा लो और गाउन पहन लो।’ और फिर मुझे पता ही नहीं चला कि मैं ऑपरेशन टेबल पर उसके ठीक बगल में थी। टेबल पर एक महिला, मरीज, कमर से नीचे नग्न अवस्था में लेटी थी। और उसने चाकू उठाया और झट से काट दिया—बस ऐसे ही! खैर...”
मॉरी ने एक उंगली उठाई और उसे घुमाया।
“...मेरी हालत कुछ इस तरह होने लगी। मैं बेहोश होने ही वाली थी। इतना सारा खून। छी! मेरे बगल में खड़ी नर्स ने पूछा, ‘क्या हुआ, डॉक्टर?’ और मैंने कहा, ‘मैं कोई डॉक्टर नहीं हूँ! मुझे यहाँ से ले चलो!’”

हम हँसे, और मॉरी भी अपनी सीमित साँसों के बावजूद जितना हो सके उतना ज़ोर से हँसा। हफ़्तों में पहली बार मुझे याद आया कि उसने इस तरह की कोई कहानी सुनाई थी। मैंने सोचा, कितनी अजीब बात है कि वह एक बार किसी और की बीमारी देखकर लगभग बेहोश हो गया था, और अब वह अपनी बीमारी को इतनी आसानी से सहन कर पा रहा था। कॉनी ने दरवाज़ा खटखटाया और कहा कि मॉरी का दोपहर का खाना तैयार है। यह वो गाजर का सूप, सब्ज़ी के केक और ग्रीक पास्ता नहीं था जो मैं उस सुबह ब्रेड एंड सर्कस से लाई थी। हालाँकि अब मैं सबसे नरम खाना खरीदने की कोशिश करती थी, फिर भी मॉरी की सीमित ताकत के कारण उसे चबाना और निगलना मुश्किल था। वह ज़्यादातर तरल सप्लीमेंट ही खाता था, कभी-कभी एक ब्रैन मफिन भी मिला देता था जब तक कि वह नरम होकर आसानी से पच न जाए। शार्लोट अब लगभग हर चीज़ को ब्लेंडर में पीस देती थी। वह स्ट्रॉ से खाना खाता था। मैं अब भी हर हफ्ते खरीदारी करती और उसे दिखाने के लिए बैग लेकर अंदर जाती, लेकिन यह ज़्यादातर उसके चेहरे की खुशी देखने के लिए होता था। जब मैं फ्रिज खोलती, तो मुझे डिब्बों का ढेर लगा हुआ दिखता। मुझे लगता है कि मैं उम्मीद कर रही थी कि एक दिन हम फिर से साथ में बैठकर असली दोपहर का खाना खाएँगे और मैं उसके चबाते हुए बात करने के बेतरतीब तरीके को देख सकूँगी, खाना खुशी-खुशी उसके मुँह से बाहर गिरता रहेगा। यह एक मूर्खतापूर्ण उम्मीद थी।
“तो... जेनीन,” मॉरी ने कहा।
वह मुस्कुराई।
“तुम बहुत प्यारी हो। मुझे अपना हाथ दो।”
उसने किया।
"मिच का कहना है कि आप एक पेशेवर गायिका हैं।"
हां, जेनीन ने कहा।
वह कहता है कि तुम बहुत अच्छे हो।
ओह, वह हंस पड़ी। नहीं। वह बस ऐसे ही कहता है।
मॉरी ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या तुम मेरे लिए कुछ गाओगे?"
जब से मैं जेनीन को जानती हूँ, तब से ही लोग उससे यह सवाल पूछते आ रहे हैं। जब लोगों को पता चलता है कि आप गायन से अपना जीवन यापन करते हैं, तो वे हमेशा कहते हैं, "हमारे लिए कुछ गाओ।" अपनी प्रतिभा को लेकर संकोची और हर परिस्थिति में पूर्णतावादी जेनीन ने कभी ऐसा नहीं किया। वह विनम्रता से मना कर देती थी। और अब मुझे यही उम्मीद थी।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ..."

[illegible] 1930 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वे जल्दबाजी में शादी कर लेते हैं और छह महीने बाद ही तलाक ले लेते हैं। उन्हें पता ही नहीं कि वे अपने जीवनसाथी में क्या चाहते हैं। उन्हें खुद का ही पता नहीं है—तो वे यह कैसे जान सकते हैं कि वे किससे शादी कर रहे हैं?” उन्होंने आह भरी। प्रोफेसर के रूप में अपने वर्षों में मॉरी ने कई दुखी प्रेमियों को सांत्वना दी थी। “यह दुखद है, क्योंकि प्रियजन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। आपको इसका एहसास तब होता है, खासकर जब आप मेरी तरह मुश्किल दौर से गुजर रहे हों। दोस्त अच्छे होते हैं, लेकिन जब आप खांस रहे हों, नींद न आ रही हो और किसी को पूरी रात आपके साथ जागकर आपको दिलासा देना हो, आपकी मदद करने की कोशिश करनी हो, तो दोस्त आपके साथ नहीं होंगे।”
शार्लेट और मॉरी, जो छात्र जीवन में मिले थे, की शादी को चौवालीस साल हो गए थे। मैं अब उन्हें साथ देखता था, जब वह उन्हें उनकी दवाइयों की याद दिलाती, या आकर उनकी गर्दन सहलाती, या उनके बेटों में से किसी एक के बारे में बात करती। वे एक टीम की तरह काम करते थे, अक्सर एक-दूसरे के मन की बात समझने के लिए उन्हें बस एक मौन नज़र की ज़रूरत होती थी। शार्लेट एकांतप्रिय व्यक्ति थीं, मॉरी से अलग, लेकिन मैं जानता था कि वह उनका कितना सम्मान करते थे, क्योंकि कभी-कभी जब हम बात करते थे, तो वह कहते थे, "शार्लेट को शायद यह जानकर असहज महसूस हो कि मैं यह बात बता रहा हूँ," और वह बातचीत समाप्त कर देते थे। यही एकमात्र समय था जब मॉरी कुछ छुपाते थे।
उन्होंने अब कहा, "मैंने शादी के बारे में इतना तो सीख लिया है। आपकी परीक्षा होती है। आपको पता चलता है कि आप कौन हैं, दूसरा व्यक्ति कौन है, और आप एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठा पाते हैं या नहीं।"
क्या ऐसा कोई नियम है जिससे पता चल सके कि शादी सफल होगी या नहीं?
मॉरी मुस्कुराया। "मामले इतने आसान नहीं हैं, मिच।"
मुझे पता है।
“फिर भी,” उन्होंने कहा, “प्यार और शादी के बारे में कुछ नियम हैं जिन्हें मैं सच मानता हूँ: अगर आप दूसरे व्यक्ति का सम्मान नहीं करते, तो आपको बहुत परेशानी होगी। अगर आप समझौता करना नहीं जानते, तो आपको बहुत परेशानी होगी। अगर आप अपने बीच की बातों को खुलकर नहीं बता सकते, तो आपको बहुत परेशानी होगी। और अगर आपके जीवन में मूल्यों का एक जैसा समूह नहीं है, तो आपको बहुत परेशानी होगी। आपके मूल्य एक जैसे होने चाहिए।”
और उन मूल्यों में सबसे महत्वपूर्ण कौन सा है, मिच?
हाँ?

"□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□"
□□□□ □□□□□, □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□
“□□□□□□□□□ □□□ □□,” □□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□, “□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□”
□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□: "□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□"

□□□ □□, □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□, □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□-□□□□ □□ □□□ □□□
“□□□□ □□□□ □□?” □□ □□□□ □□□
□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□?
“□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□?”
□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□
"□□□□ □□□ □□□"
□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□□□ □□, □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□...
“□□□□ □□□□□□□□□□”
□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□
"□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□"
□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□ □□□ □□□ □□□...
□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□?
□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□?
□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□
“□□□□ □□□□ □□,” □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□, “□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□”

ग्यारहवें मंगलवार को हम अपनी संस्कृति के बारे में बात करेंगे

उसे और जोर से मारो।
मैंने मॉरी की पीठ पर थप्पड़ मारा।
"और जोर से।"
मैंने उसे फिर से थप्पड़ मारा।
"उसके कंधों के पास... अब नीचे की ओर।"
मॉरी, पायजामा पहने, बिस्तर पर करवट लेकर लेटा हुआ था, उसका सिर तकिए से सटा हुआ था और मुंह खुला हुआ था। फिजियोथेरेपिस्ट मुझे उसके फेफड़ों में जमे ज़हर को निकालने का तरीका बता रही थी—जिसे अब उसे नियमित रूप से करवाना ज़रूरी था, ताकि वह जम न जाए और वह सांस ले सके।
“मुझे… हमेशा से पता था… कि तुम… मुझे मारना चाहते थे…” मॉरी हांफते हुए बोला।
हां, मैंने मजाक में कहा और उसकी पीठ की संगमरमरी त्वचा पर मुक्का मारा। ये उस 'बी' ग्रेड के लिए है जो तुमने मुझे सेकंड ईयर में दिया था! धड़ाम!
हम सब हँसे, एक घबराहट भरी हँसी जो तब आती है जब शैतान आस-पास हो। यह छोटा सा दृश्य प्यारा होता, अगर यह वह न होता जो हम सब जानते थे - मृत्यु से पहले की कसरत। मॉरी की बीमारी अब उसके अंत के बेहद करीब पहुँच चुकी थी, उसके फेफड़ों के पास। वह भविष्यवाणी कर रहा था कि उसकी मृत्यु दम घुटने से होगी, और मैं इससे ज़्यादा भयानक मौत की कल्पना भी नहीं कर सकता था। कभी-कभी वह अपनी आँखें बंद कर लेता और मुँह और नाक से हवा खींचने की कोशिश करता, और ऐसा लगता जैसे वह कोई लंगर उठाने की कोशिश कर रहा हो।
बाहर, जैकेट पहनने लायक मौसम था, अक्टूबर की शुरुआत थी, वेस्ट न्यूटन के आसपास के लॉन में पत्तियाँ ढेरों में जमी हुई थीं। मॉरी के फिजियोथेरेपिस्ट दिन में पहले ही आ चुके थे, और जब भी नर्स या विशेषज्ञ उनसे मिलने आते थे, मैं आमतौर पर वहाँ से चली जाती थी। लेकिन जैसे-जैसे हफ्ते बीतते गए और हमारा समय कम होता गया, मुझे शारीरिक शर्मिंदगी का एहसास कम होता गया। मैं वहाँ रहना चाहती थी। मैं सब कुछ देखना चाहती थी। यह मेरे स्वभाव के विपरीत था, लेकिन पिछले कुछ महीनों में मॉरी के घर में जो कुछ भी हुआ था, वह भी मेरे स्वभाव के विपरीत ही था।

तो मैंने थेरेपिस्ट को बिस्तर पर लेटे हुए मॉरी का इलाज करते देखा, वह उसकी पसलियों के पीछे हल्के-हल्के थपथपा रही थी और पूछ रही थी कि क्या उसे अपने अंदर जकड़न कम होती महसूस हो रही है। और जब उसने थोड़ा आराम किया, तो उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं भी इसे आजमाना चाहता हूँ। मैंने हाँ कहा। मॉरी ने तकिए पर अपना चेहरा रखकर हल्की सी मुस्कान दी।
“ज्यादा मुश्किल नहीं,” उन्होंने कहा। “मैं बूढ़ा आदमी हूँ।”
मैंने निर्देशानुसार इधर-उधर घूमते हुए उसकी पीठ और बगल पर थपथपाया। मुझे किसी भी हालत में मॉरी का बिस्तर पर लेटे रहना बिल्कुल पसंद नहीं था (उसका आखिरी कथन, "जब तुम बिस्तर पर होते हो, तो तुम मरे हुए के समान होते हो," मेरे कानों में गूंज रहा था), और करवट लेकर लेटा हुआ वह इतना छोटा, इतना मुरझाया हुआ था कि वह किसी आदमी के शरीर से ज़्यादा एक लड़के का शरीर लग रहा था। मैंने उसकी त्वचा का पीलापन, बिखरे हुए सफेद बाल, और उसके हाथों का बेजान और असहाय लटकना देखा। मैंने सोचा कि हम अपने शरीर को संवारने में कितना समय बिताते हैं, वज़न उठाते हैं, सिट-अप्स करते हैं, और अंत में प्रकृति उसे हमसे छीन ही लेती है। मेरी उंगलियों के नीचे, मैंने मॉरी की हड्डियों के आसपास की ढीली त्वचा को महसूस किया, और निर्देशानुसार मैंने उसे ज़ोर से थपथपाया। सच तो यह है कि मैं उसकी पीठ पर तब थपथपा रही थी जब मेरा मन दीवारों पर मुक्के मारने का कर रहा था।
“मिच?” मॉरी हांफते हुए बोला, उसकी आवाज किसी जैक-हैमर की तरह कांप रही थी क्योंकि मैं उस पर लगातार वार कर रहा था।
अहां?
“मैंने तुम्हें बी ग्रेड कब दिया था?”
मॉरी लोगों में अंतर्निहित अच्छाई पर विश्वास करते थे। लेकिन उन्होंने यह भी देखा कि वे क्या बन सकते हैं।
उन्होंने उसी दिन बाद में कहा, “लोग तभी क्रूर बनते हैं जब उन्हें खतरा महसूस होता है, और यही हमारी संस्कृति का नियम है। यही हमारी अर्थव्यवस्था का नियम है। हमारी अर्थव्यवस्था में जिन लोगों के पास नौकरियां हैं, उन्हें भी खतरा महसूस होता है, क्योंकि उन्हें अपनी नौकरी खोने का डर रहता है। और जब आपको खतरा महसूस होता है, तो आप सिर्फ अपने बारे में सोचने लगते हैं। आप पैसे को ही भगवान मानने लगते हैं। यह सब हमारी संस्कृति का हिस्सा है।”
उसने गहरी सांस ली। "इसीलिए मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता।"

मैंने उसे सिर हिलाकर अभिवादन किया और उसका हाथ हल्के से दबाया। अब हम अक्सर हाथ पकड़ते थे। यह मेरे लिए एक और बदलाव था। जो चीजें पहले मुझे शर्मिंदा या असहज कर देती थीं, अब वे सामान्य बात हो गई थीं। कैथेटर बैग, जो उसके अंदर लगी नली से जुड़ा था और हरे रंग के अपशिष्ट पदार्थ से भरा था, उसकी कुर्सी के पैर के पास मेरे पैर के बगल में पड़ा था। कुछ महीने पहले, शायद यह मुझे घृणास्पद लगता; लेकिन अब इसका कोई महत्व नहीं था। मॉरी के कमोड इस्तेमाल करने के बाद कमरे की गंध भी वैसी ही थी। उसके पास इधर-उधर जाने, बाथरूम का दरवाजा बंद करने या जाते समय एयर फ्रेशनर छिड़कने जैसी सुविधाएँ नहीं थीं। उसका बिस्तर था, उसकी कुर्सी थी, और यही उसका जीवन था। अगर मेरा जीवन इतनी छोटी सी जगह में सिमट जाए, तो मुझे शक है कि मैं उसे इससे बेहतर बना पाऊँगी।
“अपनी खुद की एक छोटी उपसंस्कृति बनाने से मेरा मतलब यह है,” मॉरी ने कहा। “मेरा मतलब यह नहीं है कि आप अपने समुदाय के हर नियम की अवहेलना करें। उदाहरण के लिए, मैं नंगा नहीं घूमता। मैं लाल बत्ती पर गाड़ी नहीं चलाता। छोटी-छोटी बातों का मैं पालन कर सकता हूँ। लेकिन बड़ी बातें—हम कैसे सोचते हैं, हम किन चीजों को महत्व देते हैं—ये आपको खुद चुननी होंगी। आप किसी को—या किसी समाज को—ये आपके लिए तय करने नहीं दे सकते।”
"मेरी स्थिति को ही ले लीजिए। जिन चीजों को लेकर मुझे अब शर्म महसूस करनी चाहिए - जैसे चल न पाना, शौच न कर पाना, कुछ सुबह उठकर रोने का मन होना - उनमें स्वाभाविक रूप से शर्मिंदगी या लज्जाजनक कुछ भी नहीं है।"
"महिलाओं के पर्याप्त पतली न होने या पुरुषों के पर्याप्त अमीर न होने के मामले में भी यही बात लागू होती है। हमारी संस्कृति आपको यही विश्वास दिलाना चाहती है। इस पर विश्वास मत कीजिए।"
मैंने मॉरी से पूछा कि जब वह छोटा था तो वह कहीं और क्यों नहीं चला गया। "कहाँ?"
मुझे नहीं पता। दक्षिण अमेरिका। न्यू गिनी। कोई ऐसी जगह जो अमेरिका जितनी स्वार्थी न हो।
“हर समाज की अपनी समस्याएं होती हैं,” मॉरी ने अपनी भौहें उठाते हुए कहा, मानो वह कंधे उचका रहा हो। “मुझे लगता है कि इससे निपटने का तरीका भाग जाना नहीं है। आपको अपनी संस्कृति बनाने के लिए मेहनत करनी होगी।”
“देखो, तुम कहीं भी रहो, हम इंसानों की सबसे बड़ी कमी हमारी दूरदर्शिता की कमी है। हम यह नहीं देख पाते कि हम क्या बन सकते हैं। हमें अपनी क्षमता को पहचानना चाहिए, खुद को उस हर मुकाम तक पहुंचाना चाहिए जहां हम पहुंच सकते हैं। लेकिन

अगर आप ऐसे लोगों से घिरे हैं जो कहते हैं 'मुझे अभी अपना चाहिए', तो अंत में कुछ ही लोग सब कुछ हासिल कर लेते हैं और एक सेना गरीबों को विद्रोह करने और उसे छीनने से रोकने के लिए खड़ी रहती है।”
मॉरी ने मेरे कंधे के ऊपर से दूर वाली खिड़की की ओर देखा। कभी-कभी वहां से गुजरते ट्रक की आवाज या हवा के तेज झोंके की आवाज सुनाई देती थी। उसने कुछ पल अपने पड़ोसियों के घरों को देखा, फिर अपनी बात जारी रखी।
“समस्या यह है, मिच, कि हम यह नहीं मानते कि हम वास्तव में कितने एक जैसे हैं। गोरे और काले, कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, पुरुष और महिलाएं। अगर हम एक-दूसरे को अधिक समान समझते, तो शायद हम इस दुनिया में एक बड़े मानव परिवार में शामिल होने के लिए बहुत उत्सुक होते, और उस परिवार की उतनी ही परवाह करते जितनी हम अपने परिवार की करते हैं।”
लेकिन यकीन मानिए, जब आप मर रहे होंगे, तब आपको यह सच लगेगा। हम सबका आरंभ एक ही है—जन्म—और हम सबका अंत भी एक ही है—मृत्यु। तो फिर हम कितने अलग हो सकते हैं?
“मानव परिवार में निवेश करें। लोगों में निवेश करें। अपने प्रियजनों और जो आपसे प्यार करते हैं, उनका एक छोटा सा समुदाय बनाएं।”
उन्होंने मेरा हाथ धीरे से दबाया। मैंने भी उनका हाथ और ज़ोर से दबाया। और ठीक उस मेले की प्रतियोगिता की तरह, जिसमें हथौड़ा मारकर डिस्क को खंभे पर ऊपर उठते देखा जाता है, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर की गर्मी मॉरी की छाती और गर्दन से होते हुए उनके गालों और आँखों तक पहुँच रही हो। वे मुस्कुराए। "जीवन की शुरुआत में, जब हम शिशु होते हैं, तो हमें जीवित रहने के लिए दूसरों की आवश्यकता होती है, है ना? और जीवन के अंत में, जब आप मेरी तरह हो जाते हैं, तब भी आपको जीवित रहने के लिए दूसरों की आवश्यकता होती है, है ना?"
उनकी आवाज धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई। "लेकिन असली बात यह है: इस बीच, हमें दूसरों की भी जरूरत होती है।"
उसी दोपहर बाद, कॉनी और मैं ओ. जे. सिम्पसन के फैसले को देखने के लिए बेडरूम में गए। माहौल तनावपूर्ण था क्योंकि सभी मुख्य पात्र जूरी की ओर मुड़ गए थे। सिम्पसन अपने नीले सूट में, वकीलों की अपनी छोटी सी टीम से घिरे हुए थे, और उन्हें सलाखों के पीछे भेजने वाले अभियोजक उनसे कुछ ही दूरी पर खड़े थे। जब फोरमैन ने फैसला सुनाया—"दोषी नहीं"—तो कॉनी चीख पड़ी।
"अरे बाप रे!"

[illegible]

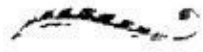

[illegible]

ऑडियोविजुअल, भाग तीन
“नाइटलाइन” की टीम तीसरी और आखिरी बार वापस आई। अब माहौल पूरी तरह बदल चुका था। यह किसी साक्षात्कार से ज़्यादा एक दुखद विदाई जैसा लग रहा था। टेड कोप्पेल ने आने से पहले कई बार फोन किया था और मॉरी से पूछा था, “क्या आपको लगता है कि आप इसे संभाल पाएंगे?”
मॉरी को यकीन नहीं था कि वह ऐसा कर पाएगा। "टेड, मैं आजकल हर समय थका हुआ रहता हूँ। और मुझे बहुत घुटन होती है। अगर मैं कुछ नहीं कह पाऊँ, तो क्या तुम मेरे लिए कहोगे?"
कोप्पेल ने हां कहा। और फिर आमतौर पर शांत रहने वाले एंकर ने आगे कहा, "अगर आप यह नहीं करना चाहते, मॉरी, तो कोई बात नहीं। मैं फिर भी आकर आपको अलविदा कह दूंगी।"
बाद में, मॉरी शरारती मुस्कान के साथ कहते, "मैं उस पर असर डाल रहा हूँ।" और सच में ऐसा हो रहा था। कोप्पेल अब मॉरी को "एक दोस्त" कहकर पुकारते थे। मेरे पुराने प्रोफेसर ने तो टेलीविजन जगत से भी सहानुभूति जगा दी थी।
शुक्रवार की दोपहर को हुए इंटरव्यू के लिए मॉरी ने वही कमीज़ पहनी थी जो उन्होंने एक दिन पहले पहनी थी। उस समय तक वे हर दूसरे दिन कमीज़ बदलते थे, और यह दूसरा दिन नहीं था, तो फिर इस आदत को तोड़ने की क्या ज़रूरत थी? कोप्पेल-श्वार्ट्ज के पिछले दो सत्रों के विपरीत, यह सत्र पूरी तरह से मॉरी के अध्ययन कक्ष में आयोजित किया गया था, जहाँ मॉरी अपनी कुर्सी के कैदी बन गए थे। कोप्पेल, जिन्होंने मेरे पुराने प्रोफेसर को पहली बार देखते ही चूमा था, अब कैमरे के लेंस में दिखाई देने के लिए किताबों की अलमारी के बगल में सिमटकर बैठना पड़ा।
शुरू करने से पहले, कोप्पेल ने बीमारी की प्रगति के बारे में पूछा। "यह कितनी गंभीर है, मॉरी?"
मॉरी ने कमजोरी से अपना हाथ पेट के आधे हिस्से तक उठाया। वह इससे आगे नहीं जा सकता था।
कोप्पेल को अपना जवाब मिल गया था।
कैमरा चालू हुआ, तीसरा और अंतिम साक्षात्कार। कोप्पेल ने पूछा कि क्या मृत्यु निकट होने के कारण मॉरी को अब अधिक भय लग रहा है? मॉरी ने कहा नहीं; सच कहूँ तो, उन्हें कम भय लग रहा था। उन्होंने कहा कि वे बाहरी दुनिया से कुछ हद

तक दूरी बना रहे थे, अब वे अखबार कम पढ़ते थे, चिट्ठियों पर कम ध्यान देते थे, इसके बजाय वे संगीत अधिक सुनते थे और खिड़की से पत्तियों का रंग बदलते देखते थे।
मॉरी को पता था कि कुछ और लोग भी एएलएस से पीड़ित थे, जिनमें से कुछ प्रसिद्ध थे, जैसे कि प्रतिभाशाली भौतिक विज्ञानी और 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' के लेखक स्टीफन हॉकिंग। उनके गले में छेद था, वे कंप्यूटर सिंथेसाइज़र के माध्यम से बोलते थे और आंखों के झपकने से शब्द टाइप करते थे, जिसे एक सेंसर पकड़ लेता था।
यह सराहनीय था, लेकिन मॉरी इस तरह जीना नहीं चाहता था। उसने कोप्पेल से कहा कि वह जानता है कि अलविदा कहने का समय कब आएगा।
“मेरे लिए, टेड, जीने का मतलब है कि मैं दूसरे व्यक्ति के प्रति संवेदनशील रह सकूँ। इसका मतलब है कि मैं अपनी भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त कर सकूँ। उनसे बात कर सकूँ। उनके साथ महसूस कर सकूँ...”
उसने गहरी सांस ली। "जब वह चला जाएगा, तो मॉरी भी चला जाएगा।"
वे दोस्तों की तरह बातें कर रहे थे। पिछले दो साक्षात्कारों की तरह, कोप्पेल ने "पुराने गुदा पोंछने वाले परीक्षण" के बारे में पूछा—शायद हास्यपूर्ण जवाब की उम्मीद में। लेकिन मॉरी इतने थके हुए थे कि मुस्कुरा भी नहीं पाए। उन्होंने सिर हिलाया। "जब मैं कमोड पर बैठता हूँ, तो सीधा नहीं बैठ पाता। मैं हर समय एक तरफ झुकता रहता हूँ, इसलिए उन्हें मुझे पकड़ना पड़ता है। जब मेरा काम हो जाता है, तो उन्हें मुझे पोंछना पड़ता है। हालत इतनी खराब हो गई है।" उन्होंने कोप्पेल से कहा कि वे शांति से मरना चाहते हैं। उन्होंने अपना नवीनतम आदर्श वाक्य साझा किया: "जल्दी हार मत मानो, लेकिन बहुत देर तक पकड़े भी मत रहो।"
कोप्पेल ने दर्द भरी मुस्कान के साथ सिर हिलाया। पहले "नाइटलाइन" शो और इस शो के बीच केवल छह महीने ही बीते थे, लेकिन मॉरी श्वार्ट्ज़ का शरीर स्पष्ट रूप से टूट चुका था। राष्ट्रीय टीवी दर्शकों के सामने उनका पतन हो चुका था, मानो उनकी मृत्यु एक लघु श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत की गई हो। लेकिन जैसे-जैसे उनका शरीर सड़ता गया, उनका व्यक्तित्व और भी अधिक निखरता गया।
साक्षात्कार के अंत में, कैमरा मॉरी पर ज़ूम हुआ—कोप्पेल तो तस्वीर में थे ही नहीं, केवल उनकी आवाज़ ही सुनाई दे रही थी—और एंकर ने पूछा कि क्या मेरे पुराने प्रोफेसर उन लाखों लोगों से कुछ कहना चाहते हैं, जिन पर उनका प्रभाव

पड़ा था। हालाँकि उनका इरादा ऐसा नहीं था, फिर भी मुझे ऐसा लगा जैसे किसी दोषी व्यक्ति से उसके अंतिम शब्द पूछे जा रहे हों।
“दयालु बनो,” मॉरी ने फुसफुसाते हुए कहा। “और एक-दूसरे की ज़िम्मेदारी लो। अगर हम ये सबक सीख लें, तो यह दुनिया कितनी बेहतर जगह बन जाएगी।”
उन्होंने गहरी सांस ली, फिर अपना मंत्र दोहराया: "एक दूसरे से प्यार करो या मर जाओ।"
इंटरव्यू खत्म हो गया था। लेकिन किसी कारणवश कैमरामैन ने फिल्म चालू ही छोड़ दी, और आखिरी दृश्य रिकॉर्ड हो गया।
“आपने अच्छा काम किया,” कोप्पेल ने कहा।
मॉरी ने फीकी सी मुस्कान दी।
“मैंने तुम्हें वही दिया जो मेरे पास था,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
“तुम हमेशा ऐसा करते हो।”
“टेड, यह बीमारी मेरी आत्मा पर प्रहार कर रही है। लेकिन यह मेरी आत्मा को नहीं हरा पाएगी। यह मेरे शरीर को हरा देगी। यह मेरी आत्मा को नहीं हरा पाएगी।” कोप्पेल की आंखों में आंसू आ गए थे। "तुमने अच्छा किया।"
“क्या तुम्हें ऐसा लगता है?” मॉरी ने छत की ओर देखते हुए अपनी आँखें घुमाईं। “मैं अभी ऊपर बैठे उनसे सौदेबाजी कर रहा हूँ। मैं उनसे पूछ रहा हूँ, ‘क्या मुझे स्वर्गदूतों में से एक बनने का मौका मिलेगा?’”
यह पहली बार था जब मॉरी ने भगवान से बात करने की बात स्वीकार की।

बारहवें मंगलवार को हम क्षमा के बारे में बात करेंगे

"मरने से पहले खुद को माफ कर लो। फिर दूसरों को माफ करो।"
यह "नाइटलाइन" इंटरव्यू के कुछ दिनों बाद की बात है। आसमान में बारिश हो रही थी और बादल छाए हुए थे, और मॉरी कंबल ओढ़े हुए थे। मैं उनकी कुर्सी के दूसरे छोर पर बैठी थी, उनके नंगे पैर पकड़े हुए। उनके पैर खुरदुरे और मुड़े हुए थे, और उनके नाखूनों का रंग पीला पड़ गया था। मेरे पास लोशन की एक छोटी सी बोतल थी, मैंने उसमें से थोड़ा सा लोशन अपने हाथों में निकाला और उनके टखनों की मालिश करने लगी।
यह उन कामों में से एक था जो मैंने महीनों से उसके सहायकों को करते देखा था, और अब, उसकी यादों को सहेजने की कोशिश में, मैंने खुद यह काम करने का बीड़ा उठाया था। बीमारी के कारण मॉरी अपने पैर की उंगलियां भी हिला नहीं पाता था, फिर भी उसे दर्द महसूस होता था, और मालिश से उसे आराम मिलता था। साथ ही, ज़ाहिर है, मॉरी को गोद में लेना और छूना अच्छा लगता था। और इस समय, उसे खुश करने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार थी।
“मिच,” उसने क्षमा के विषय पर लौटते हुए कहा। “बदला लेने या हठ करने का कोई फायदा नहीं है। ये बातें”—उसने आह भरी—“ये वो बातें हैं जिनका मुझे अपने जीवन में बहुत पछतावा है। अहंकार। घमंड। हम ऐसा क्यों करते हैं?”
मेरा सवाल था कि क्षमा करने का महत्व क्या है। मैंने वो फिल्में देखी थीं जिनमें परिवार का मुखिया अपनी मृत्युशय्या पर होता है और मरने से पहले अपने बिछड़े हुए बेटे को बुलाता है ताकि उससे सुलह कर सके। मैंने सोचा कि क्या मॉरी के भीतर भी ऐसा ही कुछ था, मरने से पहले अचानक "मुझे माफ कर दो" कहने की ज़रूरत महसूस हुई?
मॉरी ने सिर हिलाया। "क्या तुम्हें वह मूर्ति दिख रही है?" उसने अपना सिर अपने कार्यालय की पिछली दीवार से लगी एक ऊँची शेल्फ पर रखी एक छोटी सी मूर्ति की ओर झुकाया। मैंने इसे पहले कभी ध्यान से नहीं देखा था। कांसे से बनी उस मूर्ति में चालीस वर्ष की आयु के आसपास के एक व्यक्ति का चेहरा था, जिसने टाई पहनी हुई थी और माथे पर बालों का एक गुच्छा बिखरा हुआ था।
“ये मैं ही हूँ,” मॉरी ने कहा। “मेरे एक दोस्त ने इसे लगभग तीस साल पहले बनाया था। उसका नाम नॉर्मन था। हम साथ में बहुत समय बिताते थे। हम तैरने जाते थे।

न्यूयॉर्क घूमने जाते थे। उसने मुझे कैम्ब्रिज स्थित अपने घर बुलाया था और उसने अपने तहखाने में मेरी ये प्रतिमा बनाई थी। इसे बनाने में कई हफ्ते लग गए, लेकिन वह इसे बिल्कुल सही बनाना चाहता था।”
मैंने चेहरे को गौर से देखा। एक त्रि-आयामी मॉरी को देखना कितना अजीब था, इतना स्वस्थ, इतना युवा, हमारी बातचीत के दौरान हमें देख रहा था। कांस्य में भी, उसके चेहरे पर एक चंचल भाव था, और मुझे लगा कि इस मित्र ने एक छोटी सी आत्मा को भी तराशा है।
“खैर, कहानी का दुखद पहलू ये है,” मॉरी ने कहा। “नॉर्मन और उसकी पत्नी शिकागो चले गए। कुछ समय बाद, मेरी पत्नी शार्लोट का एक गंभीर ऑपरेशन हुआ। नॉर्मन और उसकी पत्नी ने हमसे कभी संपर्क नहीं किया। मुझे पता है कि उन्हें इसके बारे में पता था। शार्लोट और मैं बहुत दुखी हुए क्योंकि उन्होंने कभी फोन करके उसका हालचाल नहीं पूछा। इसलिए हमने उनसे रिश्ता तोड़ दिया।”
"पिछले कुछ वर्षों में, मैं नॉर्मन से कई बार मिला और उसने हमेशा सुलह करने की कोशिश की, लेकिन मैंने इसे स्वीकार नहीं किया। मैं उसकी व्याख्या से संतुष्ट नहीं था। मैं स्वाभिमानी था। मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया।"
उसके गले से आवाज़ नहीं निकल सकी।
“मिच... कुछ साल पहले... कैंसर से उनकी मृत्यु हो गई। मुझे बहुत दुख हुआ। मैं उनसे मिल नहीं पाई। मैं उन्हें कभी माफ नहीं कर पाई। अब मुझे बहुत तकलीफ होती है...”
वह फिर से रो रहा था, एक धीमी और शांत रोने की आवाज, और चूंकि उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, इसलिए आंसू उसके होठों तक पहुंचने से पहले ही उसके चेहरे के किनारे से लुढ़क गए।
मैंने कहा, "माफ़ कीजिएगा।"
“चिंता मत करो,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “आंसू आना ठीक है।”
मैं उसके बेजान पैर की उंगलियों पर लोशन मलती रही। वह कुछ मिनटों तक रोता रहा, अपनी यादों में खोया हुआ।
“हमें सिर्फ दूसरों को ही माफ नहीं करना है, मिच,” उसने अंत में फुसफुसाते हुए कहा। “हमें खुद को भी माफ करना होगा।”
हम स्वयं?
“हाँ। उन सभी चीजों के लिए जो हमने नहीं कीं। उन सभी चीजों के लिए जो हमें करनी चाहिए थीं। जो होना चाहिए था, उसके पछतावे में उलझे नहीं रह सकते। जब आप उस मुकाम पर पहुँच जाते हैं जहाँ मैं हूँ, तो यह पछतावा आपकी मदद नहीं करता।”

“मैं हमेशा यही सोचती थी कि काश मैंने अपने काम में और भी कुछ किया होता; काश मैंने और किताबें लिखी होतीं। मैं इसके लिए खुद को बहुत कोसती थी। अब मुझे समझ आता है कि इससे कभी कोई फायदा नहीं हुआ। शांति बनाए रखें। आपको खुद से और अपने आस-पास के सभी लोगों से शांति बनाए रखनी होगी।”
मैंने झुककर टिशू से आंसू पोंछे। मॉरी ने अपनी आंखें खोलीं और बंद कीं। उसकी सांसें हल्की खर्राटे जैसी सुनाई दे रही थीं।
“खुद को माफ करो। दूसरों को माफ करो। इंतजार मत करो, मिच। हर किसी को उतना समय नहीं मिलता जितना मुझे मिल रहा है। हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता।”
मैंने टिश्यू को कूड़ेदान में फेंक दिया और उसके पैरों के पास लौट आया। किस्मत अच्छी थी? मैंने अपने अंगूठे को उसकी सख्त त्वचा पर दबाया और उसे जरा भी एहसास नहीं हुआ।
“विपरीत तत्वों का तनाव, मिच। याद है? वो चीजें जो अलग-अलग दिशाओं में खींचती हैं?”
मुझे याद है।
"मैं अपने घटते समय पर शोक व्यक्त करता हूं, लेकिन मुझे इस बात का भी सौभाग्य प्राप्त है कि यह मुझे चीजों को सही करने का अवसर देता है।"
हम कुछ देर तक चुपचाप वहीं बैठे रहे, बारिश की बूँदें खिड़कियों पर पड़ रही थीं। उसके सिर के पीछे लगा गुड़हल का पौधा अभी भी टिका हुआ था, छोटा लेकिन मज़बूत।
“मिच,” मॉरी ने फुसफुसाते हुए कहा।
अहां?
मैं अपनी उंगलियों के बीच उसकी उंगलियों को घुमा रहा था, उस काम में पूरी तरह खोया हुआ था।
"मेरी तरफ देखो।"
मैंने ऊपर देखा और उसकी आँखों में अत्यंत तीव्र भाव देखा।
मुझे नहीं पता कि तुम मेरे पास वापस क्यों आए। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूँ... वह रुका और उसकी आवाज भर्रा गई।
"अगर मुझे एक और बेटा हो सकता, तो मैं चाहता कि वह तुम होते।"
मैंने अपनी निगाहें झुका लीं और अपनी उंगलियों से उसके पैरों की मरती हुई त्वचा को सहलाने लगी। एक पल के लिए मुझे डर लगा, मानो उसके शब्दों को स्वीकार करना अपने पिता के साथ विश्वासघात करना हो। लेकिन जब मैंने ऊपर देखा, तो मॉरी

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□□
□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□

□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□
□□ □□□□ □□?
“□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□”
□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□?
□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□
□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□
□□□□ □□ □□□□□?
□□□□□ □□□□?
“□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□”
□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□
“□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□?”
□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□
“□□□□ □□□ □□□□,” □□ □□□□ □□□
□□□ □□□□ □□□ □□□□
“□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□? □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□?”
□□□□ □□□□□□□□□?
"□□□□"
□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□?
□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□?
□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□ □□□□□, □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□? □□□□ □□□ □□□□□ □□□? □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□□ □ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

“□□□, □□□ □□□…”

□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□

□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□

तेरहवें मंगलवार को हम एक आदर्श दिन के बारे में बात करते हैं

मॉरी का अंतिम संस्कार दाह संस्कार द्वारा किया जाना था। उन्होंने इस बारे में शार्लोट से बात की थी और दोनों ने मिलकर यह तय किया था कि यही सबसे अच्छा तरीका है। ब्रैंडिस के रब्बी, ए 1 एक्सलराड—जो उनके पुराने मित्र थे और जिन्हें उन्होंने अंतिम संस्कार कराने के लिए चुना था—मॉरी से मिलने आए थे और मॉरी ने उन्हें अपने अंतिम संस्कार की योजना के बारे में बताया था।
और अल?
"हाँ?"
"ध्यान रखना कि वे मुझे ज्यादा न पका दें।"
रब्बी स्तब्ध रह गया। लेकिन मॉरी अब अपने शरीर के बारे में मज़ाक कर सकता था। जैसे-जैसे वह अंत के करीब आता गया, उसे अपना शरीर महज़ एक खोखला ढाँचा, आत्मा का पात्र लगने लगा। वैसे भी वह सूखकर बेकार चमड़ी और हड्डियों का ढाँचा बन रहा था, जिससे उसे त्यागना आसान हो गया।
जब मैं बैठा तो मॉरी ने मुझसे कहा, "हमें मौत को देखने से बहुत डर लगता है।" मैंने उसके कॉलर पर लगे माइक्रोफोन को ठीक किया, लेकिन वह बार-बार गिर रहा था। मॉरी को खांसी आ रही थी। अब उसे लगातार खांसी आ रही थी।
“मैंने कुछ दिन पहले एक किताब पढ़ी। उसमें लिखा था कि अस्पताल में किसी की मृत्यु होते ही, उसके सिर पर चादर ओढ़ दी जाती है, और शव को किसी नाली तक ले जाकर नीचे धकेल दिया जाता है। वे उसे अपनी आँखों से दूर करने के लिए बेचैन रहते हैं। लोग ऐसे व्यवहार करते हैं मानो मृत्यु संक्रामक हो।”
मैंने माइक्रोफोन को संभालने में गलती की। मॉरी ने मेरी ओर देखा।
“यह संक्रामक नहीं है, आप जानते हैं। मृत्यु उतनी ही स्वाभाविक है जितनी जीवन। यह हमारे बीच हुए समझौते का हिस्सा है।”
उन्हें फिर खांसी आई, और मैं पीछे हटकर इंतज़ार करने लगा, हमेशा किसी गंभीर बात की आशंका से सतर्क रहता था। मॉरी की रातें आजकल बहुत खराब चल रही थीं। डरावनी रातें। वह कुछ ही घंटों तक सो पाते थे, फिर खांसी के तेज दौरे से उनकी नींद खुल जाती थी। नर्सें कमरे में आतीं, उनकी पीठ थपथपातीं, और ज़हर निकालने की कोशिश करतीं। भले ही वे उन्हें ऑक्सीजन मशीन की मदद से फिर से सामान्य रूप

से सांस लेने में सक्षम बना देतीं, फिर भी इस संघर्ष के कारण वह अगले पूरे दिन थका हुआ महसूस करते।
अब ऑक्सीजन ट्यूब उसकी नाक में लगी हुई थी। मुझे यह दृश्य बहुत बुरा लग रहा था। मेरे लिए, यह बेबसी का प्रतीक था। मैं इसे खींचकर निकालना चाहता था।
“कल रात…” मॉरी ने धीमी आवाज़ में कहा।
हाँ? कल रात?
“...मुझे बहुत तकलीफ हुई। यह घंटों तक चलती रही। और मुझे सच में यकीन नहीं था कि मैं बच पाऊँगी। साँस नहीं आ रही थी। घुटन खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। एक समय ऐसा आया जब मुझे चक्कर आने लगे... और फिर मुझे एक अजीब सी शांति का एहसास हुआ, मुझे लगा कि मैं जाने के लिए तैयार हूँ।”
उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। “मिच, यह एक अविश्वसनीय एहसास था। जो हो रहा था उसे स्वीकार करने और शांति महसूस करने का अनुभव। मैं पिछले हफ्ते देखे गए एक सपने के बारे में सोच रहा था, जिसमें मैं एक पुल पार करके किसी अज्ञात जगह की ओर जा रहा था। आगे जो भी हो, उसके लिए तैयार रहना।”
लेकिन आपने ऐसा नहीं किया।
मॉरी ने एक पल इंतजार किया। उसने अपना सिर हल्के से हिलाया। "नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। लेकिन मुझे लगा कि मैं कर सकता था। क्या तुम समझते हो?"
“हम सब यही तो खोज रहे हैं। मृत्यु के विचार के साथ एक प्रकार की शांति। अगर हमें पता है कि अंततः हम मृत्यु के साथ वह शांति प्राप्त कर सकते हैं, तो हम आखिरकार सबसे कठिन काम कर सकते हैं।”
वह क्या है?
"जीवन के साथ शांति स्थापित करें।"
उन्होंने अपने पीछे चबूतरे पर लगे गुड़हल के पौधे को देखने की इच्छा जताई। मैंने उसे हथेली में उठाकर उनकी आँखों के पास ले गई। वे मुस्कुराए।
“मरना स्वाभाविक है,” उन्होंने फिर कहा। “हम इस पर इतना हंगामा इसलिए करते हैं क्योंकि हम खुद को प्रकृति का हिस्सा नहीं मानते। हम सोचते हैं कि इंसान होने के नाते हम प्रकृति से ऊपर हैं।”
उसने पौधे को देखकर मुस्कुराया।
“हम नहीं हैं। जो भी जन्म लेता है, मर जाता है।” उसने मेरी तरफ देखा।
“क्या आप इसे स्वीकार करते हैं?”
हाँ।

“ठीक है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “अब असली बात सुनो। अब समझो कि हम इन अद्भुत पौधों और जानवरों से कैसे अलग हैं।”
जब तक हम एक-दूसरे से प्यार कर सकते हैं, और उस प्यार की भावना को याद रख सकते हैं जो हमारे बीच थी, तब तक हम वास्तव में दूर हुए बिना मर सकते हैं। आपने जो प्यार पैदा किया, वह आज भी मौजूद है। सारी यादें आज भी मौजूद हैं। आप हमेशा जीवित रहेंगे—उन सभी के दिलों में जिन्हें आपने अपने जीवनकाल में छुआ और संवारा।
उनकी आवाज़ कर्कश थी, जिसका आमतौर पर मतलब होता था कि उन्हें थोड़ी देर रुकने की ज़रूरत है। मैंने पौधे को वापस शेल्फ पर रख दिया और टेप रिकॉर्डर बंद करने चला गया। मेरे बंद करने से पहले मॉरी ने यही आखिरी वाक्य बोला:
"मृत्यु जीवन का अंत करती है, रिश्ते का नहीं।"
एएलएस के इलाज में एक नई खोज हुई थी: एक प्रायोगिक दवा को मंजूरी मिलनी शुरू हो गई थी। यह इलाज तो नहीं था, लेकिन कुछ महीनों के लिए बीमारी की गति को धीमा कर देता था। मॉरी ने इसके बारे में सुना था, लेकिन तब तक उसकी हालत बहुत खराब हो चुकी थी। इसके अलावा, यह दवा कई महीनों तक उपलब्ध नहीं होगी।
“मेरे लिए नहीं,” मॉरी ने इसे खारिज करते हुए कहा।
अपनी बीमारी के पूरे समय में, मॉरी ने कभी भी ठीक होने की उम्मीद नहीं रखी। वह हद से ज़्यादा यथार्थवादी थे। एक बार मैंने उनसे पूछा कि अगर कोई जादू की छड़ी घुमाकर उन्हें पूरी तरह ठीक कर दे, तो क्या समय के साथ वे पहले जैसे हो जाएँगे?
उसने सिर हिलाया। “मैं अब पीछे नहीं जा सकता। मैं अब एक अलग इंसान हूँ। मेरा रवैया बदल गया है। मैं अपने शरीर की कद्र करना सीख गया हूँ, जो पहले पूरी तरह से नहीं करता था। मैं बड़े सवालों, अहम सवालों, उन सवालों से जूझने के मामले में भी बदल गया हूँ जो कभी खत्म नहीं होते।”
"बात तो यही है। एक बार जब आप महत्वपूर्ण सवालों को पकड़ लेते हैं, तो आप उनसे मुंह नहीं मोड़ सकते।"
और महत्वपूर्ण प्रश्न कौन से हैं?
“मेरी समझ से, इनका संबंध प्रेम, जिम्मेदारी, आध्यात्मिकता और जागरूकता से है। और अगर मैं आज स्वस्थ होता, तो भी यही मेरी समस्याएं होतीं। ये हमेशा से ही मेरी समस्याएं होनी चाहिए थीं।”
मैंने मॉरी को स्वस्थ देखने की कोशिश की। मैंने कल्पना की कि वह अपने शरीर से चादर हटा रहा है, कुर्सी से उठ रहा है, हम दोनों पड़ोस में टहलने जा रहे हैं,

जैसे हम कैंपस में टहलते थे। मुझे अचानक एहसास हुआ कि उसे खड़े हुए देखे सोलह साल हो गए थे। सोलह साल?
मैंने पूछा, अगर आपको एक दिन पूरी तरह से स्वस्थ रहने का मौका मिले तो आप क्या करेंगे?
"चौबीस घंटे?"
चौबीस घंटे।
चलिए देखते हैं... मैं सुबह उठती, व्यायाम करती, मीठे रोल और चाय का बढ़िया नाश्ता करती, तैरने जाती, फिर अपने दोस्तों को दोपहर के भोजन के लिए बुलाती। मैं उन्हें एक-एक करके बुलाती ताकि हम उनके परिवारों, उनकी समस्याओं के बारे में बात कर सकें, और यह बता सकें कि हम एक-दूसरे के लिए कितने मायने रखते हैं। फिर मैं टहलने जाना चाहूँगा, किसी बगीचे में जहाँ कुछ पेड़ हों, उनके रंगों को देखना चाहूँगा, पक्षियों को देखना चाहूँगा, उस प्रकृति का आनंद लेना चाहूँगा जिसे मैंने इतने लंबे समय से नहीं देखा है।
"शाम को हम सब एक साथ किसी रेस्टोरेंट में जाते थे जहाँ बढ़िया पास्ता मिलता था, शायद बत्तख का मांस भी—मुझे बत्तख का मांस बहुत पसंद है—और फिर हम पूरी रात नाचते थे। मैं वहाँ मौजूद सभी शानदार डांस पार्टनर के साथ तब तक नाचती थी जब तक मैं थक न जाऊँ। और फिर मैं घर जाकर गहरी, सुकून भरी नींद सोती थी।"
इतना ही?
"इतना ही।"
यह बहुत ही सरल था। बिल्कुल साधारण। मैं थोड़ी निराश हुई। मुझे लगा था कि वह इटली की सैर करेगा, राष्ट्रपति के साथ दोपहर का भोजन करेगा, समुद्र तट पर मौज-मस्ती करेगा या हर तरह की अनोखी चीज़ आज़माएगा। इतने महीनों तक वहाँ लेटे रहने के बाद, एक पैर भी हिलाने में असमर्थ—वह इतने साधारण दिन में पूर्णता कैसे पा सकता था?
तब मुझे एहसास हुआ कि यही तो असली मकसद था।
उस दिन मेरे जाने से पहले, मॉरी ने पूछा कि क्या वह किसी विषय पर बात शुरू कर सकता है।
“तुम्हारा भाई,” उसने कहा।
मुझे कंपकंपी महसूस हुई। मुझे नहीं पता कि मॉरी को कैसे पता चला कि यह बात मेरे मन में चल रही है। मैं हफ्तों से स्पेन में अपने भाई को फोन करने की कोशिश कर रही थी, और उसके एक दोस्त से मुझे पता चला था कि वह एम्स्टर्डम के एक अस्पताल में बार-बार आ-जा रहा है।

“मिच, मैं जानती हूँ कि जब आप अपने प्रियजन के साथ नहीं रह पाते तो कितना दुख होता है। लेकिन आपको उसकी इच्छाओं को स्वीकार करना होगा। हो सकता है कि वह आपके दखल से अपने जीवन में बदलाव न चाहता हो। हो सकता है कि वह इस बोझ को सहन न कर पाए। मैं अपने सभी परिचितों से कहती हूँ कि वे अपना जीवन जीते रहें—मेरे मरने के कारण इसे बर्बाद न करें।”
लेकिन वो मेरा भाई है, मैंने कहा।
“मुझे पता है,” मॉरी ने कहा। “इसीलिए दर्द होता है।”
मैंने पीटर को आठ साल की उम्र में अपने मन में देखा, उसके घुंघराले सुनहरे बाल पसीने से तर होकर उसके सिर पर एक गेंद की तरह गुच्छे बन गए थे। मैंने हमें अपने घर के बगल वाले आंगन में कुश्ती करते देखा, घास के दाग हमारी जींस के घुटनों तक रिस रहे थे। मैंने उसे शीशे के सामने गाने गाते देखा, ब्रश को माइक्रोफोन की तरह पकड़े हुए, और मैंने हमें अटारी में घुसते देखा जहाँ हम बचपन में एक साथ छिपते थे, अपने माता-पिता के हमें रात के खाने के लिए ढूंढने के धैर्य की परीक्षा लेते थे।
और फिर मैंने उसे एक ऐसे वयस्क के रूप में देखा जो समय के साथ दूर होता चला गया था, दुबला-पतला और कमजोर, कीमोथेरेपी के उपचारों के कारण उसका चेहरा हड्डियों से भरा हुआ था।
मैंने कहा, मॉरी, वो मुझसे मिलना क्यों नहीं चाहता?
मेरे पुराने प्रोफेसर ने आह भरी। “रिश्तों का कोई तय फॉर्मूला नहीं होता। इन्हें प्यार से, दोनों पक्षों की ज़रूरतों, उनकी क्षमताओं और उनके जीवन की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, बातचीत के ज़रिए तय करना पड़ता है।” “व्यापार में लोग जीतने के लिए मोलभाव करते हैं। वे अपनी मनचाही चीज़ें पाने के लिए मोलभाव करते हैं। शायद आपको इसकी आदत पड़ गई है। लेकिन प्यार अलग है। प्यार वह है जब आप किसी दूसरे की स्थिति के बारे में उतना ही चिंतित होते हैं जितना कि अपनी खुद की स्थिति के बारे में।”
“आपने अपने भाई के साथ कई अनमोल पल बिताए हैं, और अब आपके पास वो सब नहीं है जो आपके पास उसके साथ था। आप उन पलों को वापस पाना चाहते हैं। आप कभी नहीं चाहते कि वो पल खत्म हों। लेकिन यही तो इंसान होने का हिस्सा है। रुकना, फिर से शुरुआत करना, रुकना, फिर से शुरुआत करना।”
मैंने उसकी ओर देखा। मुझे उसमें दुनिया भर की मौत दिखाई दी। मैं असहाय महसूस कर रहा था।
“तुम्हें अपने भाई के पास वापस जाने का रास्ता मिल जाएगा,” मॉरी ने कहा।

[illegible]?

[illegible] "[illegible]."

"[illegible]"

"[illegible]"

"'[illegible]'"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

चौदहवें मंगलवार को हम अलविदा कहते हैं

जब मैं मॉरी के घर की सीढ़ियों पर चढ़ रही थी, तो ठंड और नमी छाई हुई थी। मैंने छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दिया, ऐसी चीजें जो मैंने पहले कितनी ही बार आने पर भी नहीं देखी थीं। पहाड़ी की बनावट। घर का पत्थर का अग्रभाग। पैचीसैंड्रा के पौधे, छोटी झाड़ियाँ। मैं धीरे-धीरे चल रही थी, समय लेते हुए, सूखी गीली पत्तियों पर कदम रख रही थी जो मेरे पैरों के नीचे दबकर चपटी हो रही थीं। शार्लेट ने एक दिन पहले फोन करके मुझे बताया था कि मॉरी की तबीयत ठीक नहीं है। यह उसका कहने का तरीका था कि अब उनके अंतिम दिन आ गए हैं। मॉरी ने अपनी सारी अपॉइंटमेंट रद्द कर दी थीं और ज़्यादातर समय सो रहे थे, जो उनके स्वभाव के विपरीत था। उन्हें सोना कभी पसंद नहीं था, खासकर तब जब उनके आसपास बात करने के लिए लोग मौजूद हों।
"वह चाहता है कि तुम उससे मिलने आओ," शार्लोट ने कहा, "लेकिन, मिच..."
हाँ?
वह बहुत कमजोर है।
बरामदे की सीढ़ियाँ। सामने के दरवाज़े का शीशा। मैंने इन चीज़ों को धीरे- धीरे, ध्यान से देखा, मानो इन्हें पहली बार देख रहा हो। मैंने अपने कंधे पर टंगे बैग में टेप रिकॉर्डर को महसूस किया और यह देखने के लिए ज़िप खोली कि मेरे पास टेप हैं या नहीं। पता नहीं क्यों। मेरे पास हमेशा टेप होते थे। कोनी ने घंटी बजने पर दरवाजा खोला। आमतौर पर हंसमुख रहने वाली कोनी के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। उसने धीमी आवाज़ में 'हैलो' कहा।
मैंने कहा, "वह कैसा है?"
“अच्छा नहीं लगा।” उसने अपने निचले होंठ को दबाया। “मैं इसके बारे में सोचना नहीं चाहती। वैसे, वो बहुत ही प्यारे इंसान हैं?”
मैं जानता था।
“यह तो बहुत शर्मनाक बात है।”
शार्लोट गलियारे से नीचे आई और उसने मुझे गले लगा लिया। उसने कहा कि सुबह के 10 बज रहे थे फिर भी मॉरी सो रहा था। हम रसोई में गए। मैंने उसे संभलने में मदद की और देखा कि मेज पर गोलियों की बोतलें कतार में रखी थीं, मानो भूरे प्लास्टिक के सैनिकों की एक छोटी सी सेना हो, जिन पर सफेद ढक्कन लगे हों। मेरे पुराने प्रोफेसर अब सांस लेने में आसानी के लिए मॉर्फिन ले रहे थे।

मैंने अपने साथ लाया हुआ सारा खाना फ्रिज में रख दिया—सूप, वेजिटेबल केक, टूना सलाद। मैंने शार्लोट से इसे लाने के लिए माफी मांगी। हम दोनों जानते थे कि मॉरी ने महीनों से इस तरह खाना नहीं चबाया था, लेकिन यह एक छोटी सी परंपरा बन गई थी। कभी-कभी, जब आप किसी अपने को खो रहे होते हैं, तो आप किसी भी परंपरा को थामे रखने की कोशिश करते हैं।
मैं बैठक कक्ष में इंतज़ार कर रहा था, जहाँ मॉरी और टेड कोप्पेल ने अपना पहला साक्षात्कार दिया था। मैंने मेज पर पड़ा अखबार पढ़ा। मिनेसोटा के दो बच्चों ने अपने पिता की बंदूकों से खेलते हुए एक-दूसरे को गोली मार दी थी। लॉस एंजिल्स की एक गली में कूड़ेदान में एक नवजात शिशु का शव मिला था।
मैंने कागज नीचे रख दिया और खाली चिमनी को घूरने लगी। मैंने अपने जूते से लकड़ी के फर्श पर हल्की-हल्की थपथपाहट की। थोड़ी देर बाद, मुझे एक दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज़ सुनाई दी, फिर शार्लोट के कदमों की आहट मेरी तरफ आती हुई सुनाई दी।
“ठीक है,” उसने धीरे से कहा। “वह तुम्हारे लिए तैयार है।”
मैं उठा और अपनी जानी-पहचानी जगह की ओर मुड़ा, तभी मैंने देखा कि हॉल के आखिर में एक मोड़ने वाली कुर्सी पर एक अजनबी महिला बैठी है, उसकी नज़रें किताब पर टिकी हैं और उसने पैर मोड़ रखे हैं। यह एक हॉस्पिस नर्स थी, जो चौबीसों घंटे ड्यूटी पर तैनात रहती थी।
मॉरी का अध्ययन कक्ष खाली था। मैं असमंजस में पड़ गया। फिर हिचकिचाते हुए मैं बेडरूम की ओर मुड़ा, और वहाँ वह चादर ओढ़कर बिस्तर पर लेटा हुआ था। मैंने उसे इस हालत में केवल एक बार पहले देखा था—जब उसकी मालिश हो रही थी—और उसका यह कथन, "जब आप बिस्तर पर होते हैं, तो आप मृत समान होते हैं", मेरे दिमाग में फिर से गूंजने लगा।
मैंने चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश करते हुए प्रवेश किया। उसने पीले रंग का पायजामा जैसा टॉप पहना हुआ था और छाती से नीचे तक कंबल से ढका हुआ था। उसका शरीर इतना दुबला-पतला था कि मुझे लगा मानो उसमें कुछ कमी है। वह बिल्कुल बच्चे जैसा छोटा था।
मॉरी का मुंह खुला हुआ था, और उसकी त्वचा पीली पड़ गई थी और गालों से चिपकी हुई थी। जब उसकी आंखें मेरी ओर घूमीं, तो उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन मुझे केवल एक धीमी सी गुर्राहट सुनाई दी।
मैंने अपनी खाली तिजोरी में मौजूद सारी उत्तेजना को इकट्ठा करते हुए कहा, "वह रहा।"

उसने गहरी सांस ली, अपनी आंखें बंद कीं, फिर मुस्कुराया, मानो इस कोशिश से ही वह थक गया हो।
“मेरे... प्यारे दोस्त...” उसने अंत में कहा।
मैंने कहा, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ।
आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है...
कल बेहतर होगा।
उसने एक और गहरी सांस ली और सिर हिलाया। वह चादर के नीचे किसी चीज से जूझ रहा था, और मुझे एहसास हुआ कि वह अपने हाथों को उस छेद की ओर ले जाने की कोशिश कर रहा था।
“रुको…” उसने कहा।
मैंने कंबल नीचे खींचा और उसकी उंगलियाँ पकड़ लीं। वे मेरी उंगलियों में समा गईं। मैं उसके चेहरे के करीब झुक गई, कुछ इंच की दूरी पर। यह पहली बार था जब मैंने उसे बिना दाढ़ी के देखा था, उसकी छोटी-छोटी सफेद दाढ़ी इतनी बेमेल लग रही थी, मानो किसी ने उसके गालों और ठोड़ी पर नमक छिड़क दिया हो। उसकी दाढ़ी में नई जान कैसे आ सकती थी जब बाकी सब जगह से उसकी जान निकल रही थी?
मैंने धीरे से कहा, "मोर्री।"
“कोच,” उसने सुधार किया।
मैंने कहा, "कोच!" मुझे कंपकंपी महसूस हुई। वह रुक-रुक कर बोल रहे थे, सांस अंदर लेते और शब्द बाहर छोड़ते हुए। उनकी आवाज़ पतली और कर्कश थी। उनसे मरहम की गंध आ रही थी।
“तुम एक नेक आत्मा हो।”
एक नेक आत्मा।
“मुझे छू लिया…” उसने फुसफुसाते हुए कहा। उसने मेरे हाथों को अपने दिल पर रख दिया। “यहाँ।”
ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे गले में कुछ अटक गया हो।
प्रशिक्षक?
“आह?”
मुझे अलविदा कहना नहीं आता।
उसने मेरा हाथ हल्के से थपथपाया और उसे अपनी छाती पर ही रखा।
“हम इसी तरह अलविदा कहते हैं…”
वह धीरे-धीरे सांस ले रहा था, अंदर-बाहर कर रहा था; मैं उसकी पसलियों को ऊपर-नीचे होते हुए महसूस कर सकता था। फिर उसने सीधे मेरी तरफ देखा।

“लव... यू,” उसने कर्कश आवाज में कहा।
मैं भी आपसे प्यार करता हूँ, कोच।
“जान लो कि तुम ऐसा करते हो... कुछ और भी जानते हो...”
आपको और क्या-क्या पता है?
“तुम हमेशा से ऐसे ही रहे हो...”
उसकी आँखें छोटी हो गईं, और फिर वह रोने लगा, उसका चेहरा ऐसे बिगड़ गया जैसे कोई बच्चा जिसे अभी तक यह समझ नहीं आया हो कि उसकी आंसू नलिकाएँ कैसे काम करती हैं। मैंने उसे कुछ मिनटों तक गले लगाया। मैंने उसकी ढीली त्वचा को सहलाया। मैंने उसके बालों पर हाथ फेरा। मैंने अपना हाथ उसके चेहरे पर रखा और मांस के पास हड्डियों को महसूस किया और छोटे-छोटे गीले आँसू, मानो किसी ड्रॉपर से निचोड़े गए हों।
जब उनकी साँसें फिर से सामान्य होने लगीं, तो मैंने गला साफ़ किया और कहा कि मुझे पता है कि वे थके हुए हैं, इसलिए मैं अगले मंगलवार को वापस आऊँगा, और मुझे उम्मीद है कि वे थोड़ा और सतर्क रहेंगे, धन्यवाद। उन्होंने हल्की सी नाक से आवाज़ निकाली, मानो हँसी के करीब पहुँच रहे हों। फिर भी वह एक उदास आवाज़ थी। मैंने टेप रिकॉर्डर वाला बंद बैग उठाया। मैं इसे लाई ही क्यों थी? मुझे पता था कि हम इसका कभी इस्तेमाल नहीं करेंगे। मैं उसके करीब गई और उसे कसकर चूमा, मेरा चेहरा उसके चेहरे से सटा हुआ था, मूंछें मूंछों से, त्वचा त्वचा से, मैंने उसे सामान्य से ज़्यादा देर तक वहीं रोके रखा, शायद इससे उसे एक पल के लिए भी आनंद मिल जाए।
ठीक है, तो? मैंने पीछे हटते हुए कहा।
मैंने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोके, और मेरी शक्ल देखकर उन्होंने अपने होंठ आपस में दबा लिए और भौंहें ऊपर उठा लीं। मुझे लगता है कि मेरे प्यारे प्रोफेसर जी के लिए वह पल भर की संतुष्टि थी: आखिरकार उन्होंने मुझे रुला ही दिया था।
“ठीक है, फिर,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

स्नातक

मॉरी की मृत्यु शनिवार की सुबह हुई।
उनके परिवार के सभी सदस्य घर में उनके साथ थे। रॉब टोक्यो से आया था—उसे अपने पिता को अंतिम विदाई देने का मौका मिला—जॉन भी वहाँ था, और ज़ाहिर है शार्लोट भी थी, और शार्लोट की चचेरी बहन मार्शा भी, जिसने वह कविता लिखी थी जिसने मॉरी को उनकी "अनौपचारिक" स्मृति सभा में इतना भावुक कर दिया था, वह कविता जिसमें उनकी तुलना "कोमल सिकोइया" से की गई थी। वे बारी-बारी से उनके बिस्तर के चारों ओर सोए। हमारी आखिरी मुलाकात के दो दिन बाद मॉरी कोमा में चले गए थे, और डॉक्टर ने कहा था कि वे किसी भी क्षण चल सकते हैं। इसके बजाय, उन्होंने एक कठिन दोपहर और एक अंधेरी रात को झेलते हुए जीवन का संघर्ष जारी रखा।
अंततः, चार नवंबर को, जब उनके प्रियजन कुछ पल के लिए कमरे से बाहर गए थे - रसोई में कॉफी लेने के लिए, कोमा शुरू होने के बाद से यह पहली बार था जब उनमें से कोई भी उनके साथ नहीं था - मॉरी ने सांस लेना बंद कर दिया।
और वह चला गया।
मुझे लगता है कि उसने जानबूझकर इस तरह से अपनी जान दी। मुझे लगता है कि वह कोई भयावह क्षण नहीं चाहता था, कोई भी उसकी अंतिम सांस का गवाह न बने और उससे परेशान न हो, जैसे वह अपनी माँ की मृत्यु सूचना के टेलीग्राम या शहर के मुर्दाघर में अपने पिता के शव से परेशान था।
मुझे लगता है कि उन्हें पता था कि वे अपने ही बिस्तर पर हैं, उनकी किताबें, उनके नोट्स और उनका छोटा सा गुड़हल का पौधा पास ही में है। वे शांति से जाना चाहते थे, और इसी तरह वे चले गए।
अंतिम संस्कार एक उमस भरी, हवादार सुबह में हुआ। घास गीली थी और आसमान दूधिया रंग का था। हम ज़मीन में बने गड्ढे के पास खड़े थे, इतनी नज़दीक कि तालाब के पानी की लहरों की आवाज़ सुन सकें और बत्तखों को अपने पंख झाड़ते हुए देख सकें।
हालांकि सैकड़ों लोग इसमें शामिल होना चाहते थे, शार्लेट ने इस समारोह को छोटा ही रखा, जिसमें केवल कुछ करीबी दोस्त और रिश्तेदार ही शामिल हुए। रब्बी एक्सलरोड ने कुछ कविताएँ पढ़ीं। मॉरी के भाई डेविड—जो बचपन के पोलियो के कारण अभी भी लंगड़ाकर चलते थे—ने परंपरा के अनुसार फावड़ा उठाया और कब्र में मिट्टी डाली।

[illegible]

“[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

निष्कर्ष
मैं कभी-कभी उस इंसान को याद करता हूँ जो मैं अपने पुराने प्रोफेसर से दोबारा मिलने से पहले था। मैं उस इंसान से बात करना चाहता हूँ। मैं उसे बताना चाहता हूँ कि किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, किन गलतियों से बचना चाहिए। मैं उसे कहना चाहता हूँ कि वह ज़्यादा खुले विचारों वाला बने, प्रचारित मूल्यों के लालच में न पड़े, और जब आपके प्रियजन बोल रहे हों तो ध्यान से सुने, मानो यह उनकी आखिरी बात हो।
मेरी सबसे बड़ी इच्छा यही है कि मैं उस व्यक्ति से कहूँ कि वह हवाई जहाज से वेस्ट न्यूटन, मैसाचुसेट्स में रहने वाले एक सज्जन बुजुर्ग से जल्द से जल्द मिलने जाए, इससे पहले कि वह बुजुर्ग बीमार पड़ जाए और नाचने की अपनी क्षमता खो दे।
मुझे पता है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। हममें से कोई भी अपने किए को बदल नहीं सकता, न ही बीते हुए जीवन को दोबारा जी सकता है। लेकिन अगर प्रोफेसर मॉरी श्वार्ट्ज ने मुझे कुछ सिखाया है, तो वह यही है: जीवन में कभी भी "देर नहीं हो जाती" जैसी कोई बात नहीं होती। वे अपने अंतिम क्षणों तक बदलते रहे।
मॉरी की मृत्यु के कुछ समय बाद ही, मैं स्पेन में अपने भाई से संपर्क कर पाया। हमारी लंबी बातचीत हुई। मैंने उसे बताया कि मैं उसकी दूरी का सम्मान करता हूँ, और मैं बस उससे संपर्क में रहना चाहता हूँ—वर्तमान में, न कि केवल अतीत में—उसे अपने जीवन में उतना ही शामिल रखना चाहता हूँ जितना वह मुझे रखने दे। मैंने कहा, “तुम मेरे इकलौते भाई हो। मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”
मैंने उससे पहले कभी ऐसी बात नहीं कही थी।
कुछ दिनों बाद, मुझे अपने फैक्स मशीन पर एक संदेश मिला। यह मेरे भाई के शब्दों की हमेशा की तरह ही अव्यवस्थित, गलत विराम चिह्नों वाली और पूरी तरह से बड़े अक्षरों में लिखी गई शैली में टाइप किया गया था।
“हाय, मैं नब्बे के दशक में शामिल हो गया हूँ!” यह शुरू हुआ। उसने कुछ छोटी- छोटी कहानियाँ लिखीं, उस हफ्ते उसने क्या किया, कुछ चुटकुले सुनाए। अंत में, उसने इस तरह हस्ताक्षर किए: इस समय मुझे सीने में जलन और दस्त हो रहे हैं— जिंदगी बहुत मुश्किल है। बाद में बात करते हैं? [हस्ताक्षर] पीठ में दर्द।
मैं इतना हँसा कि मेरी आँखों में आँसू आ गए।

यह किताब काफी हद तक मॉरी का ही विचार था। उन्होंने इसे हमारी "अंतिम थीसिस" कहा था। बेहतरीन कार्य परियोजनाओं की तरह, इसने हमें और करीब ला दिया, और मॉरी तब बेहद खुश हुए जब कई प्रकाशकों ने इसमें रुचि दिखाई, हालांकि उनकी मृत्यु उनमें से किसी से भी मिलने से पहले ही हो गई। अग्रिम राशि से मॉरी के भारी चिकित्सा खर्चों को चुकाने में मदद मिली, और इसके लिए हम दोनों आभारी थे। वैसे, ज्वार-भाटे का नाम हमने एक दिन मॉरी के दफ्तर में सोचा था। उन्हें चीजों के नाम रखने का शौक था। उनके पास कई विचार थे। लेकिन जब मैंने कहा, "मंगलवार को मॉरी के साथ कैसा रहेगा?" तो वे लगभग शरमाते हुए मुस्कुराए, और मैं समझ गया कि यही सही नाम है।
मॉरी की मृत्यु के बाद, मैंने कॉलेज के पुराने सामान के बक्सों को खंगाला। और मुझे उनकी एक कक्षा के लिए लिखा गया मेरा अंतिम शोध पत्र मिला। यह बीस साल पुराना था। पहले पृष्ठ पर मैंने पेंसिल से मॉरी के लिए कुछ टिप्पणियाँ लिखी थीं, और उनके नीचे मॉरी की टिप्पणियाँ लिखी हुई थीं।
मेरा संदेश शुरू हुआ, “प्रिय कोच...”
उन्होंने शुरुआत की, “प्रिय खिलाड़ी...”
न जाने क्यों, जब भी मैं इसे पढ़ता हूं, मुझे उसकी याद और भी ज्यादा आती है। क्या आपको कभी कोई सच्चा शिक्षक मिला है? ऐसा शिक्षक जिसने आपको एक अनमोल रत्न समझा हो, जिसे ज्ञान से निखारकर और भी खूबसूरत बनाया जा सके? अगर आप सौभाग्य से ऐसे शिक्षकों तक पहुँच पाते हैं, तो आप हमेशा उनके पास वापस जाने का रास्ता खोज लेंगे। कभी-कभी यह रास्ता सिर्फ आपके दिमाग में होता है। कभी- कभी यह उनके बिस्तर के ठीक बगल में होता है।
मेरे पुराने प्रोफेसर की आखिरी क्लास हफ्ते में एक बार उनके घर में, उनके स्टडी रूम की खिड़की के पास होती थी, जहाँ से वे एक छोटे से हिबिस्कस के पौधे को अपने गुलाबी फूल गिराते हुए देख सकते थे। क्लास मंगलवार को होती थी। किसी किताब की ज़रूरत नहीं थी। विषय था जीवन का अर्थ। इसे अनुभव के आधार पर पढ़ाया जाता था।
शिक्षण कार्य जारी है।

उपसंहार, 25 वीं वर्षगांठ संस्करण
प्रिय पाठक—
'ट्यूजडेज़ विद मोरी' के पहली बार प्रकाशित होने के बाद से पच्चीस साल बीत चुके हैं। और मैं यहाँ अपने पुराने कॉलेज प्रोफेसर के बारे में नए शब्द लिख रहा हूँ। उनका क्लासरूम मानो बिना निकास द्वार वाला है, जीवन के एक चरण से दूसरे चरण तक जाने वाले रास्तों से भरा हुआ है।
'ट्यूजडेज़ विद मोरी' की लोकप्रियता का लंबा इतिहास मेरे लेखन जीवन का सबसे अद्भुत पहलू रहा है। यह दुनिया के उन कोनों तक पहुंच चुकी है जिन्हें मैं शायद कभी नहीं देख पाऊंगा। 1990 के दशक में इसे पढ़ने वाले युवा अब 2020 के दशक में इसे अपने किशोर बच्चों के साथ साझा कर रहे हैं।
हालांकि मैं इस बारे में दोबारा लिख सकता था कि इस किताब ने मुझे एक युवा, फिर एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति और अब एक वृद्धावस्था की ओर बढ़ते हुए व्यक्ति के रूप में कैसे आकार दिया है, लेकिन मैंने सोचा कि पच्चीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर, हमें शुरुआत में लौटना चाहिए। उस समय जब कोई किताब नहीं थी। जब सिर्फ एक विचार था।

उस समय, मॉरी के साथ बिताए गए मेरे मंगलवार बस इतने ही थे। वो मुझे सिखा रहे थे, मेरी गलतियों को सुधार रहे थे। यह एक प्यारा, निस्वार्थ, आखिरी पाठ था। लेकिन कोई किताब नहीं थी। जब मुझे पता चला कि मॉरी अपने मेडिकल बिलों के कारण कितने कर्ज में डूबे हुए हैं, तभी उनके लिए कुछ लिखकर मदद करने का विचार मेरे मन में आया।
यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। शायद अब ऐसा न लगे, लेकिन यह थी। मैं एक खेल पत्रकार था और इस तरह की किताबों का मुझे कोई अनुभव नहीं था। पहली चूक। किताबों की दुनिया में "मृत्यु" से जुड़ी कहानियों से स्वाभाविक रूप से परहेज किया जाता था—उन्हें बहुत निराशाजनक माना जाता था। दूसरी चूक।
मेरे मित्र और साहित्यिक एजेंट डेविड ब्लैक ने एक बेहतरीन सुझाव दिया। पुस्तक प्रस्ताव भेजने के बजाय, जो मुझे कुछ ज्यादा ही औपचारिक लगा, डेविड ने सुझाव दिया कि मैं उन्हें एक पत्र लिखूँ। बस सरल शब्दों में बताऊँ कि उन मंगलवारों को क्या घट रहा था, मुझे इसके बारे में लिखने की प्रेरणा क्यों मिली, और मेरे लिए यह जीवन के बारे में एक पुस्तक क्यों थी, न कि मृत्यु के बारे में।

मैंने वह पत्र प्रकाशन जगत से बाहर किसी के साथ साझा नहीं किया है। अब मैं इसे अपने पाठकों के साथ साझा कर रहा हूँ, थोड़ा संपादित करके ताकि यह आपके द्वारा अभी-अभी पढ़े गए पाठ से मिलता-जुलता न हो।
इस तरह पच्चीस साल पुरानी एक किताब की शुरुआत हुई:

ब्लैक इंक.
156 फिफ्थ एवेन्यू
न्यूयॉर्क, एनवाई 10010
4 सितंबर, 1995
प्रिय डेविड,
मैं मॉरी के बारे में क्यों लिखना चाहता हूँ? वो मर रहा है। मुझे पता है। उसे भी पता है। शायद उसके पास तीन महीने बचे हैं, इससे पहले कि बीमारी उसे पूरी तरह से जकड़ ले, जैसे उसने पहले ही उसके पैरों, टांगों और कूल्हों को जकड़ लिया है। एक बार जब यह फेफड़ों तक पहुँच जाती है, तो वो बोलना बंद कर देता है, और जल्द ही उसकी मृत्यु हो जाती है। उसे पता है। मुझे पता है। लोग तो मरते ही रहते हैं। और फिर भी, उसमें कुछ तो खास है, उसकी कुर्सी पर, वेस्ट न्यूटन की उस शांत गली में उसके छोटे से दफ्तर में, मुझे देखते हुए जैसे वो

दशकों से मेरा इंतजार कर रहा हो, जैसे उसे हमेशा से पता था कि मैं वापस आऊँगा...
हम ब्रैंडिस विश्वविद्यालय में शिक्षक और छात्र थे। वह दशकों से वहाँ समाजशास्त्र के प्रोफेसर थे, जिनमें उथल-पुथल भरे साठ के दशक भी शामिल थे, जब ब्रैंडिस राजनीतिक हलचल का केंद्र था, प्रदर्शनों, युद्ध-विरोधी मार्चों, एंजेला डेविस, जेरी रुबिन, एबी हॉफमैन का बोलबाला था।
जब मैं सत्तर के दशक के मध्य में वहाँ पहुँचा, तब तक माहौल शांत हो चुका था, और यह बस उन होशियार बच्चों के लिए एक और जगह बन गई थी जो डॉक्टर, वकील और व्यवसायी बनने का प्रशिक्षण लेते थे। शायद जब मॉरी मुझसे मिले, तो उन्होंने साठ के दशक की भावना की एक झलक देखी। मैं कॉलेज में काफी शरारती था। मैं संगीतकार बनना चाहता था। मैं आम धारणाओं से हटकर था। उन्हें मैं पसंद आया। मुझे भी वे पसंद आए। मैं उन्हें "कोच" कहकर बुलाता था और उन्हें यह अच्छा लगता था। वे मुझे अपने किसी प्रिय चाचा की याद दिलाते थे, बस थोड़े नरम और समझदार। वे मेरी हर बात ध्यान से सुनते थे। वे मुझे सोचने और महसूस करने के लिए प्रेरित करते थे। उन्होंने कहा कि मेरे कई साथी छात्रों की तरह पैसे कमाने की चिंता मत करो, बल्कि एक

संपूर्ण व्यक्ति बनो। उन्होंने कहा कि मुझे खुद को अभिव्यक्त करने और रोने जैसी चीजों से डरना नहीं चाहिए। सत्रह साल का होने के नाते, स्वाभाविक रूप से, मेरी पहली प्रतिक्रिया थी: "यह आदमी तो बहुत ही होशियार है।"
मैंने उनकी पढ़ाई के सारे पाठ पढ़े। मैंने उन्हीं के मार्गदर्शन में अपनी ऑनर्स थीसिस भी लिखी। यह इस विषय पर थी कि अमेरिका में किस प्रकार खेल ने धर्म की जगह जनता के लिए नशे का काम किया है। उस समय मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मैं आगे चलकर खेल पत्रकार और खेल प्रसारक बनूंगा, इससे अपनी आजीविका कमाऊंगा और यहां तक कि इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध भी हो जाऊंगा। थीसिस तो बस कॉलेज में मेरा एक काम था, जिसे मैंने मुख्यतः मॉरी के प्रोत्साहन से पूरा किया था।
मैं उनसे हफ्ते में तीन बार मिलता था, और मंगलवार हमारा साथ बिताने का सबसे लंबा दिन होता था। हम उनके दफ्तर में, या किसी पेड़ के नीचे, या कैंटीन में बैठते थे।
उन्होंने मुझे ब्रोंक्स में गरीबी में पले-बढ़े होने के बारे में बताया, मानसिक रूप से बीमार मरीजों के साथ काम करने के बारे में बताया, अपनी लिखी

किताबों के बारे में बताया, और यह भी बताया कि उन्हें नाचना कितना पसंद था, यहाँ तक कि अकेले में भी, और उन्हें फर्श पर जाकर आँखें बंद करके गोल-गोल घूमने में कोई शर्म नहीं आती थी। मुझे पता है कि उनकी बातें थोड़ी अजीब लगती हैं। लेकिन आपको उनसे मिलना चाहिए; वे एक छोटे कद के बूढ़े व्यक्ति हैं, जिनकी आँखों में एक सच्ची चमक है।
वो बेहद लापरवाह भी था। खाते-खाते बातें करता, मुझे कहानियां सुनाता, जोर-जोर से इशारे करता और खाना उसके मुंह से बाहर निकल आता। मैं मजाक नहीं कर रही। वो जिंदगी के बारे में लगातार बोलता रहता था—"खुद को ढूंढो... अपने दिल को संवारो"—और इस सब के दौरान अंडे के सलाद के छोटे-छोटे टुकड़े उसके दांतों में फंसे रहते थे। जब तक मैं उसे जानती रही, मेरे मन में दो तीव्र इच्छाएं थीं: उसे गले लगाना और उसे एक नैपकिन देना।
मैंने थीसिस पूरी कर ली। मैंने अपने विभाग में सर्वोच्च सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। यह 1979 की बात है। समाजशास्त्र पर लिखा गया वह मेरा आखिरी शोध पत्र था।
यह आखिरी बार था जब मैंने मॉरी को देखा था।

मैंने कहा, “हैलो मॉरी, मैं मिच एल्बोम हूँ। मैं सत्तर के दशक में आपका छात्र था। मुझे नहीं पता कि आपको मैं याद हूँ या नहीं...”
“तुमने मुझे कोच क्यों नहीं कहा?” उसने कहा।
तब से मैंने मॉरी के साथ बहुत समय बिताया है। एक मुलाकात से दूसरी मुलाकात होती गई, और जल्द ही हमने अपनी मंगलवार की रस्म फिर से शुरू कर दी, लेकिन अब यह किसी कॉलेज परिसर में नहीं होती, जहाँ जीवन की शुरुआत होती है, बल्कि एक छोटे से धूपदार कमरे में होती है जहाँ उनके जीवन का अंत होगा।
जब हमने शुरुआत की थी, तब वह चल-फिर सकता था, खुद खाना खा सकता था। अब, उसे चम्मच उठाने में भी मदद की ज़रूरत पड़ती है। जब वह अपना पैर हिलाना चाहता है, तो मुझे उसे हिलाना पड़ता है। जब कोई किताब उसके हाथों से गिर जाती है, तो मुझे उसे उठाना पड़ता है। उसे खांसी आती है और उसकी आवाज़ दिन-ब-दिन कमज़ोर होती जा रही है, फिर भी उसका दिमाग पहले की तरह तेज़ है। और एक के बाद एक दुख झेलते हुए भी, वह मुस्कुराने का हुनर रखता है। मैं उसकी ओर खिंची चली जाती हूँ, उसकी ताकत और उसकी समझदारी की ओर, जो उसके जीवन के अंत के करीब आते-आते तेज़ी से बढ़ती जा रही है।

मैं अकेला नहीं हूँ। "नाइटलाइन" कार्यक्रमों के बाद से, मॉरी एक तरह से पंथ हस्ती बन गए हैं। दुनिया भर से लोग उन्हें पत्र लिखते हैं। वे फोन करते हैं; वे उनकी उपस्थिति में तीस मिनट बिताने के लिए तीर्थयात्रा करते हैं। ऐसा लगता है मानो वह उस गहरे अंधेरे तहखाने से आ रही आवाज़ हैं जिसमें हम सभी अंततः उतरेंगे, और वह सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए लोगों से कह रहे हैं कि यह इतना बुरा भी नहीं है, कि यदि आप एक निश्चित तरीके से जीते हैं, तो आप एक निश्चित तरीके से मर भी सकते हैं।
उनमें से अधिकतर लोग अजनबी होते हैं। वह उन्हें थोड़ा समय देते हैं। लेकिन जब मैं उनसे मिलने आता हूँ, तो वह सब कुछ रोक देते हैं, सारी व्यवस्था साफ कर देते हैं, अपने दफ्तर में उस आरामदायक कुर्सी पर बैठ जाते हैं, घुटनों पर एक छोटा सा कंबल ओढ़ लेते हैं, और मुस्कुराते हुए कहते हैं, "आज मैं तुम्हें यह देता हूँ।"
और हम बातें करते हैं।
बीमारी या निराशावादी बातों के बारे में नहीं। हाँ, कुछ बातें तो हैं। वह इस बात को लेकर परेशान है कि वह कैसे मरना चाहता है, अंतिम क्षण में—क्या उसे क्रोध में मरना चाहिए, चीखते हुए मरना चाहिए, या अपने

प्रियजनों का हाथ थामना चाहिए? (उसने तय कर लिया है कि मरने का सबसे अच्छा तरीका शांत और स्थिर अवस्था में मरना है, जो संयोगवश नहीं, बल्कि अब उसे लगता है कि जीने का सबसे अच्छा तरीका यही है।)
लेकिन ज़्यादातर हम ज़िंदगी की बात करते हैं, अमेरिकी ज़िंदगी की, उस संस्कृति की जो जवानी, पैसा, रफ़्तार और कामयाबी पर ज़ोर देती है। और धीरे-धीरे, वो उन झूठे प्रतीकों को तोड़ते हैं, मुस्कुराते हुए बताते हैं कि जब से वो बीमार हुए हैं, तब से उन्होंने चीज़ों के बारे में सोचना ही छोड़ दिया है, और कैसे खूबसूरती और सुडौल शरीर जैसी चीज़ें बेमानी मोह बन जाती हैं जब आपके पास सिर्फ़ अपनों के साथ बिताने के लिए कीमती समय होता है। प्यार, इंसानी संपर्क, समुदाय, दोस्ती—ये वो खजाने हैं जिन्हें मॉरी अब अपने सबसे करीब रखना चाहते हैं।
हम बैठते हैं, सूप और केक खाते हैं—उसकी भूख में कोई कमी नहीं है—और हम अपनी पीढ़ियों की तुलना करते हैं, जैसा कि हम कॉलेज के दिनों में किया करते थे। तब की ही तरह, अब भी मैं उससे कहीं ज्यादा सीखता हूँ। डेविड, सोलह साल बाद हम फिर से मिल गए हैं। मेरे लिए यह एक बेहद ज़रूरी मिलन रहा है। जैसा कि आप जानते हैं, मैं एक साथ कई काम कर रहा हूँ। मैं टीवी, रेडियो,

अखबार, किताबों और यहाँ तक कि उस फिल्म की पटकथा से भी खूब पैसा कमाता हूँ जिसे हमने बेचा था। मेरी अभी- अभी शादी हुई है और हम बच्चों के बारे में सोच रहे हैं। तीस साल की उम्र के आसपास के किसी व्यक्ति के लिए, मेरा जीवन कई मायनों में बेहद भाग्यशाली लगता है, मानो मैं खुशहाल राह के बीचोंबीच में खड़ा हूँ। फिर भी, कभी-कभी मन में एक खालीपन सा महसूस होता है। एक उद्देश्यहीनता का भाव। मैं बहुत काम करता हूँ। लेकिन हमेशा यह नहीं जानता कि किस लिए। मुझे लगता है कि मेरी पीढ़ी के कई सफल लोग इस समय इसी स्थिति का सामना कर रहे हैं: उन्होंने खुद को पूरी तरह से थका दिया है, और अब उन्हें कमाई से उतना आनंद नहीं मिलता जितना पहले मिलता था।
मुझे अपने पुराने प्रोफेसर की सादगी बहुत पसंद आ रही है। मॉरी मौत को सीधे आंखों में आंखें डालकर देख रहे हैं—हर सुबह जब वो उठते हैं, तो मौत का साया उनके और करीब आ जाता है—फिर भी वो अपना आशावादी, बल्कि हंसमुख रवैया बनाए रखते हैं।
मैं उनके साहस से अभिभूत हूँ। मॉरी थोड़े धार्मिक हैं, थोड़े नव-युग के अनुयायी हैं—उनका जन्म यहूदी परिवार में हुआ था, लेकिन वे बौद्ध धर्म में भी विश्वास रखते हैं, इसलिए वे हँसते हुए खुद को "बु-

यहूदी" कहते हैं—लेकिन मूलतः, वे सीधे-सादे, सामान्य ज्ञान वाले व्यक्ति हैं, एक सरल इंसान जो अंतिम पड़ाव पर खड़े होकर धीमी, शांत आवाज़ में कहते हैं, "मुझे पता है कि क्या मायने रखता है। अब मैं इसे स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। क्या आप रहस्य जानना चाहते हैं?"
तो मेरे मन में एक विचार आया। एक किताब के लिए। कोई आत्म-सहायता वाली किताब नहीं, न ही जीवन जीने के लिए कोई उबाऊ मार्गदर्शिका। एक कहानी। एक सच्ची कहानी। एक अधेड़ और एक अधेड़ की कहानी, जो सड़क पर एक बार मिलते हैं, एक-दूसरे के जीवन को छूते हैं, और फिर कई साल बाद दोबारा मिलते हैं, जब अधेड़ मरने वाला होता है। अधेड़ अमेरिकी सफलता की किताब का जीता-जागता उदाहरण बन चुका है। वह अधेड़ से कहीं बेहतर कर रहा है, लेकिन फिर भी कुछ कमी है। और अधेड़, अपनी मृत्युशय्या पर, आज भी उतना ही दयालु, सरल और स्पष्टवादी है जितना वह हमेशा से था। वे फिर से एक-दूसरे के करीब आते हैं, और अधेड़ उसे अंतिम सबक देता है, जो शायद वही चीज साबित होती है जिसकी अधेड़ को हमेशा से कमी महसूस हो रही थी।
हमें उम्मीद है कि पाठक हममें अपना कुछ अंश पाएंगे, हर वो बेटा जिसका एक पिता था, हर वो छात्र जिसका एक

शिक्षक था, हर वो बच्चा जिसका कोई कोच, कोई मार्गदर्शक, कोई ज्ञान का स्रोत था। और जब वे खुद को पा लेंगे, तो शायद वे अंत तक, मॉरी की मृत्यु तक, पहुँचेंगे, क्योंकि इस पूरी कहानी का सार एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को सिखाया जाने वाला सबसे अच्छा अंतिम पाठ है: अपने जीवन को शांतिपूर्वक स्वीकार करते हुए मृत्यु को प्राप्त करना।
डेविड, इस किताब का सार जीवन के अर्थ से कम नहीं है, और यह सुनने में जितना भव्य लगता है, इसकी सुंदरता इसकी सरल संरचना में निहित है: एक बूढ़ा आदमी और एक जवान आदमी, एक दूसरे को जीवन की जिम्मेदारी सौंपते हुए, बातें करते हुए, अलग-अलग भय के साथ, धरती पर अपने अंतिम क्षण का इंतजार करते हुए।
ऐसा कुछ?
चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अपने पुराने प्रोफेसर के साथ हर हफ्ते, अंत तक रहूँगा। मैंने उन्हें धीरे-धीरे कमजोर होते देखा है, उनके पैरों, घुटनों और अब उंगलियों को कमजोर होते देखा है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि वे इन सब का सामना कैसे करते हैं, इससे लड़ते हैं, इस पर रोते हैं, अंत में इसे स्वीकार करते हैं और इससे मजबूत होते हैं। जब उनके अंतिम दिन आएंगे, तो मैं उनके परिवार के साथ उनके साथ रहना

चाहता हूँ। यह आसान नहीं होगा, और अगर मैं कहूँ कि मुझे पता है कि मैं इसे कैसे सहन कर पाऊँगा या कितना देख पाऊँगा, तो मैं झूठ बोल रहा हूँगा।
डेविड, मुझे बस इतना पता है कि यह एक खास इंसान है जो हमारे साथ ज्यादा समय तक नहीं रहेगा, और हमारे दोबारा मिलने का कोई न कोई कारण जरूर होगा। जब मैंने मॉरी को बताया कि मैं हर मंगलवार को उनसे मिलने आऊँगी, तो वे मुस्कुराए और बोले, "मंगलवार मॉरी के साथ" इस किताब के लिए एक बेहतरीन शीर्षक है।
डेविड, मैं अपनी इस मजबूरी को समझा नहीं सकता। हम सभी अपने जीवन के अंत से डरते हैं; हमें समय से पहले मरने का या उन कामों को किए बिना मरने का डर रहता है जो वास्तव में मायने रखते हैं। मॉरी उस जगह जा रहा है जहाँ हम सभी जाने से डरते हैं, और वह निर्देश दे रहा है। और ये निर्देश उन लोगों के लिए भी लागू होते हैं जो बीमार हैं, जो बूढ़े हैं, और जो युवा, स्वस्थ और खुशहाल हैं, लेकिन फिर भी जीवन का असली अर्थ समझना चाहते हैं।
यह महत्वपूर्ण है। इसे लिखा जाना चाहिए और इसे पढ़ा जाना चाहिए।
मेरी सहायता करो?
मिच

यह शुरुआत थी। डेविड ने वह पत्र सबको भेजा। और जहाँ कई प्रकाशकों ने मना कर दिया, दिलचस्पी नहीं दिखाई, उबाऊ बताया, ऐसी किताब आप नहीं लिख सकते, आदि, वहीं एक प्रकाशक ने हाँ कह दी।
और हमें बस एक की ही जरूरत थी।
पच्चीस साल बीत गए। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो याद आता है कि इस किताब की शुरुआती पंक्तियाँ लिखने में मुझे कितनी मशक्कत करनी पड़ी थी। मैंने हफ़्तों तक टाइप किया, कागज़ फाड़े, फिर टाइप किया और फिर फाड़े। लेकिन अंत लिखने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। आखिरी पंक्ति पलक झपकते ही मेरे दिमाग में आ गई, उतनी ही सहजता से जैसे मॉरी के सामने बैठते ही उसका हाथ थाम लिया हो, उसकी टेढ़े दाँतों वाली मुस्कान और उसकी चमकती आँखें, जो एक और मंगलवार साथ बिताने के लिए तैयार थीं।
शिक्षण कार्य जारी है।
ओह, यह कैसे होता है।
मिच एल्बोम, जनवरी 2022

अगर आपको 'ट्यूजडेज़ विद मोरी' पसंद आया, तो आपको मिच एल्बोम का बिल्कुल नया और बेहद मार्मिक उपन्यास 'द स्ट्रेंजर इन द लाइफबोट' ज़रूर पसंद आएगा। ऑर्डर करने के लिए यहां क्लिक करें और एक झलक पाने के लिए आगे पढ़ें...

समुद्र

जब हमने उसे पानी से बाहर निकाला, तो उसके शरीर पर एक खरोंच भी नहीं थी। यही पहली बात थी जो मैंने देखी। हम सब के शरीर पर गहरे घाव और खरोंच थे, लेकिन वह बिल्कुल बेदाग था, उसकी त्वचा बादाम जैसी चिकनी थी और उसके घने काले बाल समुद्री पानी से चिपचिपे हो गए थे। वह नंगे बदन था, बहुत ज्यादा मांसपेशियों वाला नहीं था, शायद बीस साल का होगा, और उसकी आँखें हल्के नीले रंग की थीं, बिल्कुल वैसा रंग जैसा आप किसी उष्णकटिबंधीय छुट्टी के सपने में समुद्र का कल्पना करते हैं - न कि उन अंतहीन धूसर लहरों का जो इस भरी हुई लाइफबोट को घेरे हुए हैं, मानो किसी खुली कब्र की तरह हमारा इंतजार कर रही हों।
मेरी जान, मेरी इस निराशा के लिए मुझे माफ़ कर देना। गैलेक्सी जहाज़ डूबे तीन दिन हो गए हैं। कोई हमारी तलाश में नहीं आया। मैं सकारात्मक रहने की कोशिश कर रही हूँ, यह विश्वास करने की कोशिश कर रही हूँ कि बचाव जल्द ही आने वाला है। लेकिन हमारे पास खाना और पानी कम पड़ रहा है। शार्क भी दिखाई दी हैं। जहाज़ पर सवार कई लोगों की आँखों में मुझे हार का भाव दिख रहा

है। "हम मरने वाले हैं" ये शब्द कई बार कहे जा चुके हैं।
अगर ऐसा ही होना है, अगर यही मेरा अंत है, तो मैं इस नोटबुक के पन्नों में तुम्हें लिख रहा हूँ, एनाबेल, इस उम्मीद में कि मेरे जाने के बाद तुम इन्हें पढ़ पाओगी। मुझे तुम्हें कुछ बताना है, और मुझे दुनिया को भी बताना है।
मैं इस बात से शुरुआत कर सकता हूँ कि उस रात मैं गैलेक्सी पर क्यों था, या डॉबी की योजना से, या जो कुछ हुआ उसके लिए मेरे गहरे अपराधबोध से, भले ही मुझे ठीक से पता न हो कि क्या हुआ था। लेकिन अभी के लिए, कहानी आज सुबह से शुरू होनी चाहिए, जब हमने उस युवा अजनबी को समुद्र से बाहर निकाला। उसने न तो लाइफ जैकेट पहनी थी और न ही किसी चीज को पकड़े हुए था जब हमने उसे लहरों में तैरते हुए देखा। हमने उसे सांस लेने दिया, और नाव में अपनी-अपनी जगहों से हमने एक-दूसरे से परिचय किया।
सबसे पहले बॉस लैम्बर्ट ने कहा, “जेसन लैम्बर्ट, यह नौका मेरी है।” फिर लंबे कद के ब्रिटिश नागरिक नेविन आए और उन्होंने माफी मांगते हुए कहा कि घायल पैर में सूजन होने के कारण वे ठीक से स्वागत के लिए खड़े नहीं हो सकते। गेरी ने बस सिर हिलाया और उस रस्सी को समेट

लिया जिससे उन्होंने उस आदमी को अंदर खींचा था। यानिस ने हाथ मिलाया। नीना ने धीरे से “हाय” कहा। भारत से आई श्रीमती लघारी ने कुछ नहीं कहा; जाहिर है उन्हें नए आने वाले पर भरोसा नहीं था। हैती के रसोइए जीन फिलिप मुस्कुराए और बोले, “स्वागत है भाई,” लेकिन उन्होंने अपना हाथ अपनी सोई हुई पत्नी बर्नाडेट के कंधे पर रखा, जो विस्फोट में बुरी तरह घायल हो गई थीं। छोटी बच्ची जिसे हम एलिस कहते हैं, जो समुद्र में डेक कुर्सी से चिपकी हुई मिलने के बाद से चुप है, चुप रही।
मैं सबसे आखिर में गया। “बेंजी,” मैंने कहा। “मेरा नाम बेंजी है।” पता नहीं क्यों मेरी आवाज गले में अटक गई।
हम अजनबी के जवाब का इंतज़ार करते रहे, लेकिन वह बस हमें देखता रहा, मानो हिरनी जैसी आँखें गड़ाए हुए हो। लैम्बर्ट ने कहा, "शायद वह सदमे में है।" नेविन चिल्लाई, "तुम कितनी देर पानी में थे?" शायद यह सोचकर कि ऊंची आवाज़ से वह होश में आ जाएगा। जब उसने कोई जवाब नहीं दिया, तो नीना ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, "भगवान का शुक्र है कि हमने तुम्हें ढूंढ लिया।" तभी उस आदमी ने बोलना शुरू किया।
“मैं प्रभु हूँ,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

भूमि

इंस्पेक्टर ने अपनी सिगरेट बुझाई। उसकी कुर्सी चरमरा उठी। मॉन्टसेराट की इस सुबह में पहले से ही बहुत गर्मी थी, और उसकी कड़क सफेद कमीज पसीने से तर पीठ से चिपक गई थी। हैंगओवर के सिरदर्द से उसकी कनपटी में तेज दर्द हो रहा था। उसने उस दुबले-पतले, दाढ़ी वाले आदमी को देखा जो पुलिस स्टेशन पहुँचने पर उसका इंतज़ार कर रहा था।
निरीक्षक ने कहा, "चलिए फिर से शुरू करते हैं।" रविवार का दिन था। वह बिस्तर पर लेटा हुआ था जब फोन आया। एक आदमी आया है। वह कहता है कि उसे उस अमेरिकी नाव का बेड़ा मिला है जो विस्फोट में नष्ट हो गई थी। इंस्पेक्टर ने बड़बड़ाते हुए गाली दी। उसकी पत्नी, पेट्रीस, कराह उठी और तकिए पर करवट बदल ली।
"कल रात तुम कितने बजे घर आए थे?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।
"देर।"
"कितनी देर से?"
उसने बिना कुछ कहे कपड़े पहने, इंस्टेंट कॉफी बनाई, उसे स्टायरोफोम कप में डाला और घर से निकलते समय

दरवाजे के फ्रेम पर लात मारी, जिससे उसके पैर के अंगूठे में चोट लग गई। अभी भी दर्द हो रहा था।
“मेरा नाम जार्टी लेफ्लेउर है,” उसने अब मेज के दूसरी ओर बैठे व्यक्ति को ध्यान से देखते हुए कहा। “मैं इस द्वीप का मुख्य निरीक्षक हूँ। और आपका नाम है...”
"रोम, इंस्पेक्टर।"
"क्या आपका कोई उपनाम है, रोम?"
जी हां, इंस्पेक्टर जी।
लेफ्लेउर ने आह भरी। "क्या बात है?"
“रोश, इंस्पेक्टर।”
लेफ्लूर ने यह लिख लिया, फिर एक और सिगरेट जलाई। उसने अपना सिर खुजलाया। उसे एस्पिरिन की ज़रूरत थी।
"तो तुम्हें एक बेड़ा मिल गया, रोम?"
जी हां, इंस्पेक्टर जी।
"कहाँ?"
"मार्गेरीटा बे, इंस्पेक्टर।"
"कब?'
"कल, इंस्पेक्टर।"
लेफ्लेउर ने ऊपर देखा तो पाया कि आगंतुक डेस्क पर रखी उस तस्वीर को घूर रहा था जिसमें लेफ्लेउर और

उनकी पत्नी एक छोटी बच्ची को बीच टॉवल पर झुला रहे थे।
“क्या ये आपका परिवार है?” उस आदमी ने पूछा।
“उसकी तरफ मत देखो,” लेफ्लेउर ने झल्लाकर कहा। “मेरी तरफ देखो। इस बेड़ा की तरफ। तुम्हें कैसे पता चला कि यह गैलेक्सी से आया है?”
"यह अंदर लिखा हुआ है, इंस्पेक्टर।"
"और आपको यह समुद्र तट पर मिला?"
जी हां, इंस्पेक्टर जी।
"क्या इसके साथ कोई नहीं है?"
“नहीं, इंस्पेक्टर।”
लेफ्लूर को पसीना आ रहा था। उसने डेस्क फैन को पास खींच लिया। कहानी विश्वसनीय लग रही थी। उत्तरी तट पर तरह-तरह की चीजें बहकर आ जाती थीं। सूटकेस, पैराशूट, ड्रग्स, पश्चिम अफ्रीका में बने मछली पकड़ने के उपकरण जो धाराओं में बहकर उत्तरी अटलांटिक महासागर में आ जाते थे।
समुद्र की लहरों के साथ बहकर आने वाली कोई भी चीज़ अजीब नहीं थी। लेकिन गैलेक्सी नाम की नौका का आना? यह तो एक बड़ी घटना होगी। यह विशाल विलासितापूर्ण नौका पिछले साल पश्चिम अफ्रीकी तट से पचास मील दूर केप वर्डे के पास डूब गई थी। इसने दुनिया भर में

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]